# अपूर्ण कथा

'अपूर्ण कथा' एक आत्मकथात्मक
औपन्यासिक रचना है,
जिसमें रवीन्द्रनाथ त्यागी ने
एक ऐसे व्यक्ति की कहानी
लिखी है, जो गरीबी और
भुखमरी के दिनों में टूटता नहीं है
उन्नति के शिखर पर पहुंच जाता है।
यह उपन्यास बेहद मर्मस्पर्शी है
तथा व्यक्ति की छटपटाहट और बेचैनी को
सही और साफ-सुथरे ढंग से
प्रस्तुत करता है।
यतीन का विनीता और पत्नी से प्रेम
दो स्त्रियों के बीच एक पुरुष
के होने को
बहुत सच्चाई और ईमानदारी से
रेखांकित करते हुए
सम्बन्धों के यथार्थ से परिचित कराता है।
रवीन्द्रनाथ त्यागी एक प्रसिद्ध
हास्य व्यंग्य लेखक हैं,
जिनके द्वारा लिखी गई
यह गंभीर और करुण कथा
उनके लेखन के नए तेवर को
सामने लाती है।

रवीन्द्रनाथ त्यागी

# अपूर्ण कथा



उपन्यास तथा
अन्य हास्य-व्यंग्य कहानियाँ

हिन्द पॉकेट बुक्स

अपूर्व कथा उपन्यास

पहला खण्ड : घर
दूसरा खण्ड : बाहर
तीसरा खण्ड : विवाह
चौथा खण्ड : नौकरी
पांचवां खण्ड : रोग

हास्य-व्यंग्य कहानियां

अब्दुल्ला दीवाना
पत्नी-प्रसंग
बीसवीं सदी का जिन्न
चर्चित होने का सुख
मूंछों को लेकर

यतीन एक बहुत बड़ा सरकारी अफसर है। उसके नीचे विभिन्न श्रेणियों के हजारों कर्मचारी व सैकड़ों अफसर काम करते हैं। उसकी कोठी भी शानदार है और दफ्तर भी। कोठी के भीतर बहुत धरती पड़ी है, जिस पर शीशम, गूलर, सेमल, और आम के पेड़ हैं।

वसंत के आने पर सारी कोठी महकने लगती है। गेट से घुसकर भीतर तक पहुंचने में काफी वक्त लगता है। लान के बीचोबीच एक पक्की सड़क है, जिसके खत्म होने पर गैराज में खड़ी यतीन की शानदार मोटर दिखाई पड़ती है। कोठी का बरामदा बहुत सुन्दर है। मालती की लताओं ने उसे पूरी तरह ढक रखा है। चांदनी रात मे या वर्षा में यहां बैठना बड़ा अच्छा लगता है।

यतीन प्रायः शाम के धुंधलके को केनचेयर पर बैठकर यहीं से देखा करता है। पेड़ों पर न जाने कितनी तरह की चिड़िया रहती हैं, जो अपने कोलाहल से बैठने वालों का मन आल्हादित करती हैं।

यतीन का जो दफ्तर है, वह कोठी से [illegible] है [illegible]
दफ्तर शानदार है।

एक दिन ऐसा भी था जब उनके पास कुछ भी नहीं था। वह एक-दम निरीह और गरीब था और घर की हालत ऐसी थी कि दो जून खाना मिलना भी मुश्किल था।

अब तो यतीन अफसर होने के साथ-साथ लेखक भी है और साहित्यिक जगत् में उसे प्रतिष्ठा भी प्राप्त हुई है; पर एक दिन ऐसा भी था जब उसके पास स्कूल की फीस देने के लिए भी एक कौड़ी भी न थी। मगर इन बातों को जानने के लिए हमें लग-भग पचास वर्ष पीछे लौटना पड़ेगा। इसके अलावा यतीन को जानने का और कोई चारा नहीं।

## दो

यतीन का जन्म कोई अड़तालीस वर्ष पहिले पश्चिमी उत्तर प्रदेश के एक छोटे से कस्बे में हुआ था। उसके पिता एक मामूली से डाक्टर थे, जो अपने गुस्से, बेईमानी और आलस्य के कारण काफी प्रसिद्ध थे। रोगी उनके पास जाने से घबराता था, क्यों-कि उसे डांट खानी पड़ती थी। इस सबका परिणाम यह हुआ कि एक दिन काफी दयनीय अवस्था में उन्हें अपनी प्रैक्टिस बंद करनी पड़ी, लोगों के कर्जे चुकाने पड़े और देहात के लिए रवाना होना पड़ा।

यतीन उन दिनों कोई पांच वर्ष का बालक था। गांव में आकर उसके पिताजी बीमार रहने लगे और परिवार के लोगों ने उनका भार उठाने से इनकार कर दिया। थोड़ी बहुत जमीन में जो हिस्सा उनका निकलता था, वह भी देने से मना कर दिया। और तो और, यतीन और उसके परिवार के लोगों को

हुई पर्दे की जालीदार दीवार थी और घर के बाहरी हिस्से में बैठक थी, जिसके बाहर टीन पड़ा था।

यतीन के माता-पिता और बड़ी बहिन ने पुराने मिट्टी के बर्तन साफ किए और उन्हें तरतीब से सजाया। उसके पिता के डाक्टरी शान का जो फर्नीचर था, वह बाहर के कमरे में लगा दिया गया, आंगन में केले के पेड़ थे, एक पेड़ पपीते का था और बाहर मालती की झाड़ियां थीं। टीन के नीचे बैठकर उनके रंग-बिरंगे फूलों के गुच्छे बड़े सुन्दर दिखाई पड़ते थे। टीन के आगे आम रास्ता था जिसकी ईंटें उखड़ी हुई थीं और नालियां गन्दी थीं। हफ्ते में एक बार जमादार आता था जो नालियों का कूड़ा साफ करता था। फिर चुंगी की गाड़ी आती थी जो उस कूड़े को कभी-कभार उठा ले जाती थी।

## तीन

जिस कस्बे में यतीन आकर अब रहने लगा वह और कस्बों की तरह काफी गंदा था। सड़कें तंग थीं और नालियां गंदी। कस्बे में मुसलमान ज्यादा थे और हिन्दू कम, मगर दोनों लोग काफी मेलजोल से रहते थे। कस्बे में कुछ लोग जागीरदार थे, कुछ दूकानदार और बाकी मजदूर या नौकर।

मरने से पहले यतीन के नाना भी एक जागीरदार के कारिंदे थे मगर ईमानदार होने के कारण वे गरीब ही मरे। सारे घर में उनकी एक तसवीर अच्छी थी जो तब ली गई थी, जब वे अपने मालिक के साथ दिल्ली दरबार देखने गए थे। तसवीर से पता लगता था कि। वह दाढ़ी रखते थे, अलीगढ़ी पायजामा

हुई पर्दे की जालीदार दीवार थी और घर के बाहरी हिस्से में बैठक थी, जिसके बाहर टीन पड़ा था।

यतीन के माता-पिता और बड़ी बहिन ने पुराने मिट्टी के बर्तन साफ किए और उन्हें तरतीब से सजाया। उनके पिता के डाक्टरी काल का जो फर्नीचर था, वह बाहर के कमरे में लगा दिया गया, आंगन में केले के वृक्ष थे, एक पेड़ पपीते का था और बाहर मालती की झाड़ियां थीं। टीन के नीचे बैठकर उनके रंग-बिरंगे फूलों के गुच्छे बड़े सुन्दर दिखाई पड़ते थे। टीन के आगे आम रास्ता था जिसकी ईंटें उखड़ी हुई थीं और नालियां गन्दी थीं। हफ्ते में एक बार जमादार आता था जो नालियों का कूड़ा साफ करता था। फिर चुंगी की गाड़ी आती थी जो उस कूड़े को कभी-कभार उठा ले जाती थी।

## तीन

जिस कस्बे में यतीन आकर अब रहने लगा वह और कस्बों की तरह काफी गंदा था। सड़कें तंग थीं और नालियां गंदी। कस्बे में मुसलमान ज्यादा थे और हिन्दू कम, मगर दोनों लोग काफी मेलजोल से रहते थे। कस्बे में कुछ लोग जागीरदार थे, कुछ दुकानदार और बाकी मजदूर या नौकर।

यतीन के नाना भी एक जागीरदार के [illegible] वे गरीब ही मरे। सारे [illegible] सब ली गई थी, जब [illegible] देखने गए थे। तसवीर [illegible] वह दाढ़ी रखते थे, अलीगढ़ी पायजामा

और [illegible] का [illegible] भरते थे, [illegible] थे और तमाशे [illegible] थे।

जागीरदारों की कोठियाँ तो काफी आलीशान थीं और उनके भीतर बहुत बड़ा बगीचा होता था। वे लोग सवारी के लिए इक्का या बग्घी रखते थे, बाकी तांगा/पैदल चलते थे। मोटर का रिवाज उन दिनों नहीं था। जो लोग रेल पकड़ना चाहते थे वे पांच मील दूर एक दूसरे कस्बे में जाते थे और उनके लिए घोड़ा-तांगा हमेशा तैयार मिलता था। भाड़ा भी कम ही लगता था। आमतौर से जो लोग सुबह की रेलगाड़ी पकड़ना चाहते थे, वे तांगे वाले से रात को ही कह दिया करते थे। इसके बाद घोड़ा-तांगा सुबह चार बजे अपने-आप घर पर पहुंच जाता था।

कस्बे के बाहर निकलने पर एक नदी पड़ती थी जिस पर पुल बनाकर नहर निकाली गई थी। वहीं एक सरकारी डाक बंगला भी था। पहाड़ यहां से कोई बीस मील की दूरी पर होंगे। वर्षा ऋतु के बाद नदी पर से खड़े होकर हिमालय की निचली श्रेणियां आसानी से देखी जा सकती थीं।

कस्बे के चारों ओर जागीरदारों के बागान थे। कुछ झीलें थीं और कच्ची सड़कें थीं। वर्षा ऋतु में झीलें बुरी तरह पानी से भर जाती थीं और बड़ा सुन्दर लगता था। इनमें नीचे कमल भी होते थे और सिंघाड़े भी। बसन्त के आने पर इन बागों की शीशमें अपने झुमकों से लद जाती थीं और कचनार तथा हर-सिंगार सारे के सारे माहौल को ही बदल डालते थे।

दूसरे शब्दों में यह कस्बा भीतर से जितना गन्दा था, उसके बाहर का वातावरण उतना ही सुन्दर था। यतीन अपने पिताजी के साथ प्रायः कस्बे के बाहर घूमने जाया करता था। कस्बे के भीतर सब्जी मण्डी के पास जामा-मस्जिद थी, जो कला का बढ़िया नमूना थी।

कस्बे का वर्णन करने के बाद कुछ चर्चा उस मोहल्ले की भी करनी उचित होगी, जिसमें यतीन का टूटा-फूटा मकान था। उसके मकान के पीछे जो पटवारी जी का मकान था। उसमें एक प्राइमरी स्कूल चलता था। दक्षिण में उसी ब्राह्मणी का मकान था, जिसने यतीन को पराठे खिलाए थे। उनके पति एक जागीरदार के गुमाश्ते थे और अच्छी तरह रहते थे। उनके घर में एक जामुन का पेड़ था, जिसका आधा हिस्सा यतीन के घर के भीतर झुका हुआ था। यतीन, उसकी बहिनें व बाकी सभी साथी भी खूब जामुनें खाते थे। जामुन के साथ-साथ कभी उस ब्राह्मणी की गालियां भी खाने को मिलती थीं।

उत्तर की दिशा में बहुत सारी जमीन खाली पड़ी थी, जिसके मालिक कहीं पुलिस में नौकरी करते थे। वह जब कभी भी छुट्टी पर आते थे, तो अपनी बन्दूक साथ लाना नहीं भूलते थे।

सामने की दिशा में पूरब पड़ता था और निकलता सूरज यतीन के आंगन में आता था। इस दिशा में सड़क के पार एक सेठ एक लाला का मकान था, जो आढ़त करते थे और जो भी खाते पीते थे। खाने की चीजों के दाम बढ़ने से, जहां यतीन की मां की छाती दहलती थी, वहां लालाजी के घर में दाम बढ़ने पर खुशियां मनाई जातीं।

उनके पक्के मकान के पास लल्लू-महाराज की कच्ची झोंपड़ी थी, जो कर्जे में कहीं गिरवी रखी हुई थी। लल्लू महाराज बैलगाड़ी रखते थे और उसे भाड़े पर चलाते थे। उनको किस्सा सुनाने की कला आती थी। उनकी याद न जाने कितने किस्से थे, जिसमें राक्षस और परियां राजकुमारों को तंग करती थीं।

उनके मकान के बाद एक पीपल का पेड़ था और उसके बाद मन्दिर के पास वाला मोहल्ला महलवाला कहलाता था।

सुना जाता था कि पुराने जमाने में कोई राजा मंगलसेन थे। यह मन्दिर और उसके सामने का कुंआ उन्हीं ने बनवाया था। उनके परिवार की जो स्त्रियां सती हो गई थीं, उनकी समाधि जंगल में थी। पुत्रजन्म या शादी-विवाह इत्यादि के अवसर पर सब लोग वहां जाते थे और पूजा करते थे।

मोहल्ले में बड़े आदमी तीन थे। एक थे राय बहादुर डाक्टर साहब, जिन्होंने सारी उम्र बर्मा में नौकरी की थी और जो जेल सुपरिंटेंडेंट के पद से रिटायर हुए थे। वह अब भी शान से रहते थे, सूट पहिनते थे, सिगार पीते थे और छड़ी के सहारे अपने एक पुराने दोस्त, जो कि एक रिटायर्ड डिपुटी कलेक्टर थे, से मिलने जाया करते थे। उनमें रौबदाब जो था वह तो था ही; पर साथ ही साथ सार्वजनिक हित की भावना बहुत थी। उन्होंने अपने आने के कुछ वर्ष बाद ही कस्बे के बाहर एक हाई स्कूल की स्थापना की और बाद में चलकर एक स्कूल लड़कियों के लिए भी खोला।

दूसरे थे दो चौधरी लोग, जो आपस में सगे भाई थे, मगर जिनमें आपस में कोई बोलचाल नहीं थी।

इनमें से एक भाई बड़े कट्टर आर्यसमाजी थे और उन्होंने कोई तीन या चार विधवाओं के साथ तो खुद ही शादी की थी। उनकी बीवियां थीं कि मरती जाती थीं और वह थे कि शादी के बाद शादी करते जाते थे।

दूसरे भाई बड़े मोटे थे। बड़ी गन्दी गालियां देते थे और काफी रौब के साथ खेती करवाते थे। वह उन लोगों में थे, जिन्हें आजकल दादा कहकर पुकारा जाता है। कस्बे के बाकी
दूरी पर रहते थे। इन लोगों में एक जागीरदार
। वह इतनी मीठी और प्यार भरी वाणी बोलते
पिघल जाए। हालांकि सब जानते थे कि जो
चंगुल में एक बार फंस गया, वह फिर कभी

वहाँ से निकल नहीं सकता था। उन्होंने मरते वक्त कोई एक करोड़ रुपया छोड़ा।

## चार

यतीन की माँ और बहिनों ने घर को काफी साफ कर दिया था। मिट्टी को पानी में घोलकर दीवारें पोत दी थीं और फर्श पर गोबर पोता जाता था। आँगन में अनार और अमरूद लगा दिए थे, जिनसे घर में कुछ ताजगी आ गई।

यतीन की उम्र उस वक्त कोई आठ साल की होगी, जब उसे मदरसे में भरती किया। फीस थी दो पैसा या एक आना माहवार, पर वह भी उतनी मुश्किल ही रहती थी।

बड़ी बहिन प्रेम कोई चौदह वर्ष की होगी और वह वाकई बड़ी सुन्दर लड़की थी। छोटी बहिन और बड़ी बहिन दोनों घर पर खुद ही पढ़ती थीं। इनके अलावा यतीन की एक और बड़ी बहिन भी थीं, जिनकी शादी हो चुकी थी और जो अपनी ससुराल में रहती थीं। उनके पति पहले तो ग्राम सुधार विभाग में थे और बाद में एक प्राइमरी स्कूल में अध्यापक हो गए थे कुछ जमीन थी, जिसमें खेती बाड़ी होती थी।

यतीन की माता बड़ी आस्तिक थीं और भगवान में बड़ा विश्वास रखती थीं, कभी संभव होता, तो घर पर सत्यनारायण की कथा भी कराई जाती थी और व्रत और उपवास भी रखे जाते थे।

यतीन के पिता मध्यम कद के व्यक्ति थे, जिनकी आयु उस समय कोई पैंतालीस वर्ष रही होगी। वह आलस्य और

अकर्मण्यता के साक्षात् अवतार थे और घर की सारी स्थिति उन्हीं के कारण थी। आसपास के देहातों क्षेत्र में उनके काफी मित्र थे और वे चाहते, तो वहां प्रैक्टिस खोलकर हजारों रुपया कमा सकते थे, पर ऐसी गल्ती उन्होंने कभी नहीं की।

वह सुबह उठते थे, घूमने जाते थे, इसके बाद खुरपे से फूलों की क्यारियां ठीक करते थे और दोपहर का खाना खाने के बाद सो जाते थे। तीसरे पहर उठते, हुक्का पीते और यार-बाशी को निकल जाते। शाम को आते, अम्मां को गालियां देते, खाना खाते और फिर सो जाते। घर में कुछ हो या न हो, पर उनके इस क्रिया कलाप पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता था। वह उधार लेने में उस्ताद थे और ज्यादा याद दिलाने पर कहा करते थे घर के लोग प्याला हाथों में ले लें और भीख मांगने निकल जाएं। तारीफ की बात यह थी कि एक तरफ मां के जेवर, घर बर्तन और सामान इन लोगों के पालन पोषण में बिकता जा रहा था और दूसरी तरफ घर में हर दूसरे या तीसरे वर्ष बच्चा पैदा होता रहता था।

यतीन के ये छोटे भाई बहिन उचित भोजन और दवाई वगैरा की व्यवस्था न होने के कारण मर जाते थे। बच्चे के मरने पर यतीन की मां बहुत रोती थी, कोई फटा पुराना कपड़ा बतौर कफन के उसके ऊपर डाल देती थी और फिर पिताजी की गालियां खाने लगती थी।

घर का गुजारा चलना धीरे-धीरे कठीन होता जा रहा था। यतीन को मदरसे से हटा लिया गया। मोहल्ले की एक बनैनी ने सारे जेवर रख लिए जो फिर कभी नहीं लौटे। जो थोड़ा बहुत रुपया अम्मा के पास था, वह भी खर्च हो गया।

अकसर ऐसे दिन आने लगे कि खाना एक ही वक्त पकता। या बच्चों को खाना देने के बाद अम्मां कह देतीं कि आज उनका

रते हैं। मगर तीज-त्योहारों के दिन स्थिति बड़ी दुखदायक हो जाती थी। सतीश को याद है कि एक दीवाली को उनके यहां एक दीया भी नहीं जला था। और लोगों के यहां मिठाई और पकवान बने थे पर उनके यहां उस दिन चूल्हा भी नहीं जला।

सतीश ने जब बार-बार भूख की शिकायत की तो बड़ी मुश्किल से गुड़ की एक डली और एक लोटा पानी ले आई। बोली कि इसे खाकर पानी पी लो क्योंकि घर में और कुछ खाना नहीं है। इतना कहने के बाद उनका मन भरा और वह रोने लगीं।

## पांच

सतीश के पिता वास्तव में विचित्र व्यक्ति थे। अकर्मण्यता और गैर-जिम्मेदारी की भी एक हद होती है, पर उनको देखकर लगता था कि उन्होंने वह भी तोड़ दी थी।

अपने बचपन में वह गांव से भागकर लाहौर गए थे और वहीं शिक्षा प्राप्त की थी। उन्होंने लाला लाजपतराय, लाला हरदयाल, मास्टर राजपाल और उस पीढ़ी के अन्य महान व्यक्तियों को लाहौर में पास से देखा था।

मैथिलीशरण गुप्त की भारत-भारती उन दिनों सरस्वती में धारावाहिक रूप से छपा करती थी और उसकी नकल वह अपनी एक कापी में किया करते थे। उनका हस्तलेख बहुत सुन्दर था। एक दम मोती जैसा।

शिक्षा प्राप्ति के बाद उन्होंने विवाह किया और काम भी करने लगे। मगर इस बीच उनकी दोस्ती कुछ ऐसे लोगों से हो

गई, जो अमीर होने के साथ-साथ निकम्मे और दुराचारी थे। उनकी संगति ने ही शायद उन्हें बदल दिया।

थोड़े वर्षों बाद सफाई पसन्द होने के अलावा उनमें कोई भी पुराना गुण नहीं रहा। उनके अनैतिक आचरण भी लोगों को मालूम होने लगे। उनके पास किताबों का अभी भी काफी बड़ा स्टाक था, जिसमें ज्यादातर पुस्तकें संस्कृत की थीं।

उनके सारे अवगुण निभ सकते थे, बशर्ते कि, वे अकर्मण्य न हुए होते। थोड़ा बहुत बीमार भी वे रहते थे; पर वह कोई खास बाधा नहीं थी। वे अकर्मण्य हुए, फिर स्वार्थी और बेईमान हुए और इसके बाद क्रूर और निर्दयी हो गए। अगर उन्हें खाना मिल जाता, तो उन्हें कभी भी यह चिंता न होती कि घर में किसी और ने खाना खाया है या नहीं।

बीवी को गन्दी-गन्दी गालियां देना और बच्चों को बुरी तरह बिना बात पीटना उनकी आदत हो गई थी और स्थिति यह होती थी कि वे जब ऊंचा बोल कर कोई सीन शुरु करते थे तो सामने वाले मकान के लोग अपनी छत पर खड़े होकर सब कुछ देखा करते थे।

इस दोहरे अपमान से यतीन शर्म के मारे धरती में गड़ जाता था। उधार मांगने के मामले में वे काफी बेशर्म थे और वक्त बेवक्त कर्जदारों द्वारा अपमानित भी किए जाते थे। उनकी मनोवृत्ति कुछ ऐसी हो गई थी कि कुछ कहा नहीं जा सकता।

एक बार की बात है कि यतीन के एक छोटे भाई को चेचक निकल आई। उसकी मृत्यु निकट आ गई। उस छोटे से बच्चे ने अपने जीवन में कभी नई कमीज नहीं पहनी थी और चेचक के तेज बुखार में भी वह उसके लिए रोता रहता था।

यतीन की मां ने पड़ोस से एक रुपया उधार लिया, कपड़ा खरीदा और जल्दी-जल्दी कमीज सिली। कमीज बच्चे को पहना दी गई। थोड़ी देर बाद वह मर गया।

तीन के पिता ने कहा कि मुर्दे के जिस्म से नई कमीज तो, ताकि उसे कोई और बच्चा पहन सके।
तीन की अम्मां ने उस दिन बहुत झगड़ा किया।
पद यतीन के छोटे भाई बहिनों में वही एक ऐसा बच्चा नये कपड़ों में दफनाया गया।
तीन हमेशा यह सोचा करता था, कि और लोगों की उसके पिताजी काम क्यों नहीं करते ?
न्हीं के घर में गरीबी क्यों है ?
ही इतने असहाय और अपमानित क्यों हैं ?
ईश्वर ने उन्हें ही ऐसा क्यों बनाया ?
मगर सारी कमियों के बावजूद सब बच्चे अपने पिता से करते थे। जब पिता घर छोड़कर परदेस भाग जाने की दी दिया करते थे या जब वे एक कर्ज के चक्कर में गिरफ्तार र चले गए थे, तो ऐसे निर्दयी बाप के लिए भी सारे बच्चे तरह रोए थे।

छः

दिन बीतते रहे। किसी-न-किसी तरह गुजारा होता रहा। उ जमाने में और लोगों में दया धर्म अब से ज्यादा था। कभी ल का कुछ हिस्सा गांव से आ जाता, तो कभी पास के गांव पुराने मरीज कुछ अनाज वगैरह दे जाते। तीज त्योहारों पर हल्ले वाले मदद कर देते और बीमारी वगैरह में डाक्टर बिना के इलाज कर देता।
मगर इल्लत यह थी कि यतीन की बड़ी बहिन प्रेम जवान

होती जा रही थी। यौवन आने के साथ-साथ उसका रूप निखरता आ रहा था और इसी कारण उसकी माता ने उसका बाहर आना जाना लगभग बन्द-सा कर दिया था। अम्मां को उसकी शादी की इतनी चिन्ता रहती थी कि उसे देखकर वे कभी-कभी सोचा करती थी कि वह जहर खाले, ताकि इस चिन्ता समाप्त हो जाए।

कभी-कभी यतीन भी सोचा करता था कि घर के सारे पीतल के बर्तन बेचकर जहर खरीद लिया जाए, ताकि सारा परिवार की इस दुःख से मुक्ति हो सके।

प्रेम वाकई जवान हो गई थी पर ऐसी हालत में उसकी शादी होना असम्भव था। गांव वाले जो परिवार के लोग थे तो इतने दयालु नहीं थे मगर मोहल्ले में जो दयावान लोग थे वे भी इतने बड़े काम के लिए क्या मदद कर सकते थे?

यतीन की मां एक दिन उस जागीरदार के पास गई जिसके पिता के नीचे यतीन के नाना कारिन्दे थे और लाखों का हिसाब ईमानदारी से देखते थे।

जागीरदार साहब ने उन्हें बहिन कहकर पुकारा। पूरी बात सुनी और मदद करने का वायदा भी किया। मगर शर्त यह रखी कि मकान गिरवी रख दिया जाए।

अम्मां जानती थी कि एक बार गिरवी रखने के बाद मकान हाथ से निकल जाएगा, पर फिर भी वह तैयार हो गई।

वह तो प्रेम थी, जो बीच में टांग अड़ा बैठी और बोली कि यदि मेरी शादी के लिए घर रहन रखा गया, तो मैं कुएं में कूद जाऊंगी।

यतीन की बड़ी बहिन के पति सज्जन प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। उन्हें प्रेम की शादी की वाकई चिन्ता थी। उनके पास के गांव में एक रईस रहते थे, जिनकी आयु कोई पैंतीस वर्ष थी और जिनकी दो पत्नियां शादी के बाद मर चुकी थीं। वह प्रेम के साथ शादी

करने को तैयार हो गए। दहेज वगैरह की कोई शर्त नहीं रखी गई। देखने भालने में वे काफी चुस्त और सुन्दर थे। हां, अलबत्ता अपनी ऊंची पोजीशन का अभिमान उनमें जरूरत से ज्यादा था।

अन्त में और कोई चारा न देखकर प्रेम की शादी वहीं तय कर दी गई।

बड़ी दर्दनाक शादी थी। दहेज के नाम पर शायद पांच इस्तेमाल किए बर्तन, कुछ नई पुरानी धोतियां और बाकी समान। यह सब कुछ भी यतीन की बड़ी बहिन ने ही जुटाया था। नगद खर्चा जो था वह भी उन्होंने ही किया।

किसी तरह प्रेम के हाथ पीले हो गए।

शादी के पहिले तक प्रेम फटी धोतियों में गांठ लगा-लगाकर उन्हें पहिना करती थी और अब उसे ससुराल से आई बनारसी साड़ी पहिनने को मिली।

बारात सिर्फ एक दिन रुकी। वर के स्वागत के समय मंगल कलश पीतल का न होकर मिट्टी का एक घड़ा था, जिसे देखते ही दामाद साहिब की भवें तन गईं।

अगले दिन अपने गरीब परिवार को छोड़कर प्रेम अपनी अमीर ससुराल चली गई। जाते वक्त वह इतना रोई, इतना रोई कि कुछ कहा नहीं जा सकता। यतीन को तो ऐसा लगा कि बहिन की पालकी नहीं, बल्कि उसकी अर्थी ही बाहर जा रही है। गरीबी में शादी ब्याह और कैसा लगता ?

कुछ महीने बाद प्रेम ससुराल से वापस आई, तो एकदम बदली हुई थी। अब उसने अमीर औरतों की भांति जेवर पहिन रखे थे। साड़ी भी कीमती थी। चप्पल भी नए थे। उसका चेहरा भी खिला हुआ था।

यतीन और शारदा को अब वह पराई-सी लगी। यतीन अपनी फटी कमीज पहिने उससे बचता-बचता फिरता रहा।



10919

होती जा रही थी। यौवन आने के साथ-साथ उसका रूप भी निखरता आ रहा था और इसी कारण उसकी माता ने उसका बाहर आना जाना लगभग बन्द-सा कर दिया था। अम्मा को उसकी शादी की इतनी चिन्ता रहती थी कि उसे देखकर वे कभी-कभी सोचा करती थी कि वह जहर खा ले, ताकि सारी चिन्ता समाप्त हो जाए।

कभी-कभी यतीन भी सोचा करता था कि घर के सारे पीतल के बर्तन बेचकर जहर खरीद लिया जाए, ताकि सारे परिवार को इस दुःख से मुक्ति हो सके।

रेम वाकई जवान हो गई थी पर ऐसी हालत में उसकी शादी होना असम्भव था। गांव वाले जो परिवार के लोग थे वे तो इतने दयालु नहीं थे मगर मोहल्ले में जो दयावान लोग थे, वे भी इतने बड़े काम के लिए क्या मदद कर सकते थे?

यतीन की मां एक दिन उस जागीरदार के पास गई, जिसके पिता के नीचे यतीन के नाना कारिन्दे थे और गांवों का हिसाब ईमानदारी से देखते थे।

जागीरदार साहब ने उन्हें बहिन कहकर पुकारा। दुःख उनकी सुनी और मदद करने का वायदा भी किया। मगर शर्त यह रखी कि मकान गिरवी रख लिया जाए।

अम्मा जानती थी कि एक बार गिरवी रखने के बाद मकान हाथ से निकल जाएगा, पर फिर भी वह तैयार हो गई।

वह मां जब थी, जो बीच में हाथ जोड़कर बैठी और बोली कि यदि मेरी शादी के लिए घर रहन रखा गया, तो मैं कुएं में कूद पड़ूंगी।

[illegible] की बड़ी बहिन के [illegible] [illegible] से [illegible] थे। [illegible] की शादी की बातें [illegible] थी। [illegible] के [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] शादी के बाद [illegible] [illegible]

करने को तैयार हो गए। दहेज वगैरह की कोई शर्त नहीं रखी गई। देखने भालने में वे काफी चुस्त और सुन्दर थे। हां, अलबत्ता अपनी ऊंची पोजीशन का अभिमान उनमें जरूरत से ज्यादा था।

अन्त में और कोई चारा न देखकर प्रेम की शादी वहीं तय कर दी गई।

बड़ी दर्दनाक शादी थी। दहेज के नाम पर शायद पांच इस्तेमाल किए बर्तन, कुछ नई पुरानी धोतियां और बाकी समान। यह सब कुछ भी यतीन की बड़ी बहिन ने ही जुटाया था। बाद खर्चा जो था वह भी उन्होंने ही किया।

किसी तरह प्रेम के हाथ पीले हो गए।

शादी के पहिले तक प्रेम फटी धोतियों में गांठ लगा-लगाकर उन्हें पहिना करती थी और अब उसे ससुराल से आई बनारसी साड़ी पहिनने को मिली।

बारात सिर्फ एक दिन रुकी। वर के स्वागत के समय मंगल कलश पीतल का न होकर मिट्टी का एक घड़ा था, जिसे देखते ही दामाद साहिब की भवें तन गई।

अगले दिन अपने गरीब परिवार को छोड़कर प्रेम अपनी अमीर ससुराल चली गई। जाते वक्त वह इतना रोई, इतना रोई कि कुछ कहा नहीं जा सकता। यतीन को तो ऐसा लगा कि बहिन की पालकी नहीं, बल्कि उसकी अर्थी ही बाहर जा रही है। गरीबी में शादी ब्याह और कैसा लगता ?

कुछ महीने बाद प्रेम ससुराल से वापस आई, तो एकदम बदली हुई थी। अब उसने अमीर औरतों की भांति जेवर पहिन रखे थे। साड़ी भी कीमती थी। चप्पल भी नए थे। उसका चेहरा भी खिला हुआ था।

यतीन और शारदा को अब वह पराई-सी लगी। यतीन अपनी फटी कमीज पहिने उससे बचता-बचता फिरता रहा।

होती जा रही थी। यौवन आने के साथ-साथ उसका रूप निखरता आ रहा था और इसी कारण उसकी माता ने उसका बाहर आना जाना लगभग बन्द-सा कर दिया था। अम्मा को उसकी शादी की इतनी चिन्ता रहती थी कि उसे देखकर वे कभी-कभी सोचा करती थी कि वह जहर खा ले, ताकि इस चिन्ता समाप्त हो जाए।

कभी-कभी यतीन भी सोचा करता था कि घर के थाली पीतल के बर्तन बेचकर जहर खरीद लिया जाए, ताकि सारे परिवार को इस दुःख से मुक्ति हो सके।

प्रेम वाकई जवान हो गई थी पर ऐसी हालत में उसकी शादी होना असम्भव था। गांव वाले जो परिवार के लोग थे वे तो इतने दयालु नहीं थे मगर मोहल्ले में जो दयावान लोग थे, वे भी इतने बड़े काम के लिए क्या मदद कर सकते थे?

यतीन की मां एक दिन उस जागीरदार के पास गई जिसके पिता के नीचे यतीन के नाना कारिन्दे थे और सारा हिसाब ईमानदारी से देखते थे।

जागीरदार साहब ने उन्हें बहिन कहकर पुकारा। पूरी बात सुनी और मदद करने का वायदा भी किया। मगर शर्त यह रखी कि मकान गिरवी रख दिया जाए।

अम्मा जानती थी कि एक बार गिरवी रखने के बाद मकान हाथ से निकल जाएगा, पर फिर भी वह तैयार हो गई।

वह तो प्रेम थी, जो बीच में टांग अड़ा बैठी और बोली कि यदि मेरी शादी के लिए घर रहन रखा गया, तो मैं कुएं में कूद जाऊंगी।

यतीन की बड़ी बहिन के पति सज्जन प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। उन्हें प्रेम की शादी की वाकई चिन्ता थी। उनके गांव के पास में एक रईस रहते थे, जिनकी आयु कोई पैंतीस वर्ष थी और जिनकी दो पत्नियां शादी के बाद मर चुकी थीं। वह प्रेम के

करने को तैयार हो गए। दहेज वगैरह की कोई शर्त नहीं रखी गई। देखने भालने में वे काफी चुस्त और सुन्दर थे। हां, अलबत्ता अपनी ऊंची पोजीशन का अभिमान उनमें जरूरत से ज्यादा था।

अन्त में और कोई चारा न देखकर प्रेम की शादी वहीं तय कर दी गई।

बड़ी दर्दनाक शादी थी। दहेज के नाम पर शायद पांच इस्तेमाल किए बर्तन, कुछ नई पुरानी धोतियां और बाकी समान। यह सब कुछ भी यतीन की बड़ी बहिन ने ही जुटाया था। नकद खर्चा जो था वह भी उन्होंने ही किया।

किसी तरह प्रेम के हाथ पीले हो गए।

शादी के पहिले तक प्रेम फटी धोतियों में गांठ लगा-लगाकर उन्हें पहिना करती थी और अब उसे ससुराल से भारी बनारसी साड़ी पहिनने को मिली।

बारात सिर्फ एक दिन रुकी। वर के स्वागत के समय मंगल कलश पीतल का न होकर मिट्टी का एक घड़ा था, जिसे देखते ही दामाद साहिब की भौंहें तन गईं।

अगले दिन अपने गरीब परिवार को छोड़कर प्रेम अपनी अमीर ससुराल चली गई। जाते वक्त वह इतना रोई, इतना रोई कि कुछ कहा नहीं जा सकता। यतीन को तो ऐसा लगा कि बहिन की पालकी नहीं, बल्कि उसकी अर्थी ही बाहर जा रही है। गरीबों में शादी ब्याह और कैसा लगता ?

कुछ महीने बाद प्रेम ससुराल से वापस आई, तो एकदम बदली हुई थी। अब उसने अमीर औरतों की भांति जेवर पहिन रखे थे। साड़ी भी कीमती थी। चप्पल भी नए थे। उसका चेहरा भी खिला

२ पराई-सी लगी। यतीन
[illegible] लगता रहा।

होती जा रही थी। यौवन आने के साथ-साथ उसका
निखरता आ रहा था और इसी कारण उसकी माता ने
बाहर आना जाना लगभग बन्द-सा कर दिया था। उ
उसकी शादी की इतनी चिन्ता रहती थी कि उसे देख
कभी-कभी सोचा करती थी कि वह जहर खाने, ताकि
चिन्ता समाप्त हो जाए।

कभी-कभी यतीन भी सोचा करता था कि घर
पीतल के बर्तन बेचकर जहर खरीद लिया जाए, ताकि
परिवार को इस दुःख से मुक्ति हो सके।

प्रेम वाकई जवान हो गई थी पर ऐसी हालत में
शादी होना असम्भव था। गाव वाले जो परिवार के लोग
तो इतने दयालु नहीं थे मगर मोहल्ले में जो दयावान लो
वे भी इतने बड़े काम के लिए क्या मदद कर सकते थे?

यतीन की मा एक दिन उस जागीरदार के पास
जिसके पिता के नीचे यतीन के नाना कारिन्दे थे और सारों
हिसाब ईमानदारी से देखते थे।

जागीरदार साहब ने उन्हें बहिन कहकर पुकारा।
बात सुनी और मदद करने का वायदा भी किया। मगर शर्त
रखी कि मकान गिरवी रख दिया जाए।

अम्मां जानती थी कि एक बार गिरवी रखने के बा
मकान हाथ से निकल जाएगा, पर फिर भी वह तैयार हो गई
वह तो प्रेम थी, जो बीच में टांग अड़ा बैठी और बोली
कि मेरी शादी के लिए घर रहन रखा गया, तो मैं कुएं में डूब
जाऊंगी।

यतीन की बड़ी बहिन के पति सज्जन प्रवृत्ति के व्यक्ति थे।
हें प्रेम की शादी की वाकई चिन्ता थी। उनके पास के गांव में
रईस रहते थे, जिनकी आयु कोई पैंतीस वर्ष थी और जिनकी
लिया शादी के बाद मर चुकी थीं।

... मोहल्ले प्रेम ने बाजार से मिठाई मंगवाई और यतीन को कुछ रुपए देकर खाने-पीने का सामान मंगवाया।

उस दिन घर में अरसे बाद भात और पूरियां बनीं। सबने भरपेट खाना खाया।

प्रेम ने बताया कि उसकी गरीबी के कारण उसे ससुराल में काफी अपमानित होना पड़ा, पर पति दिल के अच्छे थे। उन्होंने तो यहां तक भी कहा था कि यदि तुम चाहो तो अपनी माता वगैरह के लिए नियमित रूप से कुछ धन भेज सकती हो; पर इस भिक्षा को प्रेम ने स्वीकार नहीं किया।

उसने यतीन को बहुत प्यार किया, उसे नये कपड़े दिए, उसके लिए पतंग और डोर मंगवाई और उसे नए जूते भी दिए।

यतीन अपनी बहिन से फिर भी बचता रहा, क्योंकि वह तो अब अमीर हो गई थी। प्रेम ने उसे साथ ले जाने का प्रस्ताव किया, तो उसे भी यतीन ने मना कर दिया।

इसके बाद वह चांदनी रात में घर से निकला और मंदिर की दीवार पर जाकर बैठ गया।

अगले दिन मोहल्ले की स्त्रियां प्रेम से मिलने आईं।

यतीन छत पर बैसाख की पीली धूप में पतंग लूटता रहा या फिर अपने साथी बल्लू भगते के साथ लूटी हुई पतंगें गिनता रहा। लूटी हुई पतंगों और मांझे का उसके पास काफी बड़ा स्टाक था। पतंगों के पेंच देखने में उसे बड़ा मजा आता था। स्कूल वगैरह तो कुछ जाना नहीं था। करता भी तो क्या करता?

कुछ दिन रहने के बाद प्रेम अपने घर वापिस चली गई।

सतीश के पढ़ने का कोई ठिकाना नहीं था। पहिले उसे थोड़ा बहुत पढ़ा दिया करती थी; पर अब तो वह भी नहीं ...।

"सतीश को स्कूल की सुविधा नहीं थी, उसे शिक्षा प्राप्त करने की उत्कट इच्छा थी और वह उन सब बच्चों से ईर्ष्या करता था, जो कि स्कूल जाते थे।"

इतिफ़ाक़ की बात कि कुछ दिनों बाद मोहल्ले में ... हरचंद की जो विशाल कोठी थी, उसमें मिडिल तक का एक स्कूल खुल गया।

सतीश को किसी तरह उसी में भरती कर दिया गया। पर यह बात ज़्यादा देर नहीं चली। किसी लड़के के जूतों की चोरी का इल्ज़ाम उस पर लगाया गया और उसे पाँचवीं कक्षा से स्कूल छोड़ना पड़ा। चोरी लगाने का आधार यह था कि सारे स्कूल में केवल सतीश ही एक ऐसा लड़का था जिसके पास जूते नहीं थे और जो नंगे पैर स्कूल आता था।

स्कूल से छुट्टी पाने के बाद सतीश के पिता ने उसे एक पंडितजी के पास छोड़ दिया, ताकि वह मुफ़्त में संस्कृत पढ़ सके।

वैद्यजी भी एक ही उत्साही व्यक्ति थे। सारा दिन प्रैक्टिस करने के बाद भी उन्हें लड़कों को कुछ पढ़ाने तथा कुछ स्त्रियों से अनैतिक संबंध रखने का समय मिल ही जाता था।

उनके पास बहुत सारी पत्रिकाएं आती थीं, जिनकी वे जिल्दें बंधवा कर शीशे की अलमारी में रख देते थे।

सतीश को उनके यहां तबीयत नहीं लगी। एक तो सारा दिन घरल घोटना पड़ता था और दूसरे उस समृद्ध और अमीर वातावरण में उसे बड़ी हीनता की भावना होती थी।

वैद्यजी की पत्नी बड़ी उदारमना थीं। कभी-कभी सतीश

मार करने बातों में उसकी मां का छोड़कर यह मौसी ही थ
ी इतना प्यार करती थी।

कई दिन बाद उसका रोना-धोना कुछ कम हुआ और त
से अपनी किताबों की याद आई। पता नहीं क्यों इस बा
सका मन किताबों में नहीं लगा। वह सोचने लगा कि मोहल्
े सारे लड़के स्कूल जाते हैं और वह पाठशाला जा
ा वे लोग निकर कमीज और पैंट पहनते हैं, जबकि उसका धो
ता रहता है, या पटा-सा ढीला पायजामा और एक मै
ा कुर्ता। जूते भी उसके पास नहीं थे।

दौलतराम ने उस कुर्ते तरह बन्द कर लिया। इसके
पाठशाला में पढ़कर होता क्या? बाकी लड़के तो डाक्टर, इं
नियर, बाबू या अफसर बनेंगे और वह बहुत से बहुत
ास्त्री जी जैसा हो जाएगा जो उसे पढ़ाया करते थे।

स्कूल पढ़ने से उसका मन उचट गया था, क्योंकि वह
मोहल्ले के बाकी लड़कों की भांति अंग्रेजी स्कूल में पढ़
ाहता था। मगर प्रश्न यह उठता था कि यह सब हो तो कै
ा? यतीन के पिता तो न, कोई दिलचस्पी थी नहीं और
सारी कर ही क्या सकती थी?

यतीन घर में घुमा रहा और रोता रहा।

मोहल्ले के एक पंडित जी थे, जो अंग्रेजी स्कूल में अध्य
पक थे और हिन्दी तथा संस्कृत पढ़ाते थे। बड़े सज्जन औ
दयालु प्रकृति के पुरुष थे। उन्होंने पूर्ण बात सुनी और स्कूल
हैडमास्टर से बात की। एक दिन वे यतीन के घर आए औ
उसकी मां से उसके दाखले के बारे में बातें करने लगे।

यतीन के नानाजी की जेबी घड़ी और एक कलईदार हुक
बेचा गया और यतीन ने स्कूल में दाखला ले लिया। हैडमास्ट
ने उससे बातचीत की, सारी स्थिति पर दया प्रकट की और उ
। कर लिया गया। उसकी फीस

ओढ़नी और गाढ़ी चादर में भी कुलीन प्रतीत होती थीं।

बच्चों को देखकर इतना खुश होती थीं कि कुछ कहा नहीं जा सकता। वह उन्हें चूमतीं, कहानियाँ सुनातीं और पहेलियाँ बुझातीं।

वह प्रायः पतीन के यहाँ आया करती थीं और चक्की पीसने और चावल वग़ैरह कूटने में मदद किया करती थीं।

जब वह जातीं तो पतीन की अम्मा उन्हें कुछ चावल और आटा वग़ैरह बाँध देतीं। मगर यह सारा कुछ कार्य पतीन के पिताजी की चोरी से होता था।

माफ कर दी गई।

यतीन की बड़ी बहिन को जब पता लगा, तो उन्होंने
रुपये कपड़े के लिए भेजे। एक नया पायजामा और नया
कमीज बनवाई गई।

सारा हफ्ता वह उन्हीं कपड़ों को पहिनता था और हफ्ते
के आखिर में उन्हें साबुन से धोता था। जितनी देर कपड़े सूखते
उतनी देर वह अंगोछा लपेटे नंगा घूमता रहता। भयंकर स
के दिनों में भी ऐसा ही करना पड़ता था। उसके पास कि
तरह के कोई गर्म कपड़े नहीं थे।

मगर यतीन अब बेहद खुश था। उसने टूटकर परि
किया और कक्षा में प्रथम स्थान पाया। अब आगामी दो व
के लिए उसे दस रुपया प्रतिमाह वजीफा सरकार से मिलन
था। हेडमास्टर साहब ने उससे हाथ मिलाया और बधाई दी

इस समय यतीन की आयु सोलह वर्ष की थी और व
जवान होना शुरू हो चुका था।

गर्मी की छुट्टियों में वह बड़ी बहिन के यहां चला गया।

बहिन का गांव कोई तीस मील दूर था। पांच मील चलने
पर रेल मिलती थी, जो बहिन के गांव से दो मील पर छोड़ती
थी। बहिन के बच्चे काफी थे और वे यतीन को खूब प्यार करते
थे।

उसकी गैरहाजिरी में उसकी बस्ती में एक हादसा हो गया
मंदिर के पास जो एक बूढ़ी ब्राह्मणी रहती थी और जिसे सब
नाती की मां कहकर पुकारा करते थे, उसके
चिट्ठी लेकर जमीदार के गुमाश्ते आ गए
अपना घर [illegible]

वे लोग घर पर कब्जा करने आए थे। लड़के
गी, पर जब देखा कि उनका एक मात्र
तो दुःख के मारे वह कुए में कूद

गई। जब उसकी लाश बाहर निकाली गई, तो
में रोटी का अधखवा टुकड़ा था।
दिन बाद उसकी मां भी शोक

मींदार का हो गया।

## नौ

और उसके आसपास मेले-ठेले काफी लगते थे।
के मोहल्ले में मैजे लगते थे मेलों में से बच्चे
औरतें चूड़ियां पहिनती थीं और बाकी
सैर करते थे, सलाई पर सिका कबाब खाते थे
सामान खरीदते थे।
कोई पाथ मीर्न दोयज का मेला लगता था जो
में जुड़ता था।
र यतीन भी अम्मां से आठ आने पैसे लेकर इस मेले
या था।
एक राजा का पुराना महल था, जिसके बाहर
और एक पोखर थी। इसी पोखर के चारों ओर
था। दूर-दूर से देहाती लोग यहां आते थे और
थे, गुड़ की जलेबियां लेते थे और सिले सिलाए कपड़े

# छः

एम० ए० प्रीवियस की परीक्षा के उपरान्त यतीन ने अपनी कुछ किताबें बेच दीं और घर का टिकट लिया।

चौबीस घंटे के अन्तराल के बाद गाड़ी घर पास वाले स्टेशन पर पहुंची।

साल भर के अरसे के बाद घर आकर यतीन को बड़ा अच्छा लगा। शारदा अब बड़ी हो रही थी और यतीन सोचता था कि उसकी शादी वह धूमधाम से करेगा।

छुट्टी भर उसने फिर ट्यूशन किए और जुलाई में वह फिर प्रयाग आ गया।

जिस दिन वह प्रयाग आया उसके अगले ही दिन पुलिस का एक आदमी उसकी खोज करता-करता छात्रावास पहुंचा और इत्तला दी कि नगर के सीनियर सुपरिटेंडेंट पुलिस ने उन्हें घर पर बुलवाया है।

यतीन घबरा गया। वह कभी-कभी प्रोग्रेसिव किस्म के लोगों के पास बैठता था और समाजवाद के बारे में किताबें पढ़ता था, मगर उसे यह याद नहीं पड़ता था कि उसने ऐसा क्या काम कर डाला कि पुलिस का बड़ा कप्तान उसे घर पर बुलवाए।

खैर, उसने अपने कपड़ों पर इस्त्री की, जूता पालिश किया और निश्चित समय से आधा घण्टा पहिले ही कप्तान साहब की कोठी की दिशा में चल पड़ा। कप्तान साहब मिशन रोड पर रहते थे जैसा कि उसे वहां पहुंचकर पता लगा, वह उसी की जाति के भी थे।

कप्तान साहब का बंगला वाकई बहुत बड़ा था। आधा रास्ता अन्दर पहुंचने के बाद एक सिपाही 'हाल्ट' कहकर चिल्लाता था और परिचय देने के बाद ही भीतर जाने देता था।

कोठी काफी बड़ी थी। चारों तरफ फूलों के और हरी घास के लान थे। बरामदे में कप्तान साहब के हैट और पुलिस की टोपियां टंगी हुई थीं।

वह खुद बाहर निकलकर आए और उसे बड़े स्नेह के साथ भीतर ड्राइंगरूम में ले गए। मतीन की बड़ी खातिर की गई। पहिले चाय पिलाई गई और फिर रात के खाने के लिए रोका गया।

कप्तान साहब चालीस वर्ष के मोटे-ताजे, सुन्दर और विद्वान खुशमिजाज व्यक्ति थे जो सिगरेट बे-तहाशा पीते थे। मतीन को पहिली ही भेंट में उन्होंने दोस्त बना लिया।

कप्तान साहब की पत्नी कुछ रुखाई रखती थीं और वे मतीन के साथ बेरुखी से पेश आईं। मगर कप्तान साहब के ठहाकों के सामने तो भूत भी नहीं ठहर सकता था। सारी शाम बेहद खुशी में बीती।

डिनर के बाद कप्तान साहब ने खुद मोटर ड्राइव की और मतीन को उसके होस्टल तक छोड़कर आए।

इसके बाद मतीन कप्तान साहब के यहां प्रायः आने लगा। अगर किसी कारण वह न आता, तो कप्तान साहब का बुलावा आ जाता। कप्तान साहब वाकई में बेहद स्नेही, निश्छल और दिलचस्प आदमी थे। उनके कर्मचारी उनसे बहुत प्यार करते थे।

एक दिन कप्तान ने बातों-बातों में बताया कि वह अपनी बहिन की लड़की का रिश्ता मतीन से करना चाहते हैं। लड़की के पिता एक बड़े जमींदार के लड़के थे। खुद भी केन्द्रीय सचिवालय में अफसर थे, पर वह किसी होनहार गरीब लड़के की तलाश में थे, जो जिन्दगी में आगे बढ़ सके। वह उस लड़के की यथाशक्ति मदद करना चाहते थे।

मतीन ने सुना तो बड़ी खुशी हुई। बजाय अपना

खुशी तो यह हुई कि कप्तान साहब जैसे खुशदिल इंसान से रिश्तेदारी हो गई।

लड़की के दो या तीन फोटो भी यतीन को दिए गए, जिनमें एक चित्र में वह काफी सरल और सुन्दर दिखाई पड़ती थी।

बात पक्की हो गई और उन्हीं सर्द जाड़ों में उसकी सगाई हो गई। उसकी भावी सास उससे मिलने प्रयाग आईं और उसके लिए गर्म कोट और पतलून का कपड़ा लाईं, स्वेटर लाईं और जूते लाईं।

यतीन की शक्ल बदल गई। उसके भावी ससुर ने उसकी आर्थिक सहायता का बोझ भी हाथ में ले लिया। उसके बाद यतीन को सिवाय वजीफा लेने के और कोई काम नहीं करना पड़ा।

जिन्दगी में पहिली बार गर्म स्वेटर और सूट पहिनने पर यतीन को अजीब-सा लगा। उसकी सास काफी चंचल, सुन्दर और हँसमुख थीं। उन लोगों ने यह महसूस ही नहीं होने दिया कि यतीन गरीब है या वह उसकी कोई सहायता कर रहे हैं। सारा काम इतनी आत्मीयता के साथ हुआ कि यतीन परिवार का एक सदस्य बन गया।

बी० ए० फाइनल में उसकी प्रथम श्रेणी और चौथी पोज़ीशन आई। इसके बाद उसने पुराना होस्टल छोड़ दिया और वह एक बढ़िया होस्टल में चला गया।

## सात

जुलाई फिर आ गई। युनिवर्सिटी में नये छात्रों की भीड़ दिखाई पड़ने लगी। यतीन तो अब सीनियर छात्र हो चुका था। वह गांव से आए अपने जैसे फटेहाल छात्रों को देखता था और उस दिन को याद करता, जब दो वर्ष पहिले वह भी इसी तरह शानदार स्थान पर आया था।

जिस विषय में यतीन ने एम० ए० के लिए दाखिल लिया, उसके विभागाध्यक्ष एक पारसी सज्जन थे। काफी सुंदर, शालीन, मधुरभाषी और जरूरत से ज्यादा चालाक। उनकी धूर्तता का पता यतीन को काफी दिनों बाद लगा। जो रीडर थे, वह प्रोफेसर की खुले आम खुशामद करते थे, क्योंकि प्रोफेसर के रिटायर होने के बाद उन्हें ही प्रोफेसर होना था।

बाकी अध्यापकों में कुछ काफी परिश्रमी थे और अपने विषय पर अधिकार रखते थे। मगर कुछ ऐसे भी थे जिन्हें कुछ ज्यादा आता जाता नहीं था। उनमें से कुछ तो डांट-फटकार से काम लेते थे और कुछ इतने सज्जन और स्नेही थे कि विद्यार्थी लोग उनकी वैसे ही इज्जत करते थे।

क्लास में लड़कियों की संख्या काफी थी।

एक लड़की थी जो बंगाली थी और काफी मोटी थी। वह काफी गरीब थी और पता नहीं कैसे पढ़ाई की गाड़ी खींच रही थी, ताकि वह कुछ बन सके और परिवार की मदद कर सके।

एक गोरी लड़की थी जो अपनी लम्बी गर्दन को मुड़ाकर चलती थी। वह कभी-कभी मोटर से आती थी।

लड़कियों के इस झुंड में एक लड़की ऐसी थी, जिसने यतीन को अनायास ही आकृष्ट किया। उसका नाम था विनीता। विनीता हल्के सांवले रंग की थी, कद उसका छोटा था और देह पतली थी। वह इतनी भोली, अल्हड़ और सुन्दर थी कि

यतीन ने जैसे ही उसे देखा, वैसे ही उसे लगा गोया कि वह इसी की तलाश में अब तक भटक रहा था। वह बहुत धीमे से मुस-कराती थी और ज्यादातर बातचीत अपनी आंखों के माध्यम से ही करती थी और उसकी मासूमियत से भरी बड़ी-बड़ी आंखें ऐसा प्रभाव छोड़ती थीं कि यतीन उसे कभी भूल नहीं सकता था। कुछ महीने बीतते यतीन और विनीता की मैत्री हो गई।

यतीन की सगाई हो चुकी था और वह भली-भांति जानता था कि एक चौदह या पंद्रह वर्ष की बालिका कहीं उसकी प्रतीक्षा में बैठी है। इस बीच वह एक बार अपनी भावी पत्नी को देख भी आया था। वह काफी सतुलित सुन्दर, गोरी व समझदार प्रतीत होती थी।

आगे चलकर कोई गलतफहमी न हो, इस बात को ध्यान में रखते हुए यतीन ने सारी बातें विनीता को खुलासा बतला दी थीं। मगर विनीता थी कि उसे कुछ परवाह ही नहीं थी। वह यतीन से मिलती, कक्षा की परेशानियां हल करती, कभी-कभी उसे घर बुलाती और चाय पिलाती या खाना खिलाती।

कुछ ही दिनों में वह इस तरह व्यवहार करने लगी, जैसे कि वह यतीन को वर्षों से जानती हो और उस पर उसका पूरा अधिकार हो। यतीन की स्थिति भी धीरे-धीरे काफी नाजुक होती जा रही थी और उसे लगता था कि बगैर विनीता के वह रह नहीं सकता।

एम० ए० के दो वर्ष इसी प्रकार बीत गए। परीक्षा के दिनों में विनीता यतीन को हिम्मत बधाती, उसके साथ हंसती रहती या बतियाती रहती। ऐसा लगता था कि जाने कितने वर्षों का परिचय है, जिसने धीमे-धीमे मैत्री का रूप धारण किया है। यतीन जानता था कि इस मैत्री का अन्त सुखदायक नहीं होगा; पर फिर भी वह उसे छोड़ नहीं सकता था। इतनी शक्ति उसमें नहीं थी।

अपने देश और समाज का प्रश्न है, जहां बिना शादी के किसी पराई लड़की से दोस्ती रखना एक पाप है। एक ऐसा पाप, जिससे पुरुष को शायद मुक्ति मिल जाए, पर स्त्री को कभी नहीं मिलेगी।

वह तय करता था कि जब शादी ही नहीं करनी, तो विनीता से दोस्ती रखने से ही क्या लाभ ?

एक ऐसा स्वैटर क्यों बुना जाए जिसे पहिनने की कोई संभावना ही नहीं ?

वह निश्चय करता कि अब वह विनीता की ओर मुह उठाकर देखेगा भी नहीं; पर अगले दिन जब हंसती, खिलखिलाती विनीता दिखाई पड़ती, तो वह सब कुछ भूल जाता और उसी में खो जाता।

## आठ

विनीता के पिता रेलवे विभाग में अधिकारी थे। घर में एक छोटी बहिन थी और माता-पिता थे। भाई कोई नहीं था। उसकी बहिन बहुत चंचल थी। उसकी माता बेहद सीधी, निश्छल और स्नेही थी और मनीष से बड़ा प्रेम करती थी।

उसके पिता आम अफसरों की तरह कुछ दबंग से व्यक्ति थे, जिन्हें खेल-कूद में काफी दिलचस्पी थी। मनीष जब कभी भी जाता, वह उससे फुटबाल ही की बात करते थे। कुल मिलाकर वह ज्यादा शालीन नहीं लगते थे और बौद्धिकता नाम की चीज तो उनके पास थी ही नहीं।

विनीता का बंगला सिविल लाइन्स में था। ईंटों का बना

पुराने जमाने का बगना और लम्बा-चौड़ा लान। लान में एक ओर फूलों के पेड़ भी थे, और फूल भी काफी थे।

विनीता की एक मित्र थी, जो यतीन के साथ ही पढ़ती थी। वह यतीन और विनीता की मैत्री पर कभी-कभी व्यंग्यपूर्ण कटाक्ष किया करती थी।

कुछ नौजवान प्रोफेसर भी थे, जो यतीन के साथ इसी बात को लेकर हास-उपहास किया करते थे। सीनियर प्रोफेसरों को सिवाये पढ़ाने के और किसी चीज से मतलब नहीं था।

फाइनल परीक्षा दिन-प्रतिदिन पास आ रही थी। यतीन की हार्दिक इच्छा थी कि क्लास में सर्व प्रथम आए, क्योंकि वैसा होने पर कम-से-कम कहीं अध्यापक की नौकरी तो मिल ही सकती थी।

वह बहुत परिश्रम करता था। दिन और रात पढ़ना और पढ़ना। कभी बहुत थक गया, तो किसी साथी के पास बैठ आया या कटरे में किसी हलवाई की दुकान पर कचौड़ियां खा लीं।

होस्टल का वातावरण कुल मिलाकर बहुत शान्त था। वाइसचांसलर स्वयं इस होस्टल के वार्डन थे। रोज-ब-रोज का इन्तजाम देखने के लिए एक और प्रोफेसर थे, जो पास ही बंगले में रहते थे और सुपरिटेंडेंट कहलाते थे। बेहद मृदुभाषी और सहायता करने वाले सज्जन।

होस्टल में लगभग दो-ढाई-सौ छात्र रहते थे, जिनमें से ज्यादातर पढ़ने वाले थे। वैसे कुछ ऐसे भी थे, जो न जाने कितने वर्षों से यूं ही रहते आ रहे थे। कोई कानून के कालेज में पढ़ता था, तो कोई किसी विषय पर शोध कर रहा था।

एक सज्जन थे जो गणित में रिसर्च कर रहे थे और उनका विश्वास था कि अपने को जीनियस कहलाने के लिए किसी हद तक बेढंगा रहना जरूरी था। वह जान-बूझकर अपने जूतों पर

दाल गिरा लेते या ऊलजलूल पोशाक पहन लेते। यतीन उनसे दोस्ती रखता था और उनकी इज्जत करता था। इस सब का कारण यह था कि उन सज्जन का साहित्य प्रेम बड़ा गहरा था।

एक और छात्र थे, जो सुबह को गुलाब का फूल हाथ में लेकर बाथरूम जाते थे।

एक और सज्जन थे, जो अपने पास कुछ नहीं रखते थे, मगर रहते ठाठ से थे। पायजामा किसी का होता था, कुर्ता किसी का। चाय बराबर पीते थे, मगर वहां भी स्थिति वही रहती थी कि चीनी किसी की होती थी और दूध किसी का। फर्स्ट इयर के लड़कों को जो बेवकूफ बनाया जाता था या तंग किया जाता था, उससे वह ही सज्जन उनकी रक्षा करते थे। इस रक्षा के बदले अगर वे उन्हीं लड़कों से स्टोव या क्राकरी मांगते थे, तो किसी को क्या ऐतराज हो सकता था ?

पढ़ाई से जब छुट्टी मिलती, तो यतीन कप्तान साहब के यहां या माथुर साहब के यहां हो आता था, माथुर साहब ही तो वह व्यक्ति थे, जिन्होंने उसे पहला ट्यूशन दिलवाया था। न वह ट्यूशन मिलता, न यतीन प्रयाग में रह पाता।

माथुर साहब इन दिनों बड़े दुःखी रहते थे। किसी तरह उन्होंने अपनी इकलौती बेटी की शादी की थी और ससुराल वाले थे कि उसे स्वीकार करने में ही अड़ंगा लगा रहे थे। लड़की घर पर ही रहती थी। उनका दुःख, उदासी देखे नहीं जाते थे। एक गरीब परिवार की अच्छी, खासी लड़की जो ससुराल वालों को पसन्द नहीं आई। दहेज वगैरह को लेकर कुछ चक्कर था।

माथुर साहब जैसे पूजा-पाठ वाले वैष्णव व्यक्ति को इतनी बड़ी सजा !

भगवान है या नहीं !

और है तो इतना निर्दयी क्यों है ?

मगर माथुर साहब भगवान् के प्रति कतई कुछ नहीं बोलते थे। भगवान् जो करता है, वह ठीक ही करता है। यदि हमें दुःख मिलता है, तो वह हमारे कर्मों का फल है।

माथुर साहब का कहना था कि तर्क के द्वारा भगवान् का एहसास कभी नहीं हो सकता, क्योंकि वह बुद्धि की पहुंच के बाहर है। वह तो एक सत्य है, जिसके अनुभव करने के लिए श्रद्धा और विश्वास की जरूरत है, ज्ञान और बुद्धि की नहीं।

यतीन की जान-पहचान एक ऐसे व्यक्ति से भी हो गई थी, जिनकी स्त्री चरित्रहीनता के कारण काफी बदनाम थी। उनके न जाने कितने प्रेमी बताए जाते थे। उनकी आयु पैंतीस चालीस वर्ष रही होगी, पर थी वह आकर्षक और मजाक पसन्द। उनके बैठते ही उदासी गायब हो जाती थी। यतीन देखता था कि वह पूजा-पाठ में काफी तत्परता से काम लेती थीं और दुःख में पड़े व्यक्तियों की बड़ी सहायता करती थी। उनके द्वार से कोई भिखारी खाली हाथ नहीं लौटता था। समाज के सुधार में और स्त्रियों का शोषण रोकने में वह काफी योगदान देती थी। बाढ़ के दिनों में वे सदा समिति बनातीं, अनाथ लड़कियों को मशीन चलाना सिखातीं और बीमार लोगों की होम्योपैथिक चिकित्सा करतीं। यतीन को कभी पता नहीं लगा कि वह किधर से चरित्र-हीन थी।

हमारा समाज भी क्या समाज है, जहां किसी भी हिम्मत वाली स्त्री को आसानी से दुश्चरित्र बताया जा सकता है। उन्होंने यतीन को बराबर बड़ी बहिन का प्यार दिया।

फाइनल परीक्षा हो गई और यतीन क्लास में सर्वप्रथम आया।

विनीता ने उसे दिल खोलकर बधाई दी और इस खुशी में एक दावत भी दी।

कप्तान साहब ने उसे गले लगाया और सिनेमा दिखाया।

इसके बाद सतीन ने सिविल सर्विस का इम्तिहान के लिए तैयारी करनी शुरू की।

## नौ

सतीन ने होस्टल छोड़ दिया। कप्तान साहब तबादले पर आगरा चले गए।

सतीन बेली रोड के एक बंगले में रहने लगा, जिसमें उसकी भावी पत्नी के मौसा रहते थे। बड़ा विचित्र वातावरण था। मौसा जी जो थे, वह लखपति थे। राजस्थान में उनके कस्बे के बागान थे, पर वह थे कि तबीयत बहलाने के लिए एकाउंटेंट जनरल के दफ्तर में बाबूगिरी करते थे। उनके कोई सन्तान नहीं थी। जैसा कि बाद में सतीन को पता लगा, वह शारीरिक रूप से विवाह के योग्य नहीं थे। वह ज्यादातर समय पढ़कर या पूजापाठ में गुजारते थे और मस्त रहते थे गंगा के उस पार कोई महात्मा रहते थे, जिनका प्रवचन सुनने वे हर शनिवार को जाते थे और फिर सोमवार को ही लौटते थे।

मौसी थी रानियों की भाँति सुन्दर सन्तुष्ट और उदार। वह अपने पति से बड़ा प्रेम करती थी और आसपास के बच्चों से इतना स्नेह रखती थी, गोया कि वे उनके ही बच्चे हों। निःसंतान होने के कारण उनमें एक ऐसा मातृत्व का सागर उमड़ता रहता था कि वह किसी भी बच्चे को अपना बना लेती थी। उनके पास बहुत गहने थे और उनका जो वक्त था, वह या तो चाय पीने में कटता था या फिर पान खाने में।

एक नौकर था, बख्शी। खाली वक्त में मौसी जी और उसकी

खूब लड़ते थे, मगर यह एक ऐसी स्थिति थी, जिसमें दोनों पार्टियां समझौता कर चुकी थीं।

बंगले में एक कमरा यतीन को दिया गया, मगर पढ़ने के लिए जो एकान्त अपेक्षित है, वह वहां नहीं था। मौसा जी के यहां मेहमान खूब आते थे और आने के बाद कई-कई दिन ठहरते थे। हुक्का खूब चलता था।

मगर यतीन था कि खिड़कियां बन्द करके उसी वातावरण में पढ़ता था और खूब पढ़ता था। इंग्लैण्ड का इतिहास और अन्तर्राष्ट्रीय कानून में दो विषय थे, जिनमें उसकी स्वाभाविक रुचि थी। आई० ए० एस० तथा बाकी सिविल सर्विसों की जो संयुक्त परीक्षा होती थी, उसमें पन्द्रह से बीस हजार तक लड़के बैठते थे। चुने जाने वालों की संख्या करीब डेढ़ सौ होती थी। यतीन को इतना विश्वास नहीं था कि वह प्रतियोगिता में सफल हो जाएगा।

वैसे भी वह युनिवर्सिटी में लेक्चरर बनना चाहता था पर विभागाध्यक्ष के पक्षपात के कारण उसे यह अवसर कभी नहीं मिला। कुछ और शानदार कालेजों ने उसे लेना चाहा, मगर तब तक वह सिविल सर्विस की लिखित परीक्षा में बैठ चुका था और पर्चे जो थे वे ठीक गए थे। उसने परिणाम की प्रतीक्षा करना ही उचित समझा। लिखित परीक्षा के बाद इंटरव्यू होता था, जिसमें पास होना अनिवार्य था। उन दिनों इंटरव्यू को बहुत बड़ा हव्वा समझा जाता था और बड़े-बड़े धुरन्धर वहां जाकर मैदान हार जाते थे।

लिखित परीक्षा की समाप्ति पर यतीन कुछ दिनों के लिए प्रयाग रुक गया। छुट्टियों के दिनों में युनिवर्सिटी का एरिया इतना उजड़ जाता था कि इधर-उधर जाकर तबीयत उदास होती थी।

यतीन या तो कंपनी बाग में चला जाता या या फिर सिविल

लाइन्स के चक्कर लगाता। सिविल लाइन्स में काफी हाउस एक ऐसा स्थान था जहां लेखक लोग खूब इकट्ठे होते थे। खूब गरमा-गरम बहस होती थी। एक काफी के प्याले के सहारे आप वहां सारी शाम गुजार सकते थे। कवि, कहानीकार, आलोचक और चित्रकार यानी कि सभी किस्म के कलाकार वहां इकट्ठे होते थे। कुछ लोगों का तो आने का समय और बैठने की जगह तक निश्चित होती थी। फिराक साहब दुपहर के बाद ही काफी हाउस आ जाते थे और शाम की भीड़ के आने से पहिले ही वापस हो जाते थे।

एक दिन काफी हाउस से वापस होते हुए यतीन को विनीता मिल गई। हमेशा की तरह खुश और मुसकराती हुई।

यतीन ने बताया कि पर्चे अच्छे गए हैं और सम्भव है कि वह शायद ले लिया जाए।

'नौकरी के बाद क्या करोगे?' विनीता ने पूछा।

'नौकरी मिलने के बाद नौकरी करूंगा। फिर शादी होगी और फिर बच्चे होंगे।' यतीन ने उत्तर दिया और हंसने लगा। हंसते-हंसते उसने पूछा, 'तुम कब शादी करोगी?'

'मेरी शादी हो चुकी। जीवन में एक को पति स्वीकार कर लिया और बस।' विनीता ने कहा और वह सहसा गंभीर हो गई।

उसकी गम्भीरता देखकर यतीन सहम गया। गला साफ करते हुए बोला, 'यह क्या पागलपन की बात करती हो, मैं तो शुरु से ही कहता आया हूं कि मेरी जहां सगाई हुई, वहीं शादी भी होगी। मेरे पीछे तो जिन्दगी नहीं खराब कर रही तुम?'

विनीता ने कोई उत्तर नहीं दिया। उसने आंखें उठाईं। उनमें आंसू थे। उसने यतीन को प्रणाम किया और चली गई।

प्रवीन वहीं गुलमुहर के नीचे खड़ा रहा और पता नहीं क
क्या सोचता रहा।

अगले दिन प्रवीन अपने घर वापस चला गया। वहां
उसे इंटरव्यू की ट्रेनिंग लेने दिल्ली जाना था। गाड़ी से उ
युनिवर्सिटी की इमारतें चमकीं, तो उसने उन्हें मन-ही-मन प्रणा
किया।

# विवाह

विवाह

जिस गाड़ी से यतीन प्रयाग गया, वह एक पैसेंजर गाड़ी थी। हर छोटे-बड़े स्टेशन पर रुकती थी। यतीन ने इतनी लंबी यात्रा कभी नहीं की थी। वह खिड़की के पास बैठा रहा और बड़े अनमने भाव से बाहर बिखरी चांदनी को देखता रहा। रास्ते में जहां कहीं भूख लगी, उसने अपनी गठरी में से परांठे निकाले, अचार के साथ खाए और प्लेटफार्म पर पानी पी लिया।

लखनऊ गुजर जाने के बाद तो लोग अवधी और भोजपुरी में बातें करने लगे, जो उसे बड़ी मधुर लगी। कुछ लोग रात-भर तुलसीदास की रामायण गाते रहे और कोई-कोई देहाती अपने अंचल का ग्रामगीत गाने लगा। यतीन इस कार्यक्रम में इतना डूबा कि रात-भर नहीं सोया।

चौबीस घंटे का सफर तय करके गाड़ी फाफामऊ पहुंची, जहां गंगाजी का पुल है। प्रयाग में गंगा काफी चौड़ी हो जाती है। गंगा पार करने के बाद गाड़ी प्रयाग स्टेशन पर रुकी।

[illegible] स्टेशन जाने के लिए

पड़ी।

नने पर यतीन ने लोगों से युनिवर्सिटी का मार्ग पूछा और फिर उसी दिशा मे चल दिया।

युनिवर्सिटी की इमारत बड़ी शानदार थी और दूर से देखने पर एकदम किसी किले या महल जैसी लगती थी। सीनेट हाउस के ऊपर लगी विशाल घड़ी टिन-टिन की ध्वनि करती थी, जो दूर तक सुनाई पड़ती थी। होस्टल भी काफी बड़े-बड़े थे और उनमें प्रवेश पाना तो और भी कठिन काम था।

म्योर सेंट्रल कालेज का टावर बहुत ऊंचा और सुन्दर था और उसके ठीक सामने कंपनी बाग था जहां चन्द्रशेखर आजाद शहीद हुए थे। यतीन ने पहिले तो युनिवर्सिटी में दाखला लेने का फार्म भरा और इसके बाद वह उन लोगों से मिलने चला जिनके लिए वह खत लाया था। पैसा बचाने की वजह से वह हर जगह पैदल ही गया।

सबसे पहिले वह उन बैरिस्टर के पास गया जिनके लिए हैडमास्टर साहब ने खत दिया था। वह सिविल लाइन्स में एलगिन रोड पर रहते थे। वहां तक पहुंचते-पहुंचते यतीन के पांव दर्द करने लगे।

खैर, किसी तरह बैरिस्टर साहब से मुलाकात हो गई। चिट्ठी पढ़कर उनके चेहरे पर किसी प्रकार की कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई। उन्होंने एक नौकर [illegible] उसे [illegible] दिया और उसे बैरक के बाहर पड़ी खाट पर [illegible]। [illegible]

[illegible] कहीं [illegible], उस [illegible] यतीन का मन नहीं लगा। वहां उसे कुछ अटपटा लगा। [illegible] देर विश्राम करने के बाद वह चुपचाप कोठी से बाहर [illegible] और [illegible] की व्यवस्था पर विचार करने लगा।

इसके बाद शहर में [illegible] नहीं था। [illegible] और जब तक कुछ काम [illegible] किया, तब तक [illegible] भी न [illegible] था।

वह रात को फिर प्रयाग स्टेशन गया और वहीं पराठे खाकर एक खाली बेंच पर लेट गया और अपने घर की दिशा में देखने लगा। सैकड़ों मील दूर बैठी, धूल चाटती बहिन और माँ, खूंखार बाप, टूटा हुआ कच्चा मकान और गरीबी उसकी आँखों के सामने घूमने लगीं।

अगले दिन सुबह जो गाड़ी सहारनपुर से प्रयाग आई उसमें दो लड़के ऐसे थे जो यतीन के साथ पढ़े थे और उसी के कस्बे के निवासी थे। उन्हें देखकर यतीन की हिम्मत बढ़ गई और वे दोनों भी एक तीसरा साथी पाकर बेहद खुश हुए। यतीन की चिंता दूर हुई। जब तक और कोई बंदोबस्त हो, तब तक वह उन्हीं दोनों के पास रहेगा।

वे तीनों,पहिले रजिस्ट्रार के दफ्तर गए और फिर एक ऐसे छोटे-से छात्रावास में गए, जो एक धर्म विशेष के लड़कों के ही लिए बना था। यतीन यद्यपि इस धर्म का नहीं था, पर फिर भी उसके नम्बर वगैरह देखकर, उसे दाखला मिलने में कोई विशेष परेशानी नहीं हुई। युनिवर्सिटी और छात्रावास में दाखिला लेने के बाद यतीन ने डाकघर से एक पोस्टकार्ड खरीदा और उसे अपनी बहिन के नाम लिखकर इण्डियन प्रेस के पास लगे लैटर बक्स में डाल दिया।

युनिवर्सिटी खुलने में देर थी और इस कारण यतीन को काम-धन्धा ढूंढने को काफी समय मिल गया।

कि मिट्ठू बाबू का सारा चेहरा शराब, व्यभिचार और म
भिन्न-भिन्न पाप के कारण बड़ा भयावना और खुरदरा हो
है। उनकी आंखें लाल थीं और उनके नीचे मोटी-मोटी
ी लकीरें थीं। वह मध्यम कद के पुरुष थे और इस वक्त
एक लुंगी और मिर्जई पहिने हुए थे। आवाज उनकी काफी
थी। उन्होंने यतीन को नीचे से ऊपर तक देखा और पूछा,
है ? क्यों आए हो ? क्या चाहते हो ?'

'बाबूजी ! मैं एक असहाय विद्यार्थी हूं और किसी तरह
मेहनत-मजदूरी करके पढ़ना चाहता हूं।' यतीन ने किसी तरह
हा।

'गरीब हो तो पढ़ने क्यों आए हो ?'

'मैं एक प्रतिभावान छात्र हूं और हमेशा प्रथम श्रेणी में
पास हुआ हूं। इस बार मेरा सारे प्रदेश में सातवां स्थान है।'

'हूं, सो तो देखता हूं। मगर मुझसे क्या चाहते हो ?'

'बाबूजी ! छात्रावास की फीस माफ कर दें, तो आपकी
बड़ी कृपा होगी।' इतना कहते-कहते यतीन का गला भर आया।

'फीस पूरी माफ। बिजली माफ। पानी माफ। जाओ
और पढ़ो। सब कुछ माफ कर दूंगा, मगर रोना माफ नहीं
करूंगा।'

## तीन

देर जम जाने के बाद यतीन और उसके साथियों ने प्रयाग
की सैर करनी शुरू की। इलाहाबाद वाकई एक अद्भुत नगर
है।

## दो

दो दिन बाद छात्रावास के वार्डन से मिलने गया, जो एक बंगाली सज्जन थे और जिन्हें सब लोग मिट्ठू बाबू के नाम से पुकारते थे। वह निहायत शरारती और मजाक पसन्द किस्म के इंसान थे, जो अपने जमाने में युनिवर्सिटी से मार कर निकाले गए थे। एक बार तो वह गवर्नर और उनकी मेम के सामने नंगे ही हाजिर हो गए थे, क्योंकि उनकी अपने साथियों से यह शर्त लग गई थी कि वैसा करने पर सारे साथी उन्हें एक-एक पांच रुपया देंगे।

पैंतीस वर्ष की आयु में उन्होंने बी० ए० की परीक्षा पास की और फिर कानून की डिग्री ली। बड़े आदमी के लड़के थे और इस कारण गवर्नर ने उन्हें मनोनीत करके मैजिस्ट्रेट बना दिया। वहां भी इनसे न रहा गया। एक बार चलती ट्रेन में किसी सम्भ्रान्त अंग्रेज महिला से छेड़खानी कर बैठे और नौकरी छोड़नी पड़ी। इसके बाद वे फौजदारी के वकील हो गए।

मिट्ठू बाबू की कोठी के भीतर प्रवेश पाकर यतीन ने महसूस किया कि वह किसी निहायत अजीब किस्म के आदमी से मुलाकात करने जा रहा है। कोई कमरा था, जिसमें सैकड़ों किस्म के हुक्के-ही-हुक्के रखे हुए थे और कोई कमरा था, जिसमें हजारों किताबें छत तक अलमारियों में सजी हुई थीं।

मिट्ठू बाबू अकेले ही रहते थे और खाना वगैरह बनाने के लिए नौकर-चाकर थे। वह विधुर थे और परिवार के नाम पर उनका एक पुत्र था, जिससे उनकी बोलचाल तक नहीं थी। मिट्ठू बाबू की कर्नलगंज में काफी जायदाद थी और पैसे की उन्हें कोई कमी नहीं थी।

कुछ देर के बाद यतीन की बाबूजी से भेंट हुई। यतीन ने

देखा कि मिट्ठू बाबू का सारा चेहरा शराब, व्यभिचार और न जाने किस-किस पाप के कारण बड़ा भयावना और खुरदरा हो गया है। उनकी आंखें लाल थी और उनके नीचे मोटी-मोटी काली लकीरें थीं। वह मध्यम कद के पुरुष थे और इस वक्त सिर्फ एक लुंगी और मिर्जई पहिने हुए थे। शायद उनकी गाढ़ी मस्त थी। उन्होंने यतीन को नीचे से ऊपर तक देखा और पूछा, 'क्या है ? क्यों आए हो ? क्या चाहते हो ?'

'बाबूजी ! मैं एक असहाय विद्यार्थी हूं और किसी तरह मेहनत-मजदूरी करके पढ़ना चाहता हूं।' यतीन ने किसी तरह कहा।

'गरीब हो तो पढ़ने क्यों आए हो ?'

'मैं एक प्रतिभावान छात्र हूं और हमेशा प्रथम श्रेणी में पास हुआ हूं। इस बार मेरा सारे प्रदेश में सातवां स्थान है।'

'हूं, सो तो देखता हूं। मगर मुझसे क्या चाहते हो ?'

'बाबूजी ! छात्रावास की फीस माफ कर दें, तो आपकी बड़ी कृपा होगी।' इतना कहते-कहते यतीन का गला भर आया।

'फीस पूरी माफ। बिजली माफ। पानी माफ। जाओ और पढ़ो। सब कुछ माफ कर दूंगा, मगर रोना माफ नहीं करूंगा।'

## तीन

पैर जम जाने के बाद यतीन और उसके साथियों ने प्रयाग की सैर करनी शुरू की। इलाहाबाद वाकई एक अद्भुत नगर था।

पहली बात तो यह थी कि संगम होने के कारण यह बड़ा धार्मिक स्थान था। माघ के मेले में दूर-दूर से यात्री थे और झोपड़ियों में गंगाजी के तट पर ही रहते थे। मुनि द्वाज का आश्रम भी यहीं था, जिनसे मिलने कभी राम लक्ष्मण स्वयं आए थे।

दूसरी बात यह थी कि नगर शिक्षा का केंद्र था। यह युनिवर्सिटी सारे उत्तरी भारत में अपना स्थान रखती थी। विषय के प्रकाण्ड पण्डित यहाँ मौजूद थे।

तीसरी बात यह थी कि यहाँ हाईकोर्ट था, जिसके का न जाने कितने जज, वकील और बैरिस्टर आदि सिविल लाइन्स में निवास करते थे।

और चौथी बात यह कि प्रयाग हिंदी साहित्य का पन्त और निराला दोनों यहीं रहते थे। फिराक गोरखपुरी बच्चन तो युनिवर्सिटी में ही पढ़ाते थे।

प्रत्येक दृष्टि से प्रयाग एक ऐसा नगर था जहाँ व्यक्ति अपने-आप ही सभ्य और सुसंस्कृत हो सकता था।

सारे साथी एक-एक करके सारे दर्शनीय स्थान देखने भारद्वाज आश्रम, आनन्द भवन, हिंदी साहित्य सम्मेलन, मिर्नाधर, कम्पनी बाग की पत्थरों से बनी रंगीन कोठी, पुरानी लाइब्रेरी, हाईकोर्ट, खुसरो बाग और संगम, कुछ भी नहीं छोड़ा। इन स्थानों पर वे या तो पैदल रिक्शे या ताँगे पर।

फाफामऊ के पुल से बाढ़ में डूबती-उतराती गंगा को देख अपने-आप में एक विचित्र अनुभव था। न जाने कितने बैल, गाय, भैंस और घोड़े पानी में डूबे हुए चले आ रहे थे। कहीं-कहीं किसी आदमी की लाश भी नजर आ जाती थी।

संगम का दृश्य तो वास्तव में ऐसा था, जिसे शब्दों में नहीं बाँधा जा सकता। नीली यमुना और सफेद गंगा जहाँ मिलती

थी, उस स्थान पर नाव की सहायता से जाया जाता था।

गंगाजी के किनारे न जाने कितने पंडे और माथे पर चंदन लगाते भक्त और हनुमान मन्दिर व अक्षयवट के दर्शन करने जाने लोग एक विचित्र रंगीन दृश्य उपस्थित करते थे।

गंगाजी के उस पार जो प्रदेश था, उसी पर कभी उर्वशी और पुरुरवा रहते थे।

नैनी में सेन्ट्रल जेल थी, जो बड़ी भयानक थी। देश को आजाद कराने के आन्दोलन में न जाने कितने नेताओं ने वहां जेल काटी थी।

प्रयाग यतीन को वैसे भी बड़ा पसन्द आया। पश्चिमी उत्तर प्रदेश की तुलना में यहां के लोगों में ज्यादा स्नेह और ममता थी। उनकी बोली भी खड़ी बोली की अपेक्षा कहीं ज्यादा मधुर थी।

महानगर होते हुए भी प्रयाग काफी सस्ता था।

प्रयाग की चौड़ी सड़कें बहुत प्यारी लगती थीं। बिना विशेष कारण के, ये सड़कें साफ भी बहुत रहती थीं। सड़कों के दोनों ओर छायादार घने वृक्ष थे और गुलमुहर तो इतने थे कि बसन्त के दिनों में ऐसा लगता था कि सड़क के दोनों ओर किसी ने मशाल जला दी हो। रिक्शेवाले खैनी खाते थे और गप मारते हुए, बतियाते हुए रिक्शा हांकते थे।

सिविल लाइंस के सिनेमाघरों में रविवार के दिन कोई बढ़िया तसवीर घटे दामों पर अवश्य आती थी।

कम्पनीबाग में रविवार के दिन पानी छिड़का जाता था और बैंड बजता था। यह कार्यक्रम उस केंद्रीय स्थल पर किया जाता था, जो महारानी विक्टोरिया की मूर्ति के सामने था।

कुल मिलाकर प्रयाग में कुछ ऐसा अपनापन, कुछ ऐसा सौंदर्य और कुछ ऐसी उदासी थी, जो कवि हृदय यतीन को बेहद अच्छी लगती थी।

वह प्रायः या तो कर्नलगंज की ओर निकल जाता, जिधर खपरैलों की छतों के मकान थे और जिन पर लौकी वगैरा की बेल फैली रहती थी या फिर कंपनीबाग के उस हिस्से में घूमने चला जाता, जो बड़े लंबे और पुराने वृक्षों से घिरा था और एकदम सुनसान था। इतने बड़े नगर के बीचोंबीच ऐसा जंगल होना बहुत ही बड़ी चीज थी।

कंपनीबाग की पत्थरों की बनी लाइब्रेरी भी एक अद्भुत स्थान थी। वहां उन्नीसवीं शताब्दी की पुस्तकें भरी पड़ी थीं। काफी रिटायर हुए लोग वहां आते और अखबार पढ़ते। कुछ शोध करने वाले नवयुवक भी कभी-कभी दिखाई पड़ जाते थे। वहीं पर यतीन ने उन्नीस सौ दस का छपा 'इंडियन गजेटियर' देखा और उसमें अपने जिले ही नहीं वरन् अपने कस्बे तक का विवरण भी पढ़ा।

चांदनी रातों में यतीन कंपनी बाग से पार्क रोड होता हुआ काफी देर से लौटता। खासतौर से उस दिन जिस दिन वह जान-बूझकर शाम का खाना नहीं खाता था, ताकि मेस का बिल काबू के बाहर न चला जाए।

प्रायः शनिवार की शाम को वह भुने हुए चने खा लेता और पानी पी लेता! सत्तू खाने का अवसर भी उसे पहिले-पहल प्रयाग ही में प्राप्त हुआ।

## चार

यतीन को सरकार की ओर से बीस रुपया वजीफा मिला और युनिवर्सिटी की फीस भी आधी माफ हो गई। मिट्ठू बाबू

ने हर काम में बेहद मदद की। वह वैसे भी उन दिनों सीनेट के मेम्बर थे और वाइस चांसलर तक पर उनका असर था; पर इतना सब कुछ हो जाने पर भी यतीन को खर्चे की कमी थी। मेस का बिल, किताबें और कपड़े वगैरह का खर्चा, जूतों की मरम्मत, वर्षा की ऋतु मे छाते का अभाव, इन चीजों को लेकर वह कभी-कभी काफी उदास हो जाता था।

अभी तक उसके पास सिर्फ एक कमीज और एक पतलून थी। रात को वह लुंगी और बनियाइन पहनता था। वर्षा मे वह कपड़े भीग जाते थे, तो बदलने के लिए सूखे कपड़े नहीं थे।

वह जितने लोगो के नाम भी पत्र लाया था, उनमे से किसी ने उसकी कोई ठोस सहायता नहीं की। एक खत अभी बाकी था, जो एक साधारण से व्यक्ति के नाम था। एक छुट्टी के दिन यतीन ने वह खत लिया और प्रयाग स्ट्रीट की दिशा में कदम बढ़ाए।

यह खत माथुर साहब के नाम था, जो शिक्षा विभाग के डाइरेक्टर के स्टेनोग्राफर थे। खपरैल का टूटा-फूटा मकान, बाहर काफी आंगन और आंगन में खेलते बच्चे।

जिस वक्त यतीन पहुंचा, उस समय माथुर साहब, जो कट्टर वैष्णव थे, पूजा कर रहे थे। पूजा समाप्त होने के बाद उन्होंने एक टूटा-सा मूढ़ा यतीन को बैठने को दिया और खुद चिट्ठी पढ़ी।

उन्होंने दिलासा दी और कहा कि काम जरूर मिल जाएगा मगर आप एक हफ्ता मुझे दीजिए।

यतीन राजी हो गया। हफ्ता भर बाद यतीन को एक ट्यूशन मिल गया। प्रयाग स्टेशन के उस पार एक लड़की को पढ़ाना था। हालांकि वह स्थान यतीन के छात्रावास से काफी दूर था पर फिर भी तीस रुपया प्रतिमाह का काम वह ठुकरा नहीं सकता था। उसने वह ट्यूशन पकड़ ली।

लड़की का नाम था वन्दना। यह हाईस्कूल की छात्रा थी और स्वभाव से काफी चंचल थी। उसकी चंचलता से उसका सौंदर्य और भी ज्यादा निखर आता था। वह छोटे बच्चों की भांति रूठती, जिद करती, बहाने बनाती और पढ़ने से बचना चाहती थी।

कुछ ही दिनों में यतीन और वन्दना भाई-बहिन की भांति एक-दूसरे से घुल-मिल गए। यतीन उसे काफी डांटता था; पर वह कभी भी बुरा नहीं मानती थी। धीरे-धीरे वह ध्यान लगाकर पढ़ने लगी।

वन्दना हृदय की बड़ी कोमल थी। उसे यतीन की निर्धनता पर बड़ी दया आती थी। जितना उससे बन पड़ता, वह उसकी मदद करती।

एक बार यतीन लगभग दस दिन के लिए बीमार पड़ गया, पर उन लोगों ने उसे पूरा वेतन ही दिया।

इसी प्रकार जाड़ों की ऋतु में जब यतीन ठंड से ठिठुरता उसे पढ़ाने पहुंचता, तो वह उसे ओढ़ने को शाल देती और चाय पिलाती।

जिस दिन इम्तहान समाप्त हुआ, उसने यतीन को, जिसे वह मास्टर साहब कहती थी, घर पर दावत दी। पूड़ियां बनीं, कई सब्जियां बनीं और बाद में खीर का प्रबन्ध भी किया गया।

उस दिन विदा देते समय दोनों की आंखों में आंसू भर आए। इसके बाद वह लड़की यतीन को कभी नहीं मिली।

इस इम्तहान के समाप्त होने पर एक प्रोफेसर की मदद से यतीन का एक बैरिस्टर के बच्चों को पढ़ाने का काम मिल गया। बच्चे क्या थे, शैतान थे। एक बारह बरस की लड़की और एक दस बरस का शरारती लड़का।

वह यतीन को देखते ही कहता, लो वह आ गया मास्टरवा

फिर आ गया।'

वह प्रायः यतीन से पूछता, 'तुम्हें बिना स्वेटर और कोट के ठंड क्यों नहीं लगती ? तुम मास्टर नहीं, नौकर हो, गरीब हो।'

यतीन सब कुछ सुनता और चुप रहता। कुछ दिनों बाद उसने ट्यूशन छोड़ दिया और एक प्रेस में प्रूफ पढ़ने शुरू कर दिए।

## पांच

धीरे-धीरे यतीन प्रयाग की साहित्यिक गोष्ठियों में जाने लगा। कुछ साहित्यकार एकदम फक्कड़, खुले दिल और उदार थे, तो कुछ ऐसे भी थे, जो स्नाबरी से भरपूर थे। यदि कुछ साहित्यकार नए साहित्यकारों को आगे बढ़ने देना चाहते थे, तो कुछ ऐसे भी सज्जन थे जो नयी प्रतिभाओं को वहीं कुचल देना चाहते थे।

यतीन इन गोष्ठियों में जाता और तटस्थ भाव से सब कुछ देखा करता। उसे इस बात पर विश्वास ही नहीं होता था कि जिन लोगों की रचनाएं वह अब तक पढ़ता आ रहा था, वे ये ही थे। कभी-कभी यतीन को भी अपनी रचना पढ़ने का या अपने विचार प्रकट करने का अवसर प्राप्त हुआ।

जिन दिनों की बात की जा रही है, ये वे दिन थे, जिनमें हिन्दी साहित्य एक संक्रमण काल से गुजर रहा था। काव्य के क्षेत्र में छायावाद समाप्त हो चुका था और प्रयोगवाद व नई कविता ने जड़ पकड़नी प्रारम्भ कर दी थी। कहानी के क्षेत्र में

भी नई कहानी का युग प्रारम्भ हो रहा था और एक पूरी की पूरी पीढ़ी नई ताजगी के साथ साहित्य की सभी विधाओं को कुछ 'नया' देने के लिए संघर्ष में जुटी थी।

नये साहित्यकारों की अपनी मान्यताएं और कमियां कुछ भी रही हों, पर इस बात में कोई संशय नहीं था कि सब-के-सब पुरानी पीढ़ी का आदर करते थे।

प्रयाग में पुरानी पीढ़ी के दो स्तम्भ थे -- पंत और निराला। यतीन ने इन दोनों से भेंट करने का निश्चय किया।

सबसे पहले वह एक कवि मित्र के साथ शाम को पंडित सुमित्रानंदन पन्त से मिलने गया। पंतजी हैमिल्टन रोड के एक बंगले में रहते थे। यतीन ने पन्तजी के चित्र देखे थे और गुंजन, ग्राम्या व युगांत की कुछ कविताओं से वह इतना अभिभूत था कि जब तक पन्तजी ने दरवाजा खोला, वह बरामदे में खड़ा एक विचित्र प्रकार की कंपकंपी से कांपता रहा।

पन्तजी ने दरवाजा खोला, यतीन व उनके मित्र को भीतर बुलाया और सोफे पर बैठ जाने को कहा। सामने के सोफे पर वह खुद बैठ गए। यतीन ने देखा कि पन्तजी ठीक उतने ही सुंदर हैं, जितने कि वे चित्रों में दिखाए जाते थे। एकदम तराशे गए नाक-नक्श, रेशम जैसे लंबे केश, मध्यम कद और दुबली देह। रात के प्रकाश में वे कभी-कभी एक एंग्लो-इंडियन युवती होने का भ्रम पैदा करते थे। पन्तजी का व्यवहार विनय, स्नेह और शिष्टाचार से भरा था।

यतीन उन्हें देखता रहा, देखता रहा। उसे पता भी नहीं चला कि कब भेंट समाप्त हुई और कब वह हॉस्टल लौटा। [illegible] कवि से मिलने के बाद उसे लगा, जैसे कि जीवन सफल हो गया। इसके बाद तो पन्तजी से वह कई बार मिला। उनकी [illegible] भी [illegible] उनसे बातें भी कीं। मगर प्रत्येक बार [illegible], जो कि पहले दिन हुआ था।

कुछ दिनों बाद वह निरालाजी के दर्शनों के लिए दारागंज की बस्ती में गया। निरालाजी अपने एक चित्रकार-मित्र की बैठक में अकेले रहते थे। यतीन निराला को उनके काव्य के माध्यम से पूरी तरह जानता था। उसे पता था कि विशुद्ध कवि की हैसियत से निराला जो हैं वे पन्त से भारी पडते हैं।

उनकी ऊबड-खाबड पंक्ति योजना, ढेर सारे देशज शब्दों का प्रयोग और उनकी अतुकान्तता, एक ऐसा संगीत पैदा करती थी, जो सारी काटछाट के बाद भी पन्तजी में नहीं मिलता था।

वैसे दोनों अपने विभिन्न क्षेत्रों में अमर थे, महान् थे।

यतीन का यह सौभाग्य था कि वह इन दोनों रससिद्ध कालजयी महाकवियों से मिल सका। सैंकडो वर्ष बाद ये लोग उसी आनन्द और तन्मयता के साथ पढ़े जाएगे, मगर उन्हें जीवित देखने का सौभाग्य तो कुछ ही को मिलेगा।

यतीन सोचने लगा कि क्या भवभूति, जयदेव, कालिदास, विद्यापति, सूरदास और तुलसीदास भी उसी ही की तरह हाड़-मांस के बने काम, क्रोध, मोह और लोभ में फंसे इंसान थे? क्या उन्हें भी सर्दी और गर्मी लगती थी और क्या वे भी उस ही की भांति खाना खाते थे और कपड़े पहनते थे? क्या इतने महान् कलाकार भी व्यक्तिगत जीवन में अन्त में चलकर मात्र एक आदमी ही थे?

इन्ही प्रश्नो को सोचता-विचारता वह निरालाजी के द्वार तक पहुंच गया।

यतीन ने देखा कि एक बैठक है, जिसके दरवाजे खुले हैं। बैठक भी कोई ज्यादा बड़ी नहीं है। एक तरफ दीवार में निकली अलमारी के नीचे एक नंगा तख्त पड़ा है, जिस पर एक फटा पुराना लिहाफ है और 'कम्प्लीट वर्क्स आफ शेक्सपीयर' की जिल्द रखी है। तख्त के नीचे एक बोरिया बिछा है और अलमारी में दवाइयों की शीशी वगैरह रखी हैं।

एक विशालकाय दाढ़ीवाला आदमी है, जो इस बैठक में इस तरह घूम रहा है, जैसे कि पिंजरे में शेर घूमता है। वह घूमता जाता है और बड़बड़ाता जाता है। कभी अंग्रेजी में बड़बड़ाता है, तो कभी हिन्दी में। उस शेर जैसे घूमने इंसान ने यतीन की तरफ नहीं देखा, मगर यतीन पहिचान गया कि यही पंडित सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला हैं। यह ही हैं वह ओजस्वी महाप्राण कवि, जिन्हें जब तक संसार में हिन्दी बोली जाती है, तब तक बराबर याद किया जाएगा। यही हैं वह कवि जिन्होंने 'स्वर्ण शस्य अंचल धरती का लहराया, सखि वसंत आया' जैसी कविताएं लिखी हैं।

इतना सौंदर्य प्रेमी कलाकार और इस वेश में ? जिस्म पर एक मैली फटी लुंगी और बस। यतीन देखता रहा और कवि की एक-एक पंक्ति उसकी स्मृति पर हथौड़े की चोट करती रही। 'मरा हूं हजार मरण, पाई तब शरण' शरण या 'ठाठ का जीवन का वही जो ढह गया है, मैं अलक्षित हूं यही कवि गया है।'

कहां बंगले में रहने वाले सुसंस्कृत पन्तजी और कहां यह अक्खड़ निरीह और फटेहाल निरालाजी ! दोनों के काव्य का अंतर उनके जीवन में भी परिलक्षित होता था।

यतीन ने प्रणाम किया और चला आया। प्रणाम का भी कोई उत्तर उसे नहीं मिला।

निरालाजी को देखकर यतीन को तुष्टि नहीं हुई। वह गरीब व्यक्ति उसे अपने अभावपूर्ण और दुःखी जीवन से एकदम जुड़ा हुआ लगा। उसे इच्छा हुई कि वह उनसे मिले और लगातार मिले। जहां पन्तजी का विनयपूर्ण सुसंस्कृत व्यवहार एक ऐसी अदृश्य दीवार का काम करता था कि कोई भी उनके भीतर तक न झांक सके, वहीं निराला जी का अहंकार एक ऐसा खुला द्वार था, जिसमें से होकर कोई भी उनकी आत्मा को छू सकता था।

... ने हिम्मत की और प्रायः दारागंज जाता रहा। अब

भी जाता, तो वह महाकवि के चरण छूता और उनके कहने पर बोरिए पर बैठ जाता। निराला जी प्रायः बड़बड़ाते रहते मगर यदि कभी मूड हुआ, तो उनसे भी बातचीत कर लेते हैं।

अचानक एक दिन जब उन्हें पता लगा कि यतीन संस्कृत जानता है और वह भी उन्हीं की तरह 'रघुवंश' को कालिदास की सर्वश्रेष्ठ कृति मानता है, तब वह बड़े प्रसन्न हुए। उन्होंने यतीन से रघुवंश के कुछ अंश सुनाने को भी कहा। यतीन ने 'अजविलाप' से 'गृहिणी सचिवः सखी मिथः', और उसके अगले सर्ग से 'त्यजत् मानमलम् बत विग्रहै' वाले श्लोक सुनाए, तो निराला जी एकदम मूड में आ गए और 'ऋतु संहार' के पद के बाद पद सुनाने लगे।

उस दिन उन्होंने यतीन को शर्बत पिलाया और आशीर्वाद दिया।

जब तक यतीन प्रयाग रहा, उनके दर्शनों को जाता रहा। निराला जी कभी पहिचानते और कभी नहीं पहिचानते। वह अंग्रेजी बोलते जाते और कमरे में चक्कर लगाते रहते। देखने में वह एक फकीर या ऋषि लगते थे। चक्कर लगाते-लगाते जब थक जाते, तो शेक्सपीयर के नाटक पढ़ना शुरू कर देते। बाद में चलकर वह उसी पोथी का तकिया बनाकर तख्त पर लेट जाते।

उर्दू के प्रख्यात कवि फिराक गोरखपुरी से मुलाकात करने में कोई कठिनाई नहीं हुई। इत्तिफाक की बात कि यतीन की अंग्रेजी का पीरियड वही लेते थे। काफी दिलचस्प इन्सान थे। क्लास में पहिले ही दिन बता दिया कि मेरी क्लास में लड़कियां नहीं होंगी, मेरे क्लास में हाजिरी नहीं ली जाएगी और तीसरी बात यह कि मेरे क्लास में पाठ्यक्रम का कोई जिक्र नहीं किया जाएगा।

क्लास क्या होती थी, एक महफिल होती थी, जिसमें फिराक साहब कभी चासर को डिस्कस करते थे, तो कभी बाय-

रन को। अंग्रेजी साहित्य का उनको काफी परिचय था, ह

वह खुद उर्दू में लिखते थे।

फिराक साहब का असली हुलिया शाम को उनके बंग

खुलता था। वह जमकर मदिरापान करते थे, तख्त प

तकिया लगाकर बैठते थे और दुनिया के सारे विषयों पर

करते थे। हिन्दी और हिन्दी के लेखकों की बुराई करना

विशेष पसन्द था। हालांकि कभी-कभी जो तर्क वे देते

काफी सही मालूम पड़ते थे। पन्त और निराला को वे

कवि मानते थे, पर प्रसाद को केवल पद्यकार ही कहते थे,

नहीं। हिन्दी का विरोध करने के अतिरिक्त जिस दूसरे का

उनकी विशेष रुचि होती थी वह था आत्म प्रचार व

प्रशंसा।

बहरहाल शाम की बैठक काफी रंगीन और पुरलुत्फ

थी। न जाने किस-किस शायर का कलाम सुनने को मिलता

और न जाने कितनी गन्दी गालियों में किसे-किसे पुकारा

था। पायजामा उनका प्रायः बगैर नाड़े के ही रहता था

कभी-कभी नशे में वह बाथरूम न जाकर बाहर बरामदे के

ही लघुशंका कर लिया करते थे। हाजिर जवाबी और म

करने में उनसे शायद ही कोई जीत सकता था। पान खाते

और सिगरेट बराबर पीते रहते थे।

उनकी बैठक में एक खास तौर का माहौल रहता था

और अगह मिलना मुश्किल था। मतीन प्रायः फिराक साह

पड़ा जाता और उस दुनिया को देखता। उर्दू साथ के

मतीन के हृदय में जो सम्मान था वह बढ़ा जाकर और

पक्का हो गया।

जमींदारों से लेकर मामूली लागवान तक नौटंकी देखने आते थे।

यतीन को इन नौटंकियों का बहुत शौक था और किसी-न-किसी तरह वह देख देख ही लिया करता था।

एक दिन देखे हुए ड्रामे का सरूर कई दिन बाद आंखों से उतरता था। नौटंकियों के पास कई तरह के पर्दे होते थे, जिनमें से किसी में बन का दृश्य होता था तो किसी में बाजार का। स्थिति के अनुसार पर्दे बदले जाते थे।

सीता बनवास के सेप में स्त्रियां ही क्या, पुरुषों की आंखों में आसू आ गए थे।

वसन्त के अवसर पर सारा जंगल फूलों से दहक उठता था। लगता था, जैसे किसी ने वनों में सहसा आग लगा दी हो।

होली के मौके पर चौपियां निकला करती थीं। चौपियां उन टोलियों को कहते थे, जो गांव के लोगों की होती थीं और जो अपने-अपने जमींदार के घरों पर आकर अपना नाच दिखाया करती थीं।

आम तौर से लोगों के कपड़े साफ और पगड़ियां पीली होती थीं। वे लोग एक गोल चक्कर बनाकर नाचते थे और उनके बीच में ढोल बजाने वाला ढोल बजाता रहता था।

राजा कारक की होली, कंवर निहालदे की होली और सती सुलोचना की होली बहुत लोकप्रिय होती थीं।

इन होलियों को लिखने वाले कवि ग्रामीण ही होते थे, जिनमें भटीपुर के घासीराम और दबथुआ के कालीचरण बड़े मशहूर थे।

नाच के बाद इन लोगों को एक गुड़ की भेली तथा बाकी इनाम वगैरह दिया जाता था।

यतीन रात-भर चांदनी में खड़ा हुआ इन लोक गीतों को सुनता रहता था। ग्राम गीतों का प्रेम उसे तभी से पड़ा।

कस्बे से कोई एक मील दूर बारादरी का मेला भरता
यह भी एक देहाती मेला था, जो बाकी मेलों की भाँति धूल
और भीड़भाड़ से भरा हुआ रहता था।

इसी मेले में यतीन ने चौधरी ज्वाहरसिंह की नई
पत्नी को पहली बार देखा था और उसी दिन पता लगा था
स्त्री और पुरुष में अन्तर होता है।

एकदम तराशे गए नाक-नक्श, हल्का साँवला रंग, मं
कद, सुगठित शरीर और बड़ी-बड़ी आँखें।

वे आँखें जब यतीन पर पड़ीं तो उसे लगा, जैसे कि वे उ
जिस्म से चिपक गईं।

पहली बार उसे पता लगा कि वह अब बच्चा नहीं
बल्कि धीरे-धीरे यौवन को प्राप्त हो रहा है। यौवन या सं
के किसी भी आनन्द का प्रथम अनुभव अमर होता है।

यतीन की आँखों से भी उस युवती की वह छवि कभी
उतरी। इतनी अल्हड़ और शोख युवती उसे वास्तविक जीवन
फिर कभी देखने को नहीं मिली।

## दस

ससुराल से प्रेम अपने पति के साथ लाहौर चली गई।

उसके पति का किसी मोटर की फर्म में कुछ हिस्सा था
वे प्रायः लाहौर जाते रहते थे। लाहौर में आकर प्रेम को टा
फाइड हो गया। मगर पति की सेवा और उचित इलाज होने
उसकी जान बच गई।

यतीन को जब पहला वजीफा मिला, तो उसने पहली बा

प्रेम को पद लिखा। वजीफे के दस रुपये के नोट को वह इस तरह देखता रहा, जैसे कि वह कोहेनूर हीरा हो। उस नोट को उसने अपनी अम्मा तक को नहीं दिया। छोटी बहिन के लिए जलेबियां लाया और बाकी पैसे एक संदूकची में ताला लगाकर बन्द कर दिए। कुंजी अपने ही पास रखी।

हाई स्कूल में केवल दस रुपया प्रतिमाह से काम चलना कुछ कठिन था और घर की हालत भी खस्ता ही चल रही थी। नतीजा यह रहा कि उसने कुछ ट्यूशन पकड़ लिए। कोई ट्यूशन चार आने प्रतिमाह था, तो कोई एक रुपया प्रतिमाह पर। एक जागीरदार का लड़का था जो दस रुपये प्रतिमाह देता था।

अब यतीन ने अपनी अम्मां को भी रुपये देने शुरू कर दिए। उसकी अम्मा ने कुछ छात्र भी मकान में किराये पर रख लिए, जिनका खाना बनाना व बर्तन मांजना भी वह या यतीन की छोटी बहिन करती थी।

कपड़ों की यतीन के पास बेहद कमी थी। जाड़ों के लिए कोट या स्वेटर नहीं था। उसकी मां मोटे खद्दर की कमीज सिल-कर उसे खाकी रंग में रंग दिया करती थी। खाकी कमीज और सफेद पायजामा, बस यही उसकी पोशाक थी। कड़ाके की सर्दी में भी वह इन्हीं कपड़ों में रहता था।

रात को बिस्तर की जगह नीचे घास या धान की पुआल होती थी और ऊपर को फटी-पुरानी रजाई। रजाई भी घर में कम थीं और इसी कारण उसकी मां और छोटी बहन साथ-साथ सोया करती थी।

उन दिनों स्कूल में एक अमीर व्यक्ति बिना वेतन लिए पढ़ाने आया करते थे। उन्हें साहित्य में रुचि थी और उन्होंने कुछ एकांकी नाटक भी लिखे थे। नाम था नन्दकिशोर जैन।

यतीन के साथ वे प्रायः संस्कृत साहित्य के बारे में चर्चा किया करते थे। बदले में वह यतीन को उर्दू की नज़्में और

कस्बे से कोई एक मील दूर मारखड़ी का मेला लगता था। यह भी एक देहाती मेला था, जो बाकी मेलों की भांति धूल और भीड़भाड़ से भरा हुआ रहता था।

इसी मेले में यतीन ने चौधरी प्यारेसिंह की बहू पत्नी को पहली बार देखा था और उसी दिन पता लगा था कि स्त्री और पुरुष में अन्तर होता है।

एकदम तराशे गए नाक-नक्श, हल्का सांवला रंग, ऊँचा कद, मांसल शरीर और बड़ी-बड़ी आँखें।

ये आँखें जब यतीन पर पड़ी तो उसे लगा, जैसे कि वे उसके जिस्म से चिपक गईं।

पहली बार उसे पता लगा कि वह अब बच्चा नहीं रहा, बल्कि धीरे-धीरे यौवन को प्राप्त हो रहा है। यौवन या संसार के किसी भी आनन्द का प्रथम अनुभव अमर होता है।

यतीन की आंखों से भी उस युवती की वह छवि कभी नहीं उतरी। इतनी अल्हड़ और शोख युवती उसे वास्तविक जीवन में फिर कभी देखने को नहीं मिली।

## दस

ससुराल से प्रेम अपने पति के साथ लाहौर चली गई।

उसके पति का किसी मोटर की फर्म में कुछ हिस्सा था और प्रायः लाहौर जाते रहते थे। लाहौर में आकर प्रेम को टाय-फाइड हो गया। मगर पति की सेवा और उचित इलाज होने से उसकी जान बच गई।

यतीन को जब पहला वजीफा मिला, तो उसने पहली बार

प्रेम को पत्र लिखा। वजीफे के दस रुपये के नोट को वह इस तरह देखता रहा, जैसे कि वह कोहेनूर हीरा हो। उस नोट को उसने अपनी अम्मां तक को नहीं दिया। छोटी बहिन के लिए जलेबियां लाया और बाकी पैसे एक संदूकची में ताला लगाकर बन्द कर दिए। कुंजी अपने ही पास रखी।

हाई स्कूल में केवल दस रुपया प्रतिमाह से काम चलना कुछ कठिन था और घर की हालत भी खस्ता ही चल रही थी। नतीजा यह रहा कि उसने कुछ ट्यूशन पकड़ लिए। कोई ट्यूशन चार आने प्रतिमाह था, तो कोई एक रुपया प्रतिमाह पर। एक जागीरदार का लड़का था जो दस रुपये प्रतिमाह देता था।

अब यतीन ने अपनी अम्मां को भी रुपये देने शुरू कर दिए। उसकी अम्मां ने कुछ छात्र भी मकान में किराये पर रख लिए, जिनका खाना बनाना व बर्तन मांजना भी वह या यतीन की छोटी बहिन करती थी।

कपड़ों की यतीन के पास बेहद कमी थी। जाड़ों के लिए कोट या स्वेटर नहीं था। उसकी मां मोटे खद्दर की कमीज सिलकर उसे खाकी रंग में रंग दिया करती थीं। खाकी कमीज और सफेद पायजामा, बस यही उसकी पोशाक थी। कड़ाके की सर्दी में भी वह इन्हीं कपड़ों में रहता था।

रात को बिस्तर की जगह नीचे घास या धान की पुआल होती थी और ऊपर को फटी-पुरानी रजाई। रजाई भी घर में कम थीं और इसी कारण उसकी मां और छोटी बहन साथ-साथ सोया करती थी।

उन दिनों स्कूल में एक अमीर व्यक्ति बिना वेतन लिए पढ़ाने आया करते थे। उन्हें साहित्य में रुचि थी और उन्होंने कुछ एकांकी नाटक भी लिखे थे। नाम था चन्द्रकिशोर जैन।

यतीन के साथ वे प्रायः संस्कृत साहित्य के बारे में चर्चा किया करते थे। बदले में वह यतीन को उर्दू की गजलें और

सूत कातती रहती। चांदनी रात में यतीन आंगन में उसके
। बैठा रहता और गप मारता रहता।

धीरे-धीरे गर्मी की छुट्टियां खत्म हो गईं और यतीन ने
लेज में दाखिले लायक पैसे जोड़ लिए। जुलाई के प्रथम
ताह में वह अपने पिता के साथ देहरादून गया, क्योंकि वहां
के एक मित्र रहते थे। मित्र ने बातें तो बड़ी आत्मीयता के
थ कीं, मगर यतीन की मदद करने में अपनी असमर्थता प्रकट
।

अगले दिन की गाड़ी से यतीन घर लौट आया और एक
र कस्बे की ओर भागा, जहां एक इंटर कालिज था। वह
स्बा यतीन की बड़ी बहिन के घर के पास पड़ता था। उस
लिज के प्रिंसिपल काफी शराब पीते थे और वैसे भी काफी
दाचारी थे। मगर जब उन्होंने यतीन के नम्बर और उसकी
हाय अवस्था देखी, तो द्रवीभूत हो गए। यतीन का दाखला
गया, फीस माफ हो गई और वजीफा भी हो गया।

बड़ी बहिन के पति की कृपा से एक सजातीय सज्जन के
पर ठहरने का प्रबन्ध भी हो गया। यतीन की पढ़ाई शुरू
गई।

यतीन कभी-कभी अपनी बहिन के यहां भी जाता रहता, जो
कभी दाल, कभी आटा और कभी गुड़ दे दिया करती।
बहिन के घर जाने के लिए रेल की पटरी के साथ-साथ
ही जाती थी। यतीन के चप्पल पुराने थे और इसी कारण
पनी जेब में कुछ छोटी-छोटी कीलें हमेशा रखता था, जहां
चप्पल ने जवाब दिया, वहीं उसे रेल की पटरी पर रखकर
पटरी के पास बिछे पत्थर के टुकड़ों से एक कील ठोंक दी।
हिन के घर और लोग तो थे ही; पर दो व्यक्ति यतीन
प रूप से प्रभावित करते थे। एक थे भगत जी और
एक कवि जी।

भर सूत कातती रहती। चांदनी रात में यतीन आंगन में उसके पास बैठा रहता और गप मारता रहता।

धीरे-धीरे गर्मी की छुट्टियां खत्म हो गई और यतीन ने कालेज में दाखिले-लायक पैसे जोड़ लिए। जुलाई के प्रथम सप्ताह में वह अपने पिता के साथ देहरादून गया, क्योंकि वहां उनके एक मित्र रहते थे। मित्र ने बातें तो बड़ी शालीनता के साथ कीं, मगर यतीन की मदद करने में अपनी असमर्थता प्रकट की।

अगले दिन की गाड़ी में यतीन घर लौट आया और एक और कस्बे की ओर भागा, जहां एक इंटर कालिज था। यह कस्बा यतीन की बड़ी बहिन के घर के पास पड़ता था। उस कालेज के प्रिंसिपल काफी शराब पीते थे और वैसे भी काफी दुराचारी थे। मगर जब उन्होंने यतीन के नम्बर और उसकी असहाय अवस्था देखी, तो द्रवीभूत हो गए। यतीन का दाखला हो गया, फीस माफ हो गई और वजीफा भी हो गया।

बड़ी बहिन के पति की कृपा से एक सजातीय सज्जन के घर पर ठहरने का प्रबन्ध भी हो गया। यतीन की पढ़ाई शुरू हो गई।

यतीन कभी-कभी अपनी बहिन के यहां भी जाता रहता, जो उसे कभी दाल, कभी आटा और कभी गुड़ दे दिया करती।

बहिन के घर जाने के लिए रेल की पटरी के साथ-साथ पगडंडी जाती थी। यतीन के चप्पल पुराने थे और इसी कारण वह अपनी जेब में कुछ छोटी-छोटी कीलें हमेशा रखता था, जहां कहीं चप्पल ने जवाब दिया, वहीं उसे रेल की पटरी पर रखा और पटरी के पास बिछे पत्थर के टुकड़ों से एक कील ठोंक दी।

बहिन के घर और लोग तो थे ही; पर दो व्यक्ति यतीन को विशेष रूप से प्रभावित करते थे। एक थे भगत जी और दूसरे थे एक कवि जी। भगत जी अपना ज्यादा समय पूजा-पाठ

और धर्मपत्नी में रमाते थे और कवि जी जो थे, उन्हें नाना प्रकार की किस्से आल्हे की बावन लड़ाइयां जुबानी याद थीं। स्वर उनका मधुर था और आल्हा पढ़ते-पढ़ते वह जोश में आ जाते थे। थोड़ी देर के बाद लोग अपनी चिन्ताएं भूल जाते थे और राय पिथौरा की लड़ाई, माहिल की मक्कारी और मल-खान की बहादुरी में खो जाते थे।

वर्षा की ऋतु में लोग चौपाल में घुस जाते-हुक्का पीते रहते और कवि जी का आल्हा सुनते रहते।

उनका आल्हा सुनने के लिए यतीन कभी-कभी तो वर्षा के दिनों में भी बहन के साथ चला जाता। रास्ते-भर आकाश में घटाएं उमड़ती रहतीं और बिजली के साथ-साथ बादल गड़-गड़ाते रहते। चारों ओर धान के हरे-हरे खेत झूमते रहते।

## बारह

जिन सज्जन के यहां यतीन रहता था मिडिल स्कूल के अव-काश प्राप्त हैड मास्टर थे। लोग उन्हें 'गर्म' साहब कहकर पुकार करते थे, क्योंकि उन्हें गुस्सा बहुत आता था। चूंकि उन्हें घूमने-फिरने का बहुत शौक था, लोग उन्हें 'टूरी साहब' भी कहा करते थे। उनके पांच पुत्र थे।

बड़ा लड़का, जो लगभग पचास वर्ष की आयु का था, नौकरी छोड़कर घर आ गया था और रोज नई-नई योजनाएं बनाने के अतिरिक्त कुछ नहीं करता था। योजनाएं वह ऐसी बनाता था कि उन्हें सुनकर हंसी आती थी। एक बार उन्होंने गमलों में लौकी की बेल रोपी, तो सोचने लगे कि लौकियों को

लंदन के बाजार तक कैसे पहुंचाया जाए।

उनकी पत्नी बड़ी चतुर और तेज थी, मगर यतीन के प्रति बड़ा दयापूर्ण व्यवहार करती थीं।

दूसरा लड़का एकदम बनिया था। सूद पर पैसा देता था, जमीनें खरीदता था और एक-एक पैसे का हिसाब रखता था।

तीसरा पुत्र कहीं संस्कृत का अध्यापक था और काफी सज्जन था।

चौथा पुत्र नायब तहसीलदार था और रौब से रहता था।

पांचवां पुत्र पढ़ता था।

मास्टर साहब बहुत मजाकिया किस्म के आदमी थे और यतीन को बात-बात पर हंसाते रहते थे। उनकी आयु कोई पचहत्तर वर्ष की थी, मगर फिर भी वे रोज पांच बजे ठंडे पानी से स्नान करते थे। उन्हें यतीन से बड़ा स्नेह था, पर चूंकि वह खुद अपने लड़कों के सहारे जीते थे। वह उसकी और कोई मदद कर नहीं सकते थे। उनकी बैठक में यतीन रहता था और मेहमानों के आने-जाने से पढ़ने में काफी दखल होता था।

मास्टर साहब के एक रिश्तेदार थे—हरकिशन बाबू, जो बहुत ही शालीन सज्जन और पढ़े-लिखे व्यक्ति थे। यतीन को उन्होंने बर्नार्ड शॉ की किताबें पढ़ने को दीं और साहित्य के बारे में न जाने कितना बतलाया।

हरकिशन बहुत अमीर बाप के बेटे थे और उनकी मुकदमेबाजी उस समय इंग्लैंड की प्रिवी कौंसिल में चल रही थी। उन्होंने यतीन के सामने शालीनता, सौजन्य, उदारता और सभ्य होने का जो नमूना रखा, उसे यतीन कभी नहीं भूल सका। यतीन उन्हें हृदय से प्रेम करता था, जो बाद में चलकर आजन्म मैत्री में बदल गया।

यतीन मास्टर साहब के साथ ईश्वर और भाग्य के बारे में बातें किया करता था। यतीन नास्तिक-सा था और मास्टर

साहब आस्तिक थे। उन्होंने विभिन्न धर्मों और दर्शनों का काफी अध्ययन किया था।

वह कहा करते थे कि जितने भी धर्म या दर्शन हैं उनका कारण यह है कि सृष्टि के रहस्य को कोई नहीं जानता। कल का किसी को पता नहीं और इसी बात के आधार पर ज्योतिष व हस्तरेखा विज्ञान टिका है। जितने भी दर्शन हैं, उनमें गीता का दर्शन सर्वश्रेष्ठ है। काम करो और फल की चिन्ता छोड़ दो, क्योंकि वह वैसे भी तुम्हारे हाथ में नहीं है। लोग जो अमीर हैं, वे उनके पूर्वजन्मों के कर्मों का फल है।

अगर मतीन कहता कि यदि कोई रेल उलटती है या किसी क्षेत्र में विशेष महामारी फैलती है, तो क्या वहां रहने वाले सभी पूर्वजन्म के पापी हैं?

इस तर्क पर मास्टर साहब चुप हो जाते और कहते कि गीता में भी संशय है; पर फिर भी यह बाकी दर्शनों से ज्यादा तार्किक व विश्वसनीय है।

इसके अलावा यह भी कहते कि तर्क से सारा काम नहीं चलता। तर्क के ऊपर श्रद्धा है, जिसके बिना जीवन काटना दूभर हो जाए। आखिर जब सृष्टि है, तो इसका संचालक भी कोई-न-कोई जरूर होगा। बस वही ईश्वर है। उसकी इच्छा के बिना पत्ता भी नहीं हिलता।

## तेरह

यतीन अक्सर खाना एक ब्राह्मणी के यहां खाता था। वह विधवा थी। दो लड़के थे। एक का नाम था ज्योति और दूसरे

का नाम था बाळ। बाळ बड़ा था और जुआ खेलता था। ज्योति छोटा था और कहीं छोटा-मोटा काम करता था और बाकी वक्त में खुद भी पढ़ता था।

घर की हालत बहुत खराब थी। कई-कई दिन के फाके चलते थे।

यतीन अपना आटा और दाल लाकर ब्राह्मणी को दे देता था और पांच रुपया प्रतिमाह ऊपर से देता था। ब्राह्मणी बेचारी उसी आटे दाल में से अपना पेट भी पालती थी।

कई बार तो यतीन जानबूझकर कम खाए उठ जाता था, ताकि वह बूढ़ी विधवा ब्राह्मणी भरपेट भोजन कर सके।

जिन दिनों दाल नहीं होती थी, उन दिनों यतीन को नमक की रोटी खानी पड़ती थी। जब आटा भी खत्म हो जाता था, तब कभी-कभी भूखा भी रहना पड़ता था।

वह निरीह ब्राह्मणी उससे बड़ा प्यार करती थी। उसके दोनों लड़के किसी दूसरे कस्बे में रहते थे और मां की मदद के लिए कभी-कभी कुछ भेज देते थे।

नालायक बच्चों के होते हुए भी वह बेचारी उनसे बेहद प्रेम करती थी और कहा करती थी कि मेरी तो सारी दुनिया यही दो लड़के हैं। ये न हों तो दुनियां से मेरा क्या वास्ता?

उसकी स्थिति को देखकर यतीन को अपनी मां की याद आने लगती और उसकी आंखें भर आतीं।

कालिज में पढ़ने के बाद जो वक्त बचता था उसमें यतीन या तो मास्टर साहब से उर्दू की शेरो शायरी सुनता था या फिर हरकिशन बाबू से अंग्रेजी साहित्य की जानकारी प्राप्त करता था।

धीरे-धीरे उसकी इच्छा हुई कि बड़ा होकर वह भी कुछ लिखे। कालेज की लाइब्रेरी काफी अमीर थी और यतीन ने धीरे-धीरे उसके सारे उपन्यास और काव्यग्रन्थ पढ़ लिए। पंत और

निराला की कविताएं उसे अभिभूत कर देती थीं।

विदेशी लेखकों में उसे तुर्गनेव, चेखव, दोस्तोवेस्की, मोपासा, ड्यूमा वगैरह सभी बड़े कथाकार प्रभावित करते थे; पर सबसे ज्यादा असर जिन्होंने डाला, वे पुस्तकें थीं, गाल्सवर्दी की कृतियां और तालस्ताय की कहानियां। बर्नार्ड शा का व्यंग्य, वुडहाउस का हास्य और भवभूति की करुणा उसे बेकाबू कर देती थी।

दुखांत पुस्तकें पढ़कर वह प्रायः रो पड़ता था। शेक्सपीयर के दुखांत नाटक उसे बहुत प्यारे लगते थे। यतीन का विचार था कि जैसे कवियों में कालिदास सर्वश्रेष्ठ हैं, वैसे ही नाटक लिखने के क्षेत्र में शेक्सपीयर से कोई टक्कर नहीं ले सकता।

दो वर्ष बीतते कितने दिन लगते हैं। यतीन इंटरमीडिएट की परीक्षा में बैठा और प्रथम श्रेणी में पास हुआ। सारे संयुक्त प्रान्त में उसका सातवां स्थान था और इस कारण आगे वजीफा मिलने की पूरी आशा थी।

हरकिशन जी ने सलाह दी कि प्रयाग विश्वविद्यालय चले जाओ। सारा भविष्य सुरक्षित हो जाएगा।

यही बात कालेज के प्रिंसिपल ने भी कही। उन्होंने दो पत्र अपने मित्रों के नाम भी लिखकर दे दिए, जिनमें से एक लंदन में उनके सहपाठी थे।

हैडमास्टर साहब ने भी अपने जिले के एक ऐसे बैरिस्टर के नाम चिट्ठी लिखी, जो प्रयाग में प्रैक्टिस करते थे।

छुट्टियों में सूत कातने और ट्यूशन करने से लगभग एक सौ पचास रुपये इकट्ठे हो पाए। ये रुपये, एक जोड़ी कपड़े, एक लुंगी और एक थैला, बस इतनी पूंजी के बल पर यतीन प्रयाग जाने को तैयार हो गया।

जिस दिन वह स्टेशन गया, मास्टर साहब भी उसे छोड़ने गए। हरकिशन जी ने एक टिकट खरीद दिया और भविष्य में भी

जब जरूरत हो, तब पत्र लिखने को कहा।

यतीन को विश्वास ही नहीं हो पा रहा था कि संसार में अच्छे लोगों की संख्या बुरे लोगों से कहीं ज्यादा है। धर्म के खंभे न होते, तो यह आकाश कभी का गिर पड़ता।

यतीन ने मास्टर साहब के चरण छुए, उनके दिए परांठे थैले में रखे और डिब्बे में बैठ गया। थोड़ी देर बाद गार्ड साहब ने हरी बत्ती दिखाई और दो सीटियां देने के बाद रेलगाड़ी जो थी वह चल पड़ी।

यतीन का सारा पुराना जीवन, बचपन, सुख-दुःख, संगी-साथी, मां-बहिन पीछे छूट गए। अब उसके सामने केवल भविष्य था जिसका उसे निर्माण करना था।

गाड़ी धीरे-धीरे तेज हो गई और वनों के बीच से होती हुई नदी-नाले पार करती आगे बढ़ती गई।

बाहर

कुछ दिनों घर रहने के बाद यतीन दिल्ली चला गया और वहां कोई और मित्र वगैरह न होने के कारण अपनी भावी ससु-राल में ही ठहरा। छोटी मामी और छोटे मामा साहब उससे एकदम घुलमिल गए और यतीन का मन वहां खूब रम गया।

आगे खपरैल के बरामदों वाली लंबी-लंबी बैरकें थीं, जिनमें अनेक क्वार्टर थे। सामने लान था, जिस पर बच्चे क्रिकेट खेलते, लड़ते-झगड़ते या पतंगबाजी करते थे।

इसी तरह के एक क्वार्टर में यतीन के भावी श्वसुर अपने परिवार के साथ रहते थे। रहन-सहन मध्यम वर्ग का था। पर्दे का पूरा इन्तजाम था और यतीन अपनी होने वाली पत्नी से खुले आम नहीं मिल सकता था।

उसके श्वसुर एक किफायती, ईमानदार, दुनियादार और दयालु प्रकृति के पुरुष थे और उनकी दयालुता के कारण ही उनके दूर के तीन सम्बन्धी खपरैल में रहते थे, जिसके आगे जाफरी लगाकर एक कमरे का रूप दे दिया गया था।

इन तीन प्राणियों में से एक साहब कवि थे और 'हैरत' उप-नाम से उर्दू में शायरी लिखते थे। स्वभाव से एकदम संत, फक्कड़ और मजाकपसन्द। उनकी और यतीन की खूब गाढ़ी छनी।

यतीन के श्वसुर के एक छोटे भाई थे, जो कहीं क्लर्क थे और पुरानी दिल्ली में कहीं रहते थे। एकदम छः फुट लम्बे और शरारती। वह कभी नार्मल नहीं रहते थे। या तो ज्वालामुखी की भांति सब पर बिखरते, सबसे झगड़ा करते और यतीन की सास के ऊपर आग बरसाते या फिर इतना हंसते हुए आते कि सारे घर का माहौल ही बदल जाता। यतीन ने महसूस किया कि जो व्यक्ति दुखी होने की सामर्थ्य नहीं रखता, वह शायद सच्चे सुख का एहसास भी कभी नहीं कर सकता।

चारों तरफ फैली हुई बैरकें किसी मोहल्ले का वातावरण बनाती थी। हर घर को दूसरे घरों का हाल मालूम रहता था।

पास के एक क्वार्टर का सोलह साल का एक लड़का बराबर में रहने वाली एक पैंतीस वर्ष की महिला को प्रेम-पत्र लिखता रहता था, जिसका पता सबको अच्छी तरह था।

इसी तरह पास के एक क्वार्टर में एक लड़की रहती थी जिसकी शादी की चिन्ता से उसके मां-बाप काफी चिन्तित रहते थे। उसके बहुत भाई-बहिन थे और वह उनमें सबसे बड़ी थी। उसकी मां उसकी शादी न कर सकने की निराशा में उस लड़की पर गुस्सा करती और गालियां देती, जबकि लड़की का कसूर सिर्फ इतना भर था कि वह बिना किसी कोशिश के जवान होती जा रही थी। जैसे कि यतीन को पता लगा, उस लड़की ने कुछ वर्ष बाद आत्महत्या कर ली। खबर सुनकर यतीन को अपने कस्बे की याद आ गई, जहां दहेज कम लाने के अपराध पर ससुराल वालों ने अपनी पुत्रवधू को मिट्टी का तेल छिड़ककर जला दिया था और बाद में उसे आत्महत्या का दोषी ठहराया था।

यतीन को हमेशा से विश्वास था कि मध्यमवर्गीय समाज से ज्यादा घिनौनी चीज दुनिया में कोई नहीं है और मध्यमवर्गीय परिवार की कन्या के युवा होने के बराबर और कोई पाप नहीं है। समाज सब कुछ बरदाश्त कर सकता, पर एक निरीह लड़की

के यौवन को वह नहीं सह सकता।

यतीन की भावी पत्नी के दादा गांव में रहते थे और खेती संभालते थे। कभी उनके पास सात गांव थे और उनके कुछ भाइयों के यहां अभी तक सवारी के लिए हाथी रखा जाता था। जमींदारी निकल जाने के बाद कुछ खेती की धरती बची और कुछ बागात बचे। यह बुजुर्गवार जब कभी गांव से दिल्ली आ जाते थे, तभी घर में सबकी बोलती बंद हो जाती थी। बड़ा लंबा और स्वस्थ शरीर, काली अचकन और सफेद अलीगढ़ी कट का पायजामा और सफेद गांधी टोपी। शतरंज, हुक्का, डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के इलेक्शन और मुकद्दमेबाजी के शौकी। बोल-चाल में फारसी के शब्दों का प्रयोग काफी करते थे।

यतीन के रहने के दौरान एक बार दिल्ली आए और यतीन को काफी हिकारत की निगाहों से देखा। कोई खास बोलचाल नहीं हुई। पैदल चलने के बेहद शौकीन थे और दिल्ली में अगर किसी मिनिस्टर वगैरह से मिलना होता था, तो बराबर पैदल ही चलते थे।

आदमी सिद्धान्तवादी थे। एक बार एक गरीब आदमी से मुकद्दमा छिड़ गया और बात हाईकोर्ट तक पहुंची। उसके इलाहाबाद जाने का पूरा खर्चा उन्होंने खुद ही उठाया। दोनों लोग अपने-अपने कागजात निकाले एक ही डिब्बे से इलाहाबाद गए। गाड़ी में यदि भीड़ कम हो गई, तो झोड़ी निकाल ली और शतरंज जमा ली। दादाजी की चार शादियां हुई थीं और चालीस वर्ष की आयु में वह अन्तिम बार विधुर हुए थे। उसके बाद उन्होंने शादी नहीं की।

यतीन की होने वाली पत्नी का नाम शोभा था, पर प्यार में सब लोग उसे शुभा कहते थे। गौरवर्ण, लम्बाकद, गोल चेहरा, और घने केश। वह पर्दे में रहती थी और यतीन के सामने नहीं आती थी। उसके शरीर का कोई अंग अगर दीख जाता था, तो

यतीन के श्वसुर के एक छोटे भाई थे, जो कहीं का
और पुरानी दिल्ली में कहीं रहते थे। एकदम छः फुट लम्बे
शरारती। वह कभी नॉर्मल नहीं रहते थे। या तो ज्वाला
की भांति सब पर बिखरते, सबसे झगड़ा करते और यतीन
सास के ऊपर आग बरसाते या फिर इतना हँसते हुए आते कि
सारे घर का माहौल ही बदल जाता। यतीन ने महसूस किया
कि जो व्यक्ति दुखी होने की सामर्थ्य नहीं रखता, वह इन
सच्चे सुख का एहसास भी कभी नहीं कर सकता।

चारों तरफ फैली हुई बैरकें किसी मोहल्ले का आभास
बनाती थीं। हर घर को दूसरे घरों का हाल मालूम रहता था।
पास के एक क्वार्टर का सोलह साल का एक लड़का बगल
में रहने वाली एक पैंतीस वर्ष की महिला को प्रेम-पत्र लिखा
रहता था, जिसका पता सबको अच्छी तरह था।

इसी तरह पास के एक क्वार्टर में एक लड़की रहती थी,
जिसकी शादी की चिन्ता से उसके माँ-बाप काफी चिन्तित रहते
थे। उसके बहुत भाई-बहिन थे और वह उनमें सबसे बड़ी थी।
उसकी मां उसकी शादी न कर सकने की निराशा में उस लड़की
पर गुस्सा करती और गालियां देती, जबकि लड़की का कसूर
सिर्फ इतना भर था कि वह बिना किसी कोशिश के जवान होती
जा रही थी। जैसे कि यतीन को पता लगा, उस लड़की ने कुछ
वर्ष बाद आत्महत्या कर ली। खबर सुनकर यतीन को अपने
कस्बे की याद आ गई, जहां दहेज कम लाने के अपराध पर ससु-
राल वालों ने अपनी पुत्रवधू को मिट्टी का तेल छिड़ककर मार
दिया था और बाद में उसे आत्महत्या का दोषी ठहराया था।

यतीन को हमेशा से विश्वास था कि मध्यमवर्गीय समाज
से ज्यादा निर्ममी चीज दुनिया में कोई नहीं है और मध्यमवर्गीय
परिवार की कन्या के पैदा होने के बराबर और कोई पाप नहीं
है। समाज सब कुछ बरदाश्त कर सकता, पर एक निरीह लड़की

के यौवन को वह नहीं सह सकता।

यतीन की भावी पत्नी के दादा गांव में रहते थे और खेती संभालते थे। कभी उनके पास सात गांव थे और उनके कुछ भाइयों के यहां अभी तक सवारी के लिए हाथी रखा जाता था। जमींदारी निकल जाने के बाद कुछ खेती की धरती बची और कुछ बागात बचे। वह बुजुर्गवार जब कभी गांव से दिल्ली आ जाते थे, तभी घर में सबकी बोलती बन्द हो जाती थी। बड़ा लंबा और स्वस्थ शरीर, काली अचकन और सफेद अलीगढ़ी कट का पायजामा और सफेद गांधी टोपी। शतरंज, हुक्का, डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के एलेक्शन और मुकद्दमेबाजी के शौकीन। बोल-चाल में फारसी के शब्दों का प्रयोग काफी करते थे।

यतीन के रहने के दौरान एक बार दिल्ली आए और यतीन को काफी हिकारत की निगाहों से देखा। कोई खास बोलचाल नहीं हुई। पैदल चलने के बेहद शौकीन थे और दिल्ली में अगर किसी मिनिस्टर वगैरह से मिलना होता था, तो बराबर पैदल ही चलते थे।

आदमी सिद्धान्तवादी थे। एक बार एक गरीब आदमी से मुकद्दमा छिड़ गया और बात हाईकोर्ट तक पहुंची। उसके इलाहाबाद जाने का पूरा खर्चा उन्होंने खुद ही उठाया। दोनों लोग अपने-अपने कागजात निकाले एक ही डिब्बे से इलाहाबाद गए। गाड़ी में यदि भीड़ कम हो गई, तो बीड़ी निकाल ली और शतरंज जमा ली। दादाजी की चार शादियां हुई थीं और चालीस वर्ष की आयु में वह अन्तिम बार विधुर हुए थे। उसके बाद उन्होंने शादी नहीं की।

यतीन की होने वाली पत्नी का नाम शोभा था, पर प्यार में सब लोग उसे शुभा कहते थे। गौरवर्ण, लम्बाकद, गोल चेहरा और घने केश। वह पर्दे में रहती थी और यतीन के सामने नहीं आती थी। उसके शरीर का कोई अंग अगर दीख जाता था, तो

कारण वहू को बिना प्लेटफार्म के स्टेशन पर उतरने में काफी देर लगी। उसके बाद जैसे ही यतीन उतरा, वैसे ही गाड़ी जो थी वह गतिशील हो गई।

यतीन का कस्बा स्टेशन से कोई पांच मील दूर था। रात के समय में वहां जाने के लिए कोई सवारी नहीं मिलती थी। इलाका डाकुओं के लिए काफी मशहूर था। रामनाम लेकर सब लोग स्टेशन के पास बनी विशाल धर्मशालाओं में ठहर गए।

खाना साथ था। खाना खाने के बाद यतीन और शोभा एक कोठरी में चले गए, जहां कुल मिलाकर एक चारपाई पड़ी थी। उसे देखकर दोनों को हंसी आ गई। दरवाजे की कुंडी लगाकर दोनों बैठ गए। यतीन खाट पर किसी तरह बैठा और उसकी वधू नीचे फर्श पर कुछ बिछा कर लेट गई।

बातचीत का दौर फिर शुरू हो गया। वधू काफी चतुर, हंसमुख और उदार चित्त थी। कमरे में मच्छर काफी थे। रात-भर वे लोग बातचीत ही करते रहे और डाकुओं की प्रतीक्षा करते रहे। यतीन शोभा को डाकू लोगों के किस्से सुनाता रहा। और जब वह डर जाती, तो उसे हिम्मत बंधाता रहा।

यतीन को डाकुओं के बारे में थोड़ा-बहुत ज्ञान था। उसका जिला तराई में था। एक ओर हिमालय पर्वत और दूसरी ओर सीमा पर बहती गंगा नदी। सारा जिला लगभग साठ मील लंबा और चौवन मील चौड़ा था और उसमें कुल मिलाकर कोई तीस नदियां बहती थीं। ये सारी नदियां साल भर सूखी रहती थीं। और वहां की ऋतु आते ही भरने और उतराने लगती थीं। वही गोस्वामी तुलसीदास की 'क्षुद्र नदी भरि चलि उतराई' वाली बात।

इस क्षेत्र में डाकू हमेशा से होते आए थे। गढ़वाल की सीमा वाला इलाका तो सुल्ताना डाकू के लिए हमेशा के लिए अमर हो गया था। यतीन की सास उसी गांव की रहने वाली थी, जहां

## तीन

यतीन के घर पहुंचकर वधू का बहुत स्वागत हुआ। शारदा ने धोबी के यहां की धुली हुई धोती पहनी और मां ने अपनी पुरानी साड़ी धारण की। अम्मां के पास बस एक यही साड़ी थी, जो रेशमी थी, और जिसे उन्होंने अपने विवाह के अवसर पर कभी पहिना था।

शोभा ने घर की स्थिति भाप ली। उसने अम्मा और शारदा को ढेर सारे कपड़े दिए, यतीन के लिए सूट बना और पिता के लिए बढ़िया मलमल का कुर्ता और लट्ठे का पायजामा।

शोभा ने यह महसूस ही नहीं होने दिया कि वह बड़े घर की बेटी है। यू तो सभी स्त्रियों में परिस्थियों से समझौता करने की ताकत होती, पर शोभा में यह शक्ति कुछ ज्यादा ही थी।

शारदा से उसकी दोस्ती हो गई। घर में बड़ा नाच गाना हुआ। अपना हक मांगने [illegible] के के लोग और हिजड़े वगैरह आए। शादी के सन्दर्भ में यतीन के ऊपर जो कर्ज हो गया था, वह भी शोभा ही ने अदा किया। यह सब कुछ करने के बाद वह और यतीन कोई एक हफ्ते बाद दिल्ली वापस चले आए।

जिस वक्त वे घर में घुसे, उस समय वहां कुछ झगड़ा हो रहा था। बात यह थी, चाचा जी ने "हैरत" साहब को "घैरत" कहकर पुकार दिया था, जिससे कवि की आत्मा को चोट पहुंची थी। थोड़ी देर के बाद झगड़ा समाप्त हो गया और यतीन ने सिगरेट सुलगाकर चाचा जी से गप्प मारनी प्रारम्भ की।

अन्दर शोभा अपनी माता व बहिनों को ससुराल के अनुभव सुनाती रही।

अब यतीन के सामने तीन समस्याएं थीं। एक तो उसे सिविल सर्विस के इंटरव्यू के लिए तैयारियां करनी थीं। दूसरे प्रतियोगिता के परिणाम आने तक कोई नौकरी ढूंढनी थी और

दारी ने उन्हें एक-दूसरे के ज्यादा करीब ला दिया था।

इस अनैतिक सम्बन्ध के दो कारण थे। पहिला कारण तो यह था कि मामाजी की पत्नी यक्ष्मा की पुरानी रोगी थीं और दूसरा कारण यह था कि मित्र की पत्नी वाकई बहुत सुन्दर थी।

मामाजी के कोई सन्तान नहीं थी। अपनी पत्नी के देहावसान के बाद उन्होंने सन्तान की इच्छा से पचास वर्ष की अवस्था मे एक विधवा से शादी की; पर सन्तान का सुख उन्हें फिर भी नहीं मिला।

काला सूट पहनते थे, जो उनके सफेद शरीर पर बहुत सुन्दर लगता था। वह काफी लम्बे थे और एक दम गंजे थे। जब हंसते थे तो आवाज काफी दूर तक जाती थी। वह वाकई उन लोगों में से थे, जो अंग्रेजी हुकूमत में 'बड़ा साहब' कहकर पुकारे जाते थे।

इंटरव्यू की ट्रेनिंग लेने यतीन उन्हीं के घर पर रहा। बीवी बच्चे न होने के कारण सारा मकान काफी सुनसान-सा रहता था। वह सुबह शाम उसे इंटरव्यू की ट्रेनिंग देते और बाकी वक्त यतीन उनके शैल्फ में से किताबें निकाल कर पढ़ता रहता।

शाम के समय कोई-न-कोई बड़ा आदमी चाय या डिनर पर आता रहता। उनके सम्पर्क में आकर यतीन का हौसला काफी बुलन्द हो गया। इंटरव्यू के लिए जो दो मन्त्र उसे बताए गए थे, उनमें से एक था निडर रहना और अपना संतुलन न खोना और दूसरा था, सच बोलना। यतीन ने दोनों मन्त्र गांठ में बांध लिए।

इंटरव्यू की ट्रेनिंग लेने के बाद यतीन अपनी पत्नी को विदा करने वाले डेरे पर लिवा ले गया।

...ी को तीन महीने हो चुके थे, पर वास्तविक ... । रोज सोमा इसके

उठती। अपने और यतीन के लिए चाय बनाती और फिर स्टोव पर ही नाश्ता तैयार करती। इसके बाद लंच का डिब्बा लेकर यतीन साइकिल पर सवार होकर अकबर रोड की दिशा में दौड़ता, जहां कि उन दिनों योजना कमीशन का दफ्तर था।

उन दिनों योजना कमीशन काफी छोटा था। जिस विभाग में यतीन काम करता था, उसके सर्वोच्च अफसर थे ई० पी० मून। मून साहब अंग्रेज थे और आई० सी० एस० से इस्तीफा दे चुके थे, क्योंकि उन्होंने एक बार राष्ट्र के नेताओं पर लाठी चार्ज करने का हुक्म देने से इनकार कर दिया था। आजादी के बाद सरदार पटेल ने उन्हें इंग्लैंड से बुलवाया, ताकि नये भारत के निर्माण में हमारी सरकार को सहयोग दे सकें।

वह अविवाहित थे, बीयर और वुड हाउस के शौकीन थे, और जिमखाना में रहते थे। यतीन के जो और साथी थे, उनमें से एक वाकई बहुत सीधा था। उसकी सगाई तय हो गई थी और वह अपनी मंगेतर को जो प्रेम-पत्र लिखा करता था, उनका मसौदा यतीन तैयार करता था। काफी दिलचस्प मामला था।

जब उसकी शादी हो गई, तो उसने यतीन को अपने घर चाय पर बुलाया। अपनी पत्नी से मिलवाया और यह भी बता दिया कि यतीन ही वह व्यक्ति था। जो उसके प्रेम-पत्र ड्राफ्ट किया करता था। उसकी मासूमियत पर सबको हंसी आ गई। उसकी पत्नी व यतीन शर्म के मारे धरती में गड़ गए।

दफ्तर से लौटने के बाद यतीन व उसकी पत्नी चाय पीते और फिर शाम को घूमने निकल जाते। फिर खाना खाते, प्यार करते और सो जाते।

## पांच

यतीन को इतवार को प्रयाग जाना था। गाड़ी हालांकि रात को जाती थी, यतीन ने अपनी अटैची और बिस्तर सुबह ही से ठीक करना शुरू कर दिया। उसकी आदत ही ऐसी थी कि गाड़ी छूटने से एक घण्टा पहले स्टेशन पहुंचा जाए। रास्ते के लिए पानी की एक सुराही और पूड़ियों से भरा एक कटोरदान भी लिया गया। सारा काम खत्म होने के बाद शोभा ने यतीन से पूछा कि एक बात जानना चाहती हूं। क्या सच-सच बतलाओगे?

यतीन ने देखा कि शोभा एकदम गम्भीर हो गई है। उसने उसे घूरकर देखा और कहा कि बताओ क्या जानना चाहती हो।

"सच ही बोलोगे न?" शोभा ने कहा।

"एकदम सच। तुमसे झूठ बोलकर सारी जिन्दगी पाप का भार कैसे ढो सकूंगा?" यतीन ने उत्तर दिया।

"यह विनीता कौन है?"

"विनीता एक लड़की है, जो मेरे साथ पढ़ती थी।"

"तुम्हारी दोस्ती बहुत गहरी थी न?"

"हां, यह भी कहा जा सकता है; पर तुम्हें यह खबर किस जासूस ने दी?" यतीन हंसता हुआ बोला।

"छोटी मामी कहती थीं। आखिर पुलिस अफसर की पत्नी ठहरीं। खैर तुम यह बताओ कि तुम्हारी उसके साथ दोस्ती ही थी या और भी कुछ?" शोभा ने बड़ी शांति के साथ कहा।

"और क्या? आखिर तुम कहना क्या चाहती हो?"

"क्या तुम उससे प्रेम करते थे?"

"किसी हद तक तुम्हारी सूचना ठीक है।"

"तो फिर उससे शादी क्यों नहीं की? तुमने उसे भी धोखे [illegible]।" शोभा बड़े संयत रूप से बोली।

"यह सरासर गलत है। मैंने उसकी देह का स्पर्श तक नहीं किया और हमेशा यह बताया कि मेरी शादी पहले से ही कहीं पक्की हो चुकी है। उसको धोखा देने का प्रश्न ही नहीं उठता। धोखा देना मेरे स्वभाव में ही नहीं है।" यतीन ने दृढ़तापूर्वक कहा।

"तो क्या तुम विनीता से और मुझसे, दोनों से प्रेम करते हो ?"

"ऐसा होना असम्भव तो नहीं है। तुमसे मैं कितना प्रेम करता हूं, यह तुम भली-भांति जानती हो। तुम्हारे बिना मैं एक दिन भी नहीं रह सकता।"

"अगर ऐसा है, तो तुम विनीता को भूलते क्यों नहीं ?"

"कोशिश करूंगा। मगर उसको एकदम भूलना कठिन ही लगता है।"

"मुझे खुशी है कि तुम सच बोले, आज से तुम्हारी इज्जत मेरी निगाह में ज्यादा हो गई। मगर जहां मुझे यह खुशी है कि तुमने मुझसे इतना प्रेम किया, वहां यह दुःख भी है कि यह तुम्हारा प्रथम प्रेम नहीं है। भोजन स्वादिष्ट है, मगर झूठा है। ठीक कहती हूं न ?" शोभा ने मुसकराते हुए कहा।

"मैं यह सारी बातें नहीं जानता। मुझे तो सिर्फ इतना पता है कि मैंने किसी से भी कुछ नहीं छिपाया। मैं तुमसे अनन्त प्रेम करता हूं, पर मैं विनीता को इस जीवन में कभी नहीं भूल सकता।" यतीन ने गम्भीरता के साथ उत्तर दिया।

"अच्छा, यह सब छोड़ो। यह बताओ कि अब प्रयाग जा रहे हो, तो उससे मिलकर आओगे ? क्या वह बहुत सुन्दर है ?"

"कह नहीं सकता। उसके घर तो मैं जाऊंगा नहीं। मगर यदि कहीं सड़क पर ही भेंट हो गई, तो बिना बातें किए तो लौटूंगा नहीं।" यतीन ने हंसते हुए उत्तर दिया।

"तुम वकील क्यों नहीं बने ? तुम्हारे जैसा तार्किक व्यक्ति तो उस पेशे में ज्यादा सफल होता।"

"देखो, बनना मैं वकील ही चाहता था पर गरीबी के कारण वे स्वप्न छोड़ने पड़े। मैं चाहता था कि वकील बनूं और राजनीति में हिस्सा लूं, मगर घर की जो स्थिति है, वह तुमसे छुपी नहीं है। रहने को घर कहलाने लायक मकान तक नहीं है और ऊपर से जवान बहिन शादी के लिए तैयार बैठी है। अब तो नौकरी ही करूंगा और हो सका तो साथ-साथ साहित्य की साधना भी करूंगा। साथ दोगी न मेरा ?"

"मैं तो सिर्फ तुम्हारी ही हूं। अलबत्ता तुम पूरा अकेला मेरे नहीं हो।" बात को बन्द करती शोभा बोली।

यतीन गम्भीर हो गया और कुर्सी पर बैठ गया। शोभा के चरीत्र में उसकी उदारता ही एक ऐसी चीज थी जिसने उसे सबसे ज्यादा आकृष्ट किया था। वह किसी को गरीब और दुखी नहीं देखना चाहती थी। मगर यतीन को लगा कि स्त्री सब कुछ बांट सकती है, पर पति नहीं।

यतीन पता नहीं कब तक ऐसे ही बैठा रहा। शोभा के याद दिलाने पर बाहर निकला, स्कूटर लाया और सामान लेकर स्टेशन की दिशा में चला। स्टेशन तक छोड़ने शोभा गई। यतीन ने देखा कि गाड़ी चलने पर जब उसने प्रणाम किया तो उसकी आंखों में आंसू थे। उस रात यतीन बिल्कुल नहीं सोया। वह जागता रहा और रेल की खिड़की से बाहर के वन, खेत और चन्द्रमा को देखता रहा। वह शायद पूर्णिमा की रात्रि थी।

## छः

कम्पनी बाग के ठीक सामने पार्क रोड पर गवर्नर की विशाल कोठी थी। इलाहाबाद एक प्रकार से संयुक्त प्रदेश की दूसरी राजधानी थी और गवर्नर जब यहां आते थे, तो इसी गवर्नमेंट हाउस में ठहरते थे।

जिस दिन यतीन प्रयाग पहुंचा, उसके दो दिन बाद ही इंटरव्यू था। यतीन ने अपना सूट प्रेस करवाया, एक मित्र की टाई उधार ली और जूतों पर पालिश करवाई। सारी तैयारियों के बावजूद अपने मन में वह डर ही रहा था, क्योंकि इंटरव्यू में पास होना अनिवार्य था और इंटरव्यू एक ऐसी चीज थी, जिसके बारे में दावे के साथ कोई भी सफलता की आशा नहीं कर सकता था।

बहरहाल, यतीन को इंटरव्यू बोर्ड के सामने आने से पहले जितना डर था, अन्दर जाकर वह डर उतना नहीं रहा। एक गोल मेज थी, जिसके चारों ओर सात या आठ सीनियर और अधेड़ अफसर बैठे थे और एक कुर्सी खाली थी, जिस पर यतीन को बैठने की आज्ञा मिली।

उन लोगों ने काफी आत्मीयता के साथ बातचीत शुरू की। विभिन्न मामलों को लेकर यतीन की सलाह पूछी गई और कुल मिलाकर यतीन ने उनके प्रश्नों के ठीक ही उत्तर दिए।

शाम को इंटरव्यू का दूसरा अध्याय पूरा होना था, जिसमें उस दिन इंटरव्यू के लिए आए हुए सारे प्रत्याशी एक सामूहिक परिचर्चा में भाग लेने वाले थे। कमीशन के सदस्य हाल में एक तरफ बैठे रहते और प्रत्याशियों के वार्तालाप देखते रहते। यह चर्चा कोई एक घण्टा चली।

इसके बाद यतीन को छुट्टी मिली गवर्नमेंट हाउस के बाहर निकलते ही यतीन ने टाई खोलकर जेब में रखी और निट्ठू

बाद में उसने कर्नलगंज की ओर कदम बढ़ाए।

पार्क रोड पर चलते-चलते यतीन सोचता रहा कि कितना अच्छा हो यदि कहीं विनीता मिल जाए। एक ओर तो वह उसके घर तुरन्त नहीं जाना चाहता था और अनस्थिर तो यह है कि वह उससे मिलना भी नहीं चाहता था, वहीं दूसरी ओर उसका मन भी मन-ही-मन कह रहा था कि विनीता से भेंट जरूर हो।

संयोग की बात कुछ ऐसी हुई कि एक दिन विनीता उसे सड़क पर मिल ही गई। हिन्दू हॉस्टल के सामने वह रिक्शे की प्रतीक्षा में खड़ी थी और यतीन जो था वह म्यूर सेंट्रल कालेज के कम्पाउंड में से होकर युनिवर्सिटी की दिशा में जा रहा था। दोनों एक-दूसरे से मिलकर बेहद खुश हुए और रिक्शे में बैठकर थार्नहिल रोड पर चलने लगे।

विनीता ने इंटरव्यू के बारे में पूछा, पत्नी के बारे में जांच-पड़ताल की और फिर इधर-उधर की बातें करने लगी। अपने बारे में उसने बताया कि वह किसी और विषय में भी एम० ए० करेगी, ताकि वक्त ठीक तरह कट सके।

वर्षा की ऋतु थी। आकाश बादलों से घिरा था। धीरे-धीरे बूंदें पड़ने लगी और थोड़ी देर बाद वर्षा ने विकराल रूप धारण कर लिया।

रिक्शे वाले ने रिक्शा रोका, चारों ओर बरसाती डाली और फिर आगे बढ़ा। यतीन और विनीता एक बन्द कमरे में बैठे जैसा महसूस करने लगे।

विनीता को यह जानकर खुशी हुई कि यतीन को अपनी पत्नी पसन्द आई। उसने यतीन को सलाह दी कि अब वह एक शादीशुदा आदमी है और उसका फर्ज है कि वह मात्र अपनी पत्नी को ही प्यार करे।

रिक्शा चलता रहा और यतीन उसका प्रवचन सुनता रहा।

बातों-बातों में उसने विनीता का हाथ अपने हाथ में लिया और उसे इतनी जोर से दबाया कि वह चीख पड़ी। इसके बाद दोनों हंसने लगे।

रेडियो स्टेशन के पास पहुंचकर यतीन ने रिक्शा छोड़ दिया। उसे रेडियो के दफ्तर में किसी दोस्त से मिलना था।

उतरते हुए उसने विनीता को प्रणाम किया और कहा कि पता नहीं अब कब भेंट हो। भेंट होगा भी या नहीं, यह भी निश्चित रूप से कहना कठिन था।

उसकी किसी बात का विनीता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। वह उसी निश्चल और उदासी भरी मुसकान से उसे देखती रही, देखती रही।

## सात

प्रयाग में कोई एक सप्ताह व्यतीत करने के बाद यतीन दिल्ली लौट आया।

उसकी ससुराल एकदम भयंकर विपत्ति में पड़ गई थी। बड़े मामा जी अपने अंतिम प्रोमोशन की वर्षों से प्रतीक्षा कर रहे थे, मगर दुर्भाग्यवश वह प्रोमोशन उनके एक जूनियर को दे दिया गया। इस आघात को वे ही लोग समझ सकते हैं, जो कि नौकरी करते हैं।

उन्हें दिल का दौरा पड़ा और वे अचानक ही स्वर्गवासी हो गए। मगर विपत्तियों का अंत यहीं नहीं हुआ। उनकी मृत्यु के बाद उनकी सम्पत्ति को लेकर उनकी विधवा व उनके छोटे भाई, जो कि पुलिस में कप्तान थे, दोनों मुकदमेबाजी में उलझ

गए।

तनाव बढ़ता गया और बढ़ता गया। अंत में चलकर स्थिति यह हुई कि छोटे भाई को भी दिल का दौरा पड़ा और उनकी भी मृत्यु हो गई। यह मृत्यु एकदम अकाल मृत्यु थी। दोनों भाइयों को इस तरह खोने के बाद यतीन की मां इकदम वृद्धा जैसी लगने लगी। दोनों भाई वट के वृक्षों के समान थे। उनके हटते ही चारों ओर सुनसान-ही-सुनसान नज़र आने लगा।

भारतीय प्रशासन सेवा व उससे सम्बन्धित अन्य सेवाओं की
योगिता का परिणाम आ गया और यतीन केंद्रीय सरकार
एक प्रथम श्रेणी की सेवा के लिए चुन लिया गया।

यतीन बहुत खुश हुआ। गरीबी का युग बीत गया। अब
के सामने एक ऐश्वर्य व समृद्धि से परिपूर्ण जीवन की छवि
कर आंखों में ठहर गई। अमीरी का मूल्य वही इन्सान जान
ता है, जो कभी गरीब रहा हो।

नियुक्ति पत्र मिलने के बाद यतीन ने अपनी पत्नी से विदा
; क्योंकि उसे ट्रेनिंग पर जाना था, जिसमें सारे देश की यात्रा
मिल थी।

शोभा को उसने उसके पिता के यहां छोड़ दिया। विनय-
र में उनके क्वार्टर के पास रहने वाले बाबू लोगों ने उसकी
फलता पर उसे एक चाय पार्टी दी। उन्हें इस बात की खुशी
कि उनमें से एक आदमी जिंदगी में आगे बढ़ा। ईर्ष्या जो
ती है, वह अपेक्षाकृत छोटे लोगों में कम होती है।

यतीन के जो अमीर दोस्त थे, वे अब उससे बचने लगे,
योंकि उनमें और यतीन में अब कोई फर्क नहीं रह गया था।
पने से निचले लोगों को जो स्नेह दिखाया जाता है, वह प्रायः

अपनी आत्मतुष्टि व गरिमा के एहसास के लिए ही दि
जाता है। वैसे ऐसे भी अमीर लोग हैं, जो बिना किसी
भावना के गरीबों की सहायता करते रहते हैं; पर ऐसे
की संख्या कभी ज्यादा नहीं होती।

यतीन को लगभग एक वर्ष बड़ा अनियमित जीवन बित
पड़ा। इस दौरान उसे बम्बई, कलकत्ता, हैदराबाद, प्रय
देहरादून, पूना और न जाने कितने छोटे-बड़े नगरों की
करनी पड़ी।

बम्बई का ऐश्वर्य, वहां की इमारतों की भव्यता और उ
के नीचे फुटपाथ पर आंधी-पानी में रहते लाखों लोग उसे नि
यत अजीब लगे। अमीरी और गरीबी इतनी शांति से सा
साथ रहती उसने पहले कभी नहीं देखी थी। बम्बई से पूना त
की रेल यात्रा वास्तव में बहुत सुन्दर थी।

प्रयाग में जाकर तो वह जैसे अपने पुराने घर ही में पहुं
गया, हालांकि अपना कार्यक्रम बेहद व्यस्त होने के कारण व
विनीता से नहीं मिल पाया, जिसका उसे हार्दिक अफसो
रहा।

सबसे ज्यादा खुशी उसे कलकत्ता देखकर हुई। कलक
महानगर होते हुए भी एक कस्बे वाली आत्मीयता रखता था
जो उसे और स्थानों पर नहीं दिखाई पड़ी।

कलकत्ता में वह लगभग एक महीने तक भवानीपुर में रहा
जो काफी हद तक एक विशाल कस्बे का ही वातावरण पैदा
करता था। बंगाली लोग जितनी जल्दी गुस्सा करते थे, उतनी
भी ज्यादा जल्दी दोस्ती पर उतर आते थे। कलकत्ता में वह
बैरकपुर गया, जहां से कि गदर की शुरूआत हुई थी।

बम्बई में उसने एलीफेंटा की गुफाएं देखीं, तो पूना में
पेशवाओं के महल।

देहरादून से मसूरी जाकर हिमालय की श्रेणियों के दर्शन

करना, तो जरूरी ही ठहरा।

कलकत्ता के विक्टोरिया मेमोरियल मे उसने क्लाइव के हाथ की लिखी चिट्ठियां देखीं और वह मेज भी देखी, जिस पर लार्ड क्लाइव ने मीर कासिम के साथ खाना खाया था। शरत बाबू, सुभाष चन्द्र बोस व रवीन्द्रनाथ ठाकुर के मकानों के भी दर्शन किए।

पूना मे समर्थ गुरु रामदास की समाधि को उसने प्रणाम किया।

*मगर स्थानों के देखने से कहीं ज्यादा दिलचस्प था रेल के* प्रथम श्रेणी के डिब्बे में यात्रा करना। इस महान् देश की संस्कृति के सच्चे दर्शन तो तीसरे दर्जे के डिब्बे मे ही होते हैं; पर फिर भी यात्रा का जो अपना आनंद है, वह प्रथम श्रेणी मे बैठने के कारण भी कम नहीं होता। खिड़की से चमकती बस्तियां, छोटे-छोटे स्टेशन, हरे-हरे खेत और पर्वतों की श्रेणियां या घास के मैदान। गाड़ी को देखकर भागते हुए गांव के बच्चे और छोटे-मोटे स्टेशनों को उपेक्षा से पार करती और पटरी बदलती डाक-गाड़ी। धीरे-धीरे वनों मे विरती साझ और उसकी छाती पर *गड़गड़ाती रेल। नदियों को पार करते समय तो यतीन को* इतना आनन्द आता कि उसे रोमांच हो उठता।

कलकत्ता को छोड़कर प्रायः हर नगर मे यतीन और उसके साथी अफसर डाकबगले, सर्किट हाउस या आफिसर्स मेस मे ही ठहरते, जिनमे न जाने कितने बावर्ची, खानसामे, मशालची और बैरे व खानसामा काम करते थे।

यतीन ने पहली बार अफसर होना महसूस किया। आदमी और आदमी मे इतना फर्क हो जाता और वह भी इतनी जल्दी। सही बात, तो यह है कि यतीन सारी उम्र पक्का अफसर तो बन ही नहीं पाया। उसकी दोस्ती हमेशा बाबू लोग और चपरासियों से ही ज्यादा रही। कुछ मिलाकर ये गरीब लोग बड़े

अफसरों की अपेक्षा कहीं ज्यादा सच्चे और वफादार साबित हुए।

इस समय के दौरान उसे कश्मीर जाने का अवसर भी प्राप्त हुआ। श्रीनगर में वे डल झील पर एक हाउसबोट में ठहरे। गुलमर्ग व खिलनमर्ग भी देखा। मुगलों के लगाए बागों की सैर भी की और कश्मीर के सदरे रियासत के साथ जल-पान भी किया।

सारी यात्रा करने के बाद यतीन ने महसूस किया कि अपना देश इतना सुन्दर, विविधता से परिपूर्ण और विशाल है कि उसके समुद्रतट और पर्वत, किले और महल तथा मन्दिर और मस्जिद देखने के लिए, उसके ग्रामगीत और लोककथाओं को सुनने के लिए, उसके पर्व व त्यौहार तथा मेलों का आनन्द लेने के लिए, एक जन्म जो है वह एकदम नाकाफी है।

यहा का सौंदर्य पूरी तरह तभी देखा जा सकता है, जबकि व्यक्ति इस पवित्र धरती पर बार-बार जन्म ले। तभी वह इस देश के वनों, ऋतुओं और नदियों का सौंदर्य देख सकेगा, वैसे नहीं।

## दो

यतीन की पहिली नियुक्ति मेरठ हुई।

उसने अस्सी रुपया प्रतिमाह पर छावनी में एक कोठी किराए पर ले ली, जिसकी छत फूस की थी। फर्नीचर किराए पर लिया गया। ड्राइंगरूम सजा। सोने के कमरे में ड्रेसिंग टेबल व पलंग बिछे। दीवारों पर तसवीरें या और किस्म की कला-

में चीजें टंगी और बाहर आंगन में फूलों की क्यारियां लगीं।

वसीम अपनी पत्नी को भी ले आया और अपनी अम्मा व हिल को भी। पिताजी घर पर अकेले रहे और उनका खाना के बाहमी बनाती रहीं।

कोठी की मालकिन एक लम्बी-चौड़ी एंग्लोइंडियन लेडी ी, जो बहुत शान के साथ रहती थी। उसके शांत स्वभाव पति क बर्मन थे, जो अपनी पत्नी की छाती तक मुश्किल से आते होंगे। इतनी लम्बी-चौड़ी पत्नी और इतना दुबला व नाटा पति, दोनों बड़े प्यार से रहते थे। परिवार में बच्चा कोई नहीं था कुत्ते अलबत्ता अनेक थे। लेडी जो थी वह पति से ज्यादा सिग-रेट पीती थी और वैसे भी काफी दबंग थी।

मेरठ की छावनी काफी बड़ी थी। अठारह सौ सत्तावन का गदर यहीं से शुरू हुआ था। गदर के काल की अनेक इमारतें अभी भी मौजूद थीं। वह मन्दिर था, जहां कि बागी लोग बैठकें किया करते थे। वह कोठी थी, जहां उस वक्त का जनरल रहता था और वह बंगला भी था, जहां गदर के दौरान न जाने कितनी विदेशी महिलाओं की हत्या की गई थी। खूनी पुल था, जहां निर्दोष भारतीयों को फांसियां दी गई थीं और वह क्लब भी था, जहां कभी कर्नल रहता था। यह बात उन दिनों की है, जब मैं एक सेना में अधिकारी था।

मेरठ के आसपास देखने योग्य स्थान कम ही थे। कोई कोस मील की दूरी पर एक विशाल गिरजाघर था, जिसे शाह आलम के जमाने में बेगम समरू ने बनवाया था। गिरजे के अन्दर जो मूर्तियां थीं, वे इटली में बनी थीं।

दूसरी दिशा में लगभग उतनी ही दूर हस्तिनापुर कस्बा था, जो महाभारत काल का होने के कारण काफी प्रसिद्ध था। जैन धर्म के दो तीर्थंकर यहीं पैदा हुए थे और यहां दो जैन मन्दिर भी थे, जो निहायत खूबसूरत थे।

अफसरों की अपेक्षा कहीं ज्यादा सच्चे और वफादार साबित हुए।

इस समय के दौरान उसे काश्मीर जाने का अवसर भी प्राप्त हुआ। श्रीनगर में वे डल झील पर एक हाउसबोट में ठहरे। गुलमर्ग व खिलनमर्ग भी देखा। मुगलों के लगाए बागों की सैर भी की और काश्मीर के सदरे रियासत के साथ जलपान भी किया।

सारी यात्रा करने के बाद यतीन ने महसूस किया कि अपना देश इतना सुन्दर, विविधता से परिपूर्ण और विशाल है कि उसके समुद्रतट और पर्वत, किले और महल तथा मन्दिर और मस्जिद देखने के लिए, उसके ग्रामगीत और लोककथाओं को सुनने के लिए, उसके पर्व व त्योहार तथा मेलों का आनन्द लेने के लिए, एक जन्म जो है वह एकदम नाकाफी है।

यहां का सौंदर्य पूरी तरह तभी देखा जा सकता है, जबकि व्यक्ति इस पवित्र धरती पर बार-बार जन्म ले। तभी वह इस देश के वनों, ऋतुओं और नदियों का सौंदर्य देख सकेगा, वैसे नहीं।

## दो

यतीन की पहिली नियुक्ति मेरठ हुई।

उसने अस्सी रुपया प्रतिमाह पर छावनी में एक कोठी किराए पर ले ली, जिसकी छत फूस की थी। फर्नीचर किराए पर लिया गया। ड्राइंगरूम सजा। सोने के कमरे में ड्रेसिंग टेबल व पलंग बिछे। दीवारों पर तसवीरें या और किस्म की कला-

में चीज़ें टंगी और बाहर आंगन में फूलों की क्यारियां लगीं।

सतीश अपनी पत्नी को भी ले आया और अपनी अम्मा व बहिन को भी। पिताजी घर पर अकेले रहे और उनका खाना एक ब्राह्मणी बनाती रही।

कोठी की मालिकन एक लम्बी-चौड़ी एंग्लोइंडियन लेडी थी, जो बहुत शान के साथ रहती थी। उसके शांत स्वभाव पति एक जर्मन थे, जो अपनी पत्नी की छाती तक मुश्किल से आते होंगे। इतनी लंबी-चौड़ी पत्नी और इतना दुबला व नाटा पति, दोनों बड़े प्यार से रहते थे। परिवार में बच्चा कोई नहीं था कुत्ते अलबत्ता अनेक थे। लेडी जो थी वह पति से ज्यादा सिगरेट पीती थी और वैसे भी काफी दबंग थी।

मेरठ की छावनी काफी बड़ी थी। अठारह सौ सत्तावन का गदर यहीं से शुरू हुआ था। गदर के काल की अनेक इमारतें अभी भी मौजूद थीं। वह मन्दिर था, जहां कि बागी लोग बैठकें किया करते थे। वह कोठी थी, जहां उस वक्त का जनरल रहता था और वह बंगला भी था, जहां गदर के दौरान न जाने कितनी विदेशी महिलाओं की हत्या की गई थी। खूनी पुल था, जहां निर्दोष भारतीयों को फांसियां दी गई थीं और वह क्लब भी था, जहां कभी चर्चिल रहता था। यह बात उन दिनों की है, जब चर्चिल सेना में अधिकारी था।

मेरठ के आसपास देखने योग्य स्थान कम ही थे। कोई बीस मील की दूरी पर एक विशाल गिरजाघर था, जिसे शाह आलम के जमाने में बेगम समरू ने बनवाया था। गिरजे के अन्दर जो मूर्तियां थीं, वे इटली में बनी थीं।

दूसरी दिशा में लगभग उतनी ही दूर हस्तिनापुर कस्बा था, जो महाभारत काल का होने के कारण काफी प्रसिद्ध था। जैन धर्म के दो तीर्थंकर यहीं पैदा हुए थे और यहां दो जैन मन्दिर भी थे, जो निहायत खूबसूरत थे।

परीक्षित गढ़ नाम का स्थान भी पास ही था, जहां की कंवर सिहालदे नाम की रानी को लोकगीतों में काफी याद किया जाता था।

मेरठ से कोई दस मील दूर गंगा की नहर थी, जहां बांध बनाकर एक विशाल बिजलीघर का निर्माण किया गया था। यहां पर काफी लान थे, यूकलिप्टस के पेड़ थे और एक डाक बंगला भी था, जिसके कारण काफी लोग पिकनिक मनाने आते थे।

यतीन ने ये सारे स्थान अपने परिवार को दिखाए। शारदा अपने भाई को अमीर देखकर सारे पुराने कष्ट एकदम भूल गई।

यतीन का दफ्तर बहुत बड़ा था। हजारों लोग उसमें काम करते थे। दफ्तर के जो बड़े साहब थे, वह पंजाबी थे, मगर रंग रूप से एकदम अंग्रेज लगते थे। उनके पिता किसी देशी रियासत के दीवान थे और वह खुद, जो थे, आक्सफोर्ड से शिक्षा प्राप्त करके आए थे। उनका उठना-बैठना, हंसना और गुस्सा करना, कपड़े पहनना और बातें करना, सभी कुछ ऐसा था कि उससे उनका बड़प्पन, शालीनता और सामन्तवादी रहन-सहन साफ-साफ टपकता था।

तीन साल की नौकरी के दौरान यतीन से उन्होंने कोई छः बार बात की होगी और बस। उनके रौब से पूरा दफ्तर कांपता था। हालांकि हृदय से वह उदार थे। अंग्रेजों की तरह वह शासक और शासित में साफ अन्तर रखते थे और उनकी यह दूरी दफ्तर के अनुशासन को काफी बल देती थी। वह उन देशी अंग्रेजों में थे, जो कि आजादी के बाद भी अपने को बदल नहीं सके थे।

यतीन जिस कमरे में बैठता था, वह एक काफी आलीशान इमारत में था। कमरे में उसके साथ एक और अफसर बैठता

था, जो पागल था। उसकी माँ मर चुकी थी और उसके पिता ने दूसरी शादी कर ली थी। पारिवारिक परिस्थितियों के कारण इस अधिकारी का मानसिक संतुलन खराब हो चुका था और वह कोई काम नहीं कर सकता था।

थोड़े दिनों के बाद उसे नौकरी से निकाल दिया गया। विभाग ने दया करके उसे अपने एक दफ्तर में क्लर्क की हैसियत से रख लिया, ताकि वह भूखा न मरे। तकदीर की बात है कि एक इतने बड़े अफसर को अपने ही विभाग में बाबू बनना पड़ा। वैसे वह बड़ा प्रतिभावान व्यक्ति था और कभी-कभी बड़ी समझ की बातचीत किया करता था। इसने ही यतीन को बताया था कि मेरठ एक बहुत प्राचीन नगर था और अशोक के समय में इसका नाम महीरथ था।

## तीन

अब यतीन को एक ही चिन्ता थी और वह थी छोटी बहि शारदा की शादी करने की।

काफी भाग-दौड़ के बाद एक सम्पन्न और भले कुल क एक लड़का मिला, जो वैज्ञानिक था। शादी यतीन ने अपने कस से ही की और काफी धूम-धाम से की। शोभा ने दिल खोलक खर्च किया और अपनी साड़ियां और जेवरों में से ही उसे काफ कुछ दे दिया। शोभा दिल की इतनी उदार थी कि उसके साम यतीन छोटा पड़ता था।

पुरानी गरीबी के कारण, यतीन हमेशा पैसों को दांत

... रहा, पर मामा थी कि गरीबों को, नौकर-चाकरों को और भिखारियों को खुले हाथ देती रहती। उनका कहना था कि देने से कभी कोई गरीब नहीं होता।

जैसा कि ऊपर बताया गया है, शादी खूब धूमधाम से की गई। यतीन अपनी पुरानी हीन भावना को निकालने के उत्साह में जरूरत से ज्यादा ही खर्च करता रहा।

बारात तीन दिन जैन धर्मशाला में रुकी। हरकिशन भी शादी में आए। तीसरे दिन यतीन ने अपनी उस बहिन को विदा किया, जिसने उसके साथ भयंकर गरीबी के दिन काटे थे और जिसने उसकी फीस जुटाने के लिए रात-रात-भर सूत काता था।

उस विदा के बाद यतीन अपनी उस बहिन से कभी नहीं मिल सका, क्योंकि ससुराल जाकर वह लू लग जाने से मर गई। उसके मरने के साथ-ही-साथ यतीन का भी कुछ हिस्सा हमेशा-हमेशा के लिए मर गया। उसे बस यही सन्तोष रहा कि वह उसके बदले हुए दिन देखकर मरी, उसके पहले नहीं।

## चार

कोई तीन या चार वर्ष मेरठ रहने के बाद यतीन का तबादला पटना हो गया। बिहार के लोग यतीन को बहुत पसन्द आए। वे काम तो कम करते थे; पर उनका स्नेह और उनकी आत्मीयता उस सारी कमी को पूरा कर देती थी।

पटना में वारेन हेस्टिंग्ज का बनवाया हुआ गोल घर व गांधी मैदान काफी सुन्दर स्थान थे; पर वहां का सबसे बड़ा

आकर्षण था, गंगा का फैला हुआ विशाल घाट। यतीन प्रायः नाव लेता और गंगा जी के उस पार जाकर स्नान करता। महेन्द्र घाट से स्टीमर चलता था, जो पहलेजा घाट पर छोड़ता था। यतीन प्रायः अपने परिवार को स्टीमर से यात्रा कराता।

पटना से उसे शिलांग व दार्जिलिंग दौरे पर जाने का अवसर मिला, तो वह अपनी पत्नी को भी साथ लेता गया। अजीब यात्रा थी, जिनके लिए रेलवे विभाग रेल-कम-स्टीमर-कम-रोड टिकट ईशू करता था। पहले पटना से स्टीमर लेना पड़ता था, जो गंगाजी के उस पार छोड़ता था। वहां से सोनपुर तक रेल जाती थी। सोनपुर का प्लेटफार्म दुनिया में सबसे ज्यादा बड़ा समझा जाता था, क्योंकि उसके पास हरिहरनाथ क्षेत्र में ऐसा विशाल मेला लगता था कि उसमें हाथी तक बिकते थे। सोनपुर से आसाम जाने के लिए अवध-तिरहुत मेल मिलती थी, जो रात-दिन चलकर भयानक और सुनसान वनों में से गुजरती हुई आमिन गांव पहुंचती थी। आमिन गांव में फिर स्टीमर मिलता था, जो यात्रियों को ब्रह्मपुत्र के उस पार छोड़ता था। उस पार से शिलांग तक की यात्रा कार से करनी पड़ती थी, जिसका प्रबंध रेलवे करती थी।

यूं तो बिहार भी बहुत हरा-भरा है, पर आसाम तो ऐसा लगता है कि जैसे पृथ्वी का पूरा खंड गहरे हरे रंग में डुबोकर रंग दिया गया हो। केले के अनन्त-गाछ, खपरैल और टीन की छतें और हरियाली से भरे अनन्त क्षितिज। यतीन को तो ऐसा लगा, जैसे चारों दिशाओं में पंत और निराला की कविता बिछी हो।

शिलांग में स्त्रियां भी काफी रूपवती थीं। यतीन अपर शैली तक गया, जहां से खासी व जयन्ती पहाड़ियां चमकती हैं, जिनमें चेरापूंजी नाम का कस्बा स्थित है, जहां संसार में सबसे ज्यादा वर्षा होती है।

शोभा के साथ यतीन इतना प्रसन्न रहा कि विनीता को एकदम भूल गया।

शिलांग से लौटते हुए उसने सिलीगुड़ी में गाड़ी बदली और दार्जिलिंग की राह पकड़ी। दार्जिलिंग के लिए जो रेल चलती थी वह दो हिस्सों में बंटकर अलग-अलग चलती थी। रास्ते में तिनधारिया और कोस्यांग नामक स्टेशन तो ऐसे थे कि वहां की सुषमा और सुन्दरता शब्दों में वर्णित ही नहीं की जा सकती। चक्कर खाती रेल और एक के बाद एक घूमती हुई पर्वत मालाएं।

दार्जिलिंग में यतीन जलपहाड़ नामक स्थान पर स्थित डाक बंगले में ठहरा, जहां से कंचनजघा की बर्फीली चोटियां ठीक सामने दिखाई पड़ती थीं।

एक दिन रात को जीप लेकर वे टाइगर हिल पर गए, जहां से उगते हुए सूरज की किरणों में चमकता हुआ माउंट एवरेस्ट साफ दिखाई पड़ता था।

पटना में दफ्तर के जो बड़े अफसर थे, वे भ्रष्ट थे। रिश्वत लेते थे और सरकार के पैसे का वे भी दुरुपयोग करते थे। यतीन को यह तो पता था कि उसके विभाग के कुछ अंग ऐसे हैं कि जहां बराबर घूस चलती है; पर प्रथम श्रेणी के अधिकारी भी भ्रष्ट होते हैं, यह उसने कभी नहीं सोचा था। उसका दिल उचट गया और एक वर्ष के बाद वह फिर प्रयाग चला आया।

प्रयाग में पहुंचकर सबसे पहले विनीता के बारे में पता लगाया। उसे ज्ञात हुआ कि विनीता ने एक एम० ए० और किया, डाक्टरेट ली और फिर युनिवर्सिटी में ही लेक्चरर हो गई। शादी उसने नहीं की थी। ये सारी बातें जानकर यतीन को बड़ा दुःख हुआ। वह हमेशा यही चाहता था कि विनीता शादी करे और गृहस्थ जीवन यापन करे। यदि आज उसी की वजह से वह अविवाहिता थी, तो निश्चय ही यह एक बड़े दुःख

की बात थी।

उसकी विनीता से भेंट करने की उत्कट इच्छा थी मगर लज्जा और संकोच के मारे वह उससे मिलने कभी नहीं गया। वैसे कभी-कभी उसे यह महसूस करके बड़ा गर्व भी होता था कि उसके प्रेम के कारण एक लड़की ने शादी नहीं की।

प्रयाग में यतीन के जो बड़े साहब थे वे बहुत शाइस्ता, शालीन और शे'र-ओ-शायरी के शौकीन थे। आत्मीयता भी खूब रखते थे और ईमानदार बेहद थे।

उनमें बस एक ही इल्लत थी और वह यह कि किसी भी मामले पर निर्णय नहीं देते थे। जब कभी कोई शंका होती थी, तो वह सरकार को ही रेफर की जाती थी। हजारों रुपया वेतन पाने वाला आदमी और ऐसा कायरपन! उनके स्नेही आचरण से उनकी यह कमी किसी हद तक सब लोग बर्दाश्त करते थे। अपने इन्हीं गुणों और खुशामदी होने के कारण वह अफसर अन्त में चलकर भारत सरकार के संयुक्त सचिव बने और काम फिर नहीं किया।

यतीन ने देखा कि सरकार में घुसना कठिन है। एक बार घुस जाने के बाद आदमी बिना काम किए भी आगे बढ़ता जाता है। दोस्ती, प्रांतीयता, राजनीतिज्ञों से जान पहचान, ये चीजें थीं, जो काम या ईमानदारी से कहीं ज्यादा कीमत रखती थीं।

उस दिन यतीन को अचानक पता चला कि महाप्राण निराला की मृत्यु हो गई। वह सन्न रह गया। दफ्तर छोड़ा और दारागंज की राह पकड़ी। नगर के काफी साहित्यकार पहले ही पहुंच चुके थे। उनकी आंखों के सामने वास्तवी महाकवि की देह अग्नि को सौंप दी गई।

[illegible] आने कितने मजदूर माझी और मछली पकड़ने वाले [illegible]। ये वे लोग थे, जिनका महाकवि से क्यों

का निराला का सौंदर्य और कला का इतना महान् शिल्पी अंत
सच्चा एक गरीब और आम आदमी ही तो था। गरीबों औ
दलितों से तो उसका जन्मजात लगाव था।

निराला की मृत्यु से हिंदी के काव्य का एक अध्याय स
हो गया। सौंदर्य की इतनी तीव्र अनुभूति और उसका इत
स्वाभाविक चित्रण और कोई कवि शायद ही कभी कर सके।

प्रयाग में यतीन का प्रथम काव्य-संग्रह प्रकाशित हुआ
उसके कुछ दिनों बाद उसका तबादला दिल्ली को हो गया। पु
की प्राप्ति उसे प्रयाग में ही हुई।

## पांच

यतीन केन्द्रीय सचिवालय में अवर सचिव के पद पर नियुक्त होकर गया और लगभग तीन वर्ष वहां रहा।

सचिवालय में काम करना एक विशिष्ट प्रकार का अनुभव होता है। सचिवालय के बाहर आप सरकार के नौकर होते हैं, पर सचिवालय में आकर आप खुद सरकार बन जाते हैं। सारी सार्वभौम सत्ता का स्रोत जैसे सचिवालय ही होता है। सचिवालय में यतीन ने अनुभव किया कि नौकरशाही कितनी बड़ी शक्ति है। वह प्रशासन को एक स्थायीपन प्रदान करती है, जो वैसे संभव नहीं है।

जनता के चुने हुए लोग जो मंत्री बनते हैं, वे प्रशासन को गति प्रदान करते हैं, क्योंकि उनका जन-जीवन से सीधा सम्पर्क होता है। मंत्रियों की गति और नौकरशाही का स्थायीपन यदि सही सामंजस्य स्थापित कर लें, तो देश की प्रगति निश्चित है।

वैसे जनता के चुने हुए प्रतिनिधि भी नौकरशाही की अवहेलना नहीं कर सकते। उनको नीति निर्धारित करने के लिए जिस कच्चे माल की, आंकड़ों की जरूरत पड़ती है, वह सिर्फ नौकरशाही ही उन्हें दे सकती है। नीति निर्धारित हो जाने के बाद उसका जो पालन होता है, वह भी नौकरशाही ही के द्वारा होता है।

नौकरशाही का ईमानदार और संतुष्ट होना बेहद आवश्यक है। इसके अलावा प्रजातंत्र के चलने का और कोई रास्ता नहीं। देशी रियासतों के विलय में जितना योग सरदार पटेल का है, तो उतना ही श्रेय उनके सचिव वी० पी० मेनन को भी जाता है। इस सत्य से कोई इनकार नहीं कर सकता।

सचिवालय में काम करने के दौरान मुझ को अनेक अजीबोगरीब हस्तियां देखने को मिलीं।

उनके अपने संयुक्त सचिव खुद एक विचित्र प्राणी थे। किसी ने उनको हंसते या मुस्कराते हुए कभी नहीं देखा था। डिप्टी सेक्रेटरी से कम हैसियत का अधिकारी उनके कमरे में घुसने की हिम्मत नहीं करता था। अपने काम में वह बड़े दक्ष थे और दूसरों से उतने ही परिश्रम की अपेक्षा करते थे, जितना परिश्रम कि वे खुद करते थे। उन जैसा कर्तव्यनिष्ठ व्यक्ति मैंने फिर कभी नहीं देखा।

एक बार एक मीटिंग के दौरान [illegible]

[illegible]

ाहित्यिक गतिविधियों में वह बराबर हिस्सा लेता था और
ई पीढ़ी से तो वह खासकर जुड़ा था। नई पीढ़ी के जोशीले
ोगों में कुछ तो वाकई प्रतिभावान् थे, मगर कुछ सिवाय
फबाजी और गुटबन्दी के अतिरिक्त कुछ नहीं जानते थे।

दिल्ली छोड़ने के समय तक यतीन को इतनी प्रतिष्ठा मिल
की थी कि देश के सभी चोटी के अखबार उसे छापने लगे थे
ौर प्रायः सभी प्रथम श्रेणी के प्रकाशक उसकी किताबें छाप
के थे।

दिल्ली के इसी प्रवास में यतीन ने गांव की अपनी जमीन
च दी और कस्बे के मकान को तुड़वाकर उसकी जगह एक नई
वेली बनवाई। एकदम पक्की। बिजली भी ली गई और सब
ाम शान से किया गया।

यतीन को लगता था कि पुराने घर की हर ईंट के साथ
सके बचपन के दुःखों का एक गवाह मरता जा रहा है। मगर
ह मात्र उसका भ्रम था। चित्र फाड़ने से भला खलनायक कभी
रता है?

यतीन की पत्नी ने एक पुत्री को जन्म दिया और इसी के
ाथ उसका प्रोमोशन हो गया और वह फिर प्रयाग में नियुक्त
ो गया।

अब उसके पिता भी उसी के पास आकर रहने लगे।

## छः

इस बार प्रयाग में जो कोठी उसे रहने के लिए मिली वह
ाफ़ी विशाल थी। विस्तृत लान और दस से ऊपर कमरे।

नौकर-चाकर जो थे वे अलग।

कुछ दिनों बाद उसने एक नई कार भी खरीद ली और फिर घूमना शुरू किया। वे लखनऊ गए, वाराणसी गए, और अयोध्या व चित्रकूट भी गए।

मिर्जापुर का तो पता नहीं उसने कितना दौरा किया, चुनार का किला, मझूरी डैम, अष्टभुजा का मन्दिर, वच प्रपात, टांडा फाल, विढमफाल और गोविंद गढ़, इन सबका दौरा बजरिए कार के सपरिवार किया गया।

वे कौशाम्बी भी गए, जो कभी उसी राजा उदयन की राजधानी थी, जिसकी चर्चा कालिदास ने 'उदयन कथा कोविद ग्राम वृद्धान्' कहकर मेघदूत में की है।

विनीता से वह फिर भी नहीं मिला। मगर उससे क्या ? मिलने या न मिलने से स्नेह और ममता पर क्या प्रभाव पड़ता है ? न पाने और न मिलने से प्रेम बढ़ता ही है, कम नहीं होता।

प्रयाग में इस बार आकर यतीन कुछ उदास रहने लगा। इस उदासी के कई कारण थे। पहिला कारण तो यह था कि वह विनीता की तरफ से बड़ा दुःखी था, क्योंकि उसने शादी नहीं की थी। वह सोचा करता था कि अपनी प्रिय वस्तु को दुःखी देखना ही क्या मनुष्य की नियति है ? वह उसे भूलने की कामना करता था और याद करने की भी। जो चीज जितनी दूर होती है, वह उतनी ही और सुन्दर हो जाती है।

एक तरफ तो वह विनीता की ओर से दुःखी था तो दूसरी ओर वह पत्नी को लेकर भी कभी-कभी काफी परेशान हो जाता था। उसने पत्नी को अपने और विनीता के बारे में सब कुछ बतला दिया था और नतीजा यह था कि पत्नी कहती थी कि तुमने अपना प्यार मुझे पूरी तरह कभी नहीं दिया। सचाई यह थी कि यतीन अपनी पत्नी से अनन्त प्रेम करता था और इसी कारण कभी-कभी झल्ला भी उठता था। अगर वह पत्नी से प्रेम

करता होता, तो वह उस पर गुस्सा क्यों करता ? गुस्सा तो
उसीसे करते हैं, जिस पर आपका अधिकार होता है, जिससे
प्रेम करते हैं।

सारी स्थिति को लेकर यतीन काफी उद्विग्न हो उठता था
सोचता था कि जब उसका अपने ऊपर ही अधिकार नहीं है
वह दूसरों पर क्या अधिकार करेगा ? वह स्वयं अपने में
पराजित था।

उदासी का दूसरा कारण उसकी नौकरी थी। दस सा
नौकरी करते-करते वह ऊब चुका था। रोज वही दस बजे से
पांच बजे तक की कैद। रोज वही छोटे बड़े का अन्तर और
अफसर की वर्ण-व्यवस्था।

वह सोचता कि देश में इतनी गरीबी है और वह इतने
ठाठ से रहता है। चारों ओर फैला हुआ भ्रष्टाचार और अप-
व्यय उसकी आत्मा को बेहद दुःख पहुंचाता था। हालांकि ऐसे
भी क्षण आते थे, जब वह भी यह सोचता था कि काश, वह
भी रिश्वत ले सकता।

नौकरी से पहिले वह राजनीति के क्षेत्र में एक मुक्त-जीवन
की कामना करता था, जबकि जी इस तरह रहा था, जैसे
पिंजरे में बन्द एक ऐसी चिड़िया हो, जिसके कि पंख काट डाले
गए हों।

वह बार-बार सोचता कि नौकरी छोड़ दे और पूरी तरह
साहित्य व सार्वजनिक सेवा में जुट जाए। मगर नौकरी छोड़ने
की उसमें हिम्मत नहीं थी। रोज उसे ऐसे लोग मिलते जो सौ
रुपये की नौकरी पाने की लालसा से उसके पास आते थे।
इसके अलावा उसके पास नौकरी के अतिरिक्त और कुछ सहारा
भी नहीं था।

इतनी ऊब और सफरत के बाद भी उसने काम नहीं छोड़ा
उसमें यहां भी वही कायरता दिखाई, जो कि विनीता के संदर्भ

उदासी के साथ-साथ उसे घबराहट, व्याकुलता व डर ने भी बुरी तरह घेर लिया। उसके पेट में हर समय दर्द की एक ऐंठ उठती रहती जो उसे कुछ भी नहीं करने देती।

वह बार-बार की बात को लेकर बेहद परेशान रहने लगा उसकी भूख एकदम गायब हो गई। वह रात-रात भर महीनों तक जागता रहता और इसी स्थिति में दफ्तर भी जाता रहता।

गहरी उदासी के कारण कभी-कभी वह इतना बदहवास हो जाता कि बच्चों की भांति फूट-फूटकर रोने लगता। दिमाग का बुद्धि वाला भाग एकदम ठीक रहा, पर भावनाओं वाला भाग एकदम टूट गया। अपनी स्थिति पर खुद ही तरस आने लगा।

कुल मिलाकर वह काफी कष्ट में था। शरीर का कोई भी कष्ट दिमाग के कष्ट का मुकाबला नहीं कर सकता। उसे याद था कि इसी डिप्रेशन के कारण उसके दो मित्रों ने आत्म-हत्या की थी। इन दोनों में से एक तो सांड की तरह बलवान था। मगर इस बीमारी ने उसे खा डाला।

यतीन दिल्ली गया और एक मनोवैज्ञानिक से मिला। उसने मनोविश्लेषण की सलाह दी। इस कार्य के लिए वह उसे एक घंटे का समय देता था और प्रतिदिन चालीस रुपये लेता था। यतीन कोच पर लेट जाता था और जो भी मन में आता था उसे उसी भाषा में कहता जाता था।

मनोविज्ञान की भाषा में इसे 'फ्री एसोसिएशन' कहते थे। उसने सारे डर संकोच और शालीनता को ताक पर रखकर इस पद्धति का पूरा-पूरा पालन किया। मगर कोई खास राहत नहीं मिली। कोच से उठते हुए उसे अच्छा महसूस होता था, पर थोड़ी देर बाद वह फिर वहीं गड्ढे में पहुंच जाता था।

मनोवैज्ञानिक के एक महीने के इलाज में यह नौबत आ गई कि उसकी पत्नी को कुछ आभूषण बेचने पड़े।

मनोवैज्ञानिक को छोड़कर यतीन मनोचिकित्सक के पास

गया। डाक्टर के अनुसार सारी बीमारी शारीरिक थी औ
दवाओं से ठीक हो जानी चाहिए थी। उसने यतीन को कु
दवाइयां दीं, जो मस्तिष्क को शान्त रखती थीं, नींद लाती थ
और उदासी से लड़ती थीं।

इस इलाज से जरूर कुछ प्रभाव हुआ। मगर उतना नहीं
जितना कि अपेक्षित था। महीनों के बाद महीने बीत गए। ज
भी दवा दी जाती थी, वह थोड़े दिनों बाद उसके शरीर का ए
हिस्सा बन जाती थी और असर करना बन्द कर देती थी। अ
में चलकर तय किया गया कि उसे बिजली दी जाए।

बीमारी के प्रभाव से यतीन गंजा होने लगा और उस
बाल सहसा सफेद होने लगे। उसने खिजाब का प्रयोग शु
किया। जवान दीखने से जवान रहने में काफी मदद मिल
है। कम-से-कम यतीन का तो यही विश्वास था।

## दो

मानसिक रोगियों को बिजली दो तरह दी जाती है।

पहिला ढंग तो यह है कि आदमी होश में रहे और
बिजली का झटका दे दिया जाए। झटका लगते ही इंसान
है वह बेहोश हो जाता है।

दूसरा ढंग है कि रोगी को पूरी तरह बेहोश कर लि
जाए और फिर बिजली दी जाए।

यतीन को बिजली बेहोश करके ही दी गई। आपरे
थियेटर में घुसते ही उसे अजीब-सी दहशत हुई। ठीक वैसी
जैसे किसी मुजरिम को उस वक्त होती होगी, जब वह फ
का फंदा देखता होगा। चारों तरफ सफेद कोट पहिने डा

और नर्सें, बिस्तर के पास रखे आक्सीजन से रबर-ट्यूब और कोने में रखी हुई बिजली देने की मशीन।

बिजली की मशीन से तो वाकई यतीन बुरी तरह डरता था। वह जानता था कि उसे बेहोश किया जाएगा, फिर उसके दांतों के बीच रुई लगाई जाएगी, ताकि झटके के कारण वे टूट न जाएं या जीभ को न कुतर लें और फिर माथे पर कहीं प्लग लगाकर बिजली दी जाएगी।

मगर यतीन के डरने से होता ही क्या था? यदि डाक्टर लोग कहते थे कि उसके लिए यही इलाज उपयुक्त है, तो उसे बिजली लेनी ही थी। और कोई चारा ही नहीं था।

यतीन को कुछ पता नहीं लगा कि क्या हुआ। उसे बेहोश किया गया और बस। जब वह होश में आया, तो करीब दो घंटे हो चुके थे। उसने नर्स से पूछा, तो उसने उत्तर दिया कि बिजली दे दी गई और अब आप बाहर कुर्सी पर बैठें।

बाहर आने पर उसने देखा कि उसकी पत्नी व उसके ससुर उसकी प्रतीक्षा में बाहर बैठे हैं। उन्हें देखते ही यतीन को रोने का दौरा-सा आ गया। वह बच्चों की तरह फूट-फूटकर रोने लगा। जब रोना बढ़ गया, तो शोभा डाक्टर के पास गई।

डाक्टर ने बताया कि बिजली लगने के बाद लोग कुछ [illegible] हो जाते हैं और यह रोना भी उसी का एक अंग है।

इसके अलावा बिजली लगने के बाद यतीन की याददाश्त [illegible] के लिए [illegible] हो गई। उसे याद ही नहीं रहा [illegible] जाना है? धीरे-धीरे सारी [illegible] तीन-चार घंटे बाद वह काफी [illegible]

[illegible] और उदासी भी चली गई। [illegible] लेनी पड़ी। इसके [illegible] बिजली दी जाती। बार-बार

बिजली लगने पर भी यतीन बिजली देने वाली मशीन से काफ़ी
खौफ़ खाता रहा।

यतीन की स्थिति धीरे-धीरे सुधरने लगी। उदासी के
बादल छंटने लगे और नींद व भूख वगैरह भी नार्मल हो गई
दवाई वह बराबर खाता रहा। रोग काबू में तो आ गया; प
उसके दौरे बीच-बीच में बराबर पड़ते रहे।

यतीन के विभाग के सीनियर अधिकारियों ने उसे दिल्ल
नियुक्त करने का फ़ैसला किया, ताकि उसका इलाज ठीक तर
चल सके। जिस अफ़सर ने एक बार उसे खराब रिपोर्ट दी थ
उसने सबसे ज़्यादा मदद की।

वह भारत सरकार के एक मंत्रालय में डिप्टी सेक्रेटरी
पद पर नियुक्त हो गया और लगन व परिश्रम के साथ अ
सारे काम करने लगा।

## तीन

उपस्थित होने के बाद यतीन को सरकार की मशीन
पास से देखने का मौका काफ़ी मिला। काफ़ी महत्वपूर्ण क
जाते थे और उन पर निश्चित समय के भीतर कार्यवाही क
पड़ती थी।

कुल मिलाकर सचिवालय में जितना अनुशासन और
के प्रति निष्ठा है, वह नीचे के दफ़्तरों में नहीं है।

वह फ़ाइलों पर टिप्पणियां लिखता, जो सभी अधिकारियों
के पास जाती थीं और ऐसी मीटिंग भी अटेंड करता, ि
चपरासी तक आते थे।

कुल मिलाकर वह कोई तीन वर्ष सचिवालय में रहा, ि

दौरान उसे सरकारी वायुयान के द्वारा सीमावर्ती इलाकों का दौरा भी करना पड़ा। उसने अमृतसर जाने पर स्वर्ण मन्दिर व जलियांवाला बाग देखा और राजस्थान जाने पर भयंकर वीरान इलाकों की यात्राएं भी कीं।

उससे मिलने काफी सीनियर अफसर आते थे और यतीन अपने कमरे में बैठकर उन दिनों की बातें सोचा करता था, जब कि उसे खाना भी एक वक्त ही मिलता था। मगर उसका यह अहंकार कुछ क्षण ही रहता। थोड़ी देर बाद ही उसे भर्तृहरि का वह श्लोक याद आ जाता, जिसमें कवि ने कहा है कि वे सुन्दर नगर, वे शक्तिशाली सम्राट, वे सामंत और दरबारी, वे पंडित और विद्वान् चंद्रमा के समान सुन्दर वे युवतियां, वे चारण लोग और उनकी कथाएं, यह सब कुछ जिसके प्रताप से रसातल को चले गए, उस काल को नमस्कार है। कालाय तस्मै नमः।

वह सोचने लगता कि सचिवालय की इन शानदार इमारतों में न जाने कितने देशी और विदेशी बैठे हैं, सीना तानकर बैठे हैं और अब वे सब के सब किसी कब्रिस्तान में दबे पड़े हैं। इस सब सोचने का परिणाम यह रहा कि यतीन को मृत्यु के बारे में सोचने का काफी शौक हो गया। मृत्यु! अन्त में सबको हराकर जीतने वाली मृत्यु। मृत्यु जो चपरासी और सचिव में कोई भेद नहीं बरतती।

उसे लगा कि प्रकृति से बड़ी समाजवादी वस्तु और कोई नहीं है। धूप या वर्षा पड़ती है, तो अमीर और गरीब सब पर पड़ती हैं और चांद निकलता है, तो सबके लिए निकलता है। भेदभाव तो मनुष्य करता है, प्रकृति नहीं करती। जैन दर्शन में प्रकृति को जो मूल माना गया है वह उसे उचित ही लगा।

उपसचिव की हैसियत से उसे कई बार मंत्री की कोठी पर जाना पड़ा। वहां उसने सेनाध्यक्षों, अन्य मंत्रियों और विशिष्ट व्यक्तियों से देखा।

उसे उस पार्टी की याद भी आई, जिसमें उसने पंडित जवाहरलाल नेहरू को चाय पीते और लान पर नंगे पैर घूमते देखा था। यह घटना उन दिनों की थी जबकि वह विश्वविद्यालय में पढ़ता था और उत्तर प्रदेश के तत्कालीन राज्यपाल के कहने पर 'कुलपति शिविर' में शामिल हुआ था।

अपने उपसचिव होने के कार्यकाल में भी उसने एक बार ऐसी पार्टी में चाय पी जिसमें प्रधानमंत्री शामिल थीं।

वह सोचा करता कि भाग्य जैसी कोई चीज जरूर है, जो कुछ लोगों को इतना बड़ा बनाती है और बाकी को वहीं छोड़ देती है। मगर इसका यह अर्थ नहीं कि नियतिवाद के कारण आदमी काम करना ही छोड़ दे।

इस संदर्भ में उसे गीता से बड़ी अनुरक्ति थी। वैसे गीता में भी ऐसी बातें हैं, जो कहीं-कहीं एक-दूसरे का विरोध करती दिखती हैं; पर फिर भी मनुष्य ने अदृश्य को ढूंढने के लिए या अच्छी जीवन यापन के लिए जितने भी दर्शन बनाए हैं, उनमें कदाचित् गीता सबसे ज्यादा तार्किक है।

हां, अलबत्ता सरलता के लिहाज से बाइबिल दिल को कहीं ज्यादा छूती है।

यतीन हमेशा मन्दिरों, मस्जिदों और गिरजाघरों में जाता रहता, जहां वह अपने-आपको अपने से बड़ी शक्ति के सम्मुख पूरी तरह समर्पित करने की कोशिश करता। ये क्षण वास्तव में मुक्ति के क्षण होते थे।

## चार

यतीन के पिता अनेक वर्षों से उसी के साथ रहते थे। ... आधा बन्द रहता और आधा किराए पर

उठा दिया जाता। कस्बे के मतीन बाबू सारे बन्दोबस्त करते थे।

जब कभी यतीन और उसका परिवार कस्बे जाता, तो पूरा मकान खाली करवा लिया जाता था। आंगन में अमरूद और यूकलिप्टस के पेड़ काफी बड़े हो गए थे।

कस्बे के मकान में भी यतीन और शोभा रहने-सहने का सारा सामान रखते थे। छाता, लालटेन, लाठी और बाल्टियों-बर्तनों से लेकर एक छोटी-सी लाइब्रेरी तक वहां मौजूद थी। मस्ती डाकरी, कैलेंडर से फाड़े गए प्राकृतिक दृश्यों के शीशा लगे फ्रेम वाले चित्र और सन्दूक वगैरह, सब कुछ वहां था।

यतीन जब भी कस्बे जाता, तो पाता कि कुछ लोग इसी बीच मर गए हैं। जो लोग कभी बच्चे थे, वे अब युवा होते जा रहे हैं। सारा-का-सारा माहौल नया-सा लगता। यतीन का वही पुराना कस्बा अब पराया होता जा रहा था।

यतीन अब लगभग पचास वर्ष के आसपास हो गया था। उसके पिता की आयु अस्सी वर्ष से ऊपर थी। यतीन उनसे ज्यादा बातें नहीं करता था। वह उन दुःखों को कभी नहीं भुला था जो उनकी अकर्मण्यता के कारण उसने व शेष परिवार ने कभी भोगे थे।

शोभा उनका पूरा खयाल रखती थी और उनके कपड़े, बीड़ी, माचिस और जूतों वगैरह का इंतजाम वही करती थी।

उम्र ज्यादा होने पर भी पिताजी का गुस्सा उतना ही था, जितना कि यतीन के बचपन में था, मगर अब यतीन उन्हें डांटकर उत्तर दे सकता था। जैसे कभी यतीन अपने बाप से डरता था, वैसे ही धीरे-धीरे उसके बाद उससे डरने लगे थे।

आयु के साथ-साथ पिताजी अपंग होते चले गए। उनके कुछ अंगों पर पक्षाघात का प्रभाव भी हो गया। इलाज वगैरह तो होता रहा, मगर यतीन बराबर उनके चीखने-चिल्लाने पर उन्हें

रहता रहा।

पिताजी ने अपनी पराजय स्वीकार कर ली और वे चुप रहने लगे। इसी स्थिति में एक दिन उनका देहान्त हो गया।

यतीन ने अपने जलील बाप की लाश को देखा और देखता ही रहा। बचपन का खूंखार भेड़िया अब निस्पंद होकर अपनी धरती पर पड़ा था।

जब यतीन की मां ने अपनी चूड़ियां तोड़ी और रोना शुरू किया, तब उसे होश आया और वह भी रोने लगा। जैसा भी था, वह उसका बाप था। वह और ज्यादा खराब भी हो सकता था।

यतीन काफी रोया। चिता में आग देते समय तक वह फिर नार्मल हो गया था। श्मशान के पंडे और जमादार वगैरह मुर्दों को काफी निःसंगता के साथ देखते थे। मुर्दों को जलाना तो उनका रोज का काम था। दो दिन बाद श्मशान से मृत पिता की अस्थियां इकट्ठी की और गढ़मुक्तेश्वर जाकर उन्हें गंगा में बहा दिया।

सब कुछ करने के बाद वह तट पर बैठ गया। वह गंगा की ओर देखता रहा और सोचता रहा कि न जाने कितने मुर्दों की अस्थियां युगों-युगों से इस नदी में बहती आ रही है।

घर आकर उसने पिताजी का खाली कमरा देखा और महसूस किया उधर का एक सदस्य कम हो गया। यतीन का लड़का और लड़की भी अब क्रमशः सोलह व ग्यारह वर्ष के हो चुके थे और वे भी सब कुछ समझते थे।

यतीन को तो दृढ़ विश्वास हो गया था कि मृत्यु जो है वह जन्म से कहीं ज्यादा मार्मिक घटना है। उसे उदासी के दौरे ने फिर जकड़ लिया। बाद में चलकर फिर बिजली सेनी पड़ी।

यतीन के पिता ने यतीन की माता के साथ कभी अच्छा व्यवहार नहीं किया था, मगर मां थी कि विधवा होने के बाद

सबसे ज्यादा रोई। इसके बाद वह खुद उस कमरे में ज्याः वक्त गुजारने लगी, जिसमें कि उनके पति ने अन्तिम सांस ली सब कुछ कष्ट सहने के बाद भी उन्हें अपने पति से कितना प्या था, यह देखकर यतीन चकित भी हुआ और दुःखी भी। थोड़े दिनों बाद घर का कारोबार फिर उसी तरह चलने लगा।

यतीन ने सोचा कि एक दिन आएगा, जब कि वह भी इसी तरह मरेगा, उसे बाँसों की अर्थी पर लिटाया जाएगा और उसका प्यारा बेटा उसकी चिता में आग देगा और इन सबके बावजूद दुनियां के जो कामकाज हैं, वे इसी तरह चलते रहेंगे। पुराने पत्ते झड़ेंगे और नए पल्लव निकलेंगे। ऋतुएं और फूल सब कुछ इसी तरह रहेंगे, सिर्फ वह नहीं रहेगा। सृष्टि का यह निर्मम क्रम सदा ऐसे ही चलता रहेगा।

## पांच

यतीन को अपना कस्बा अब अच्छा नहीं लगता था। बीसों वर्ष तक नगरों और महानगरों में निवास करने के बाद वह यही चाहता था कि उसका भी किसी नगर में मकान हो, जहाँ कि वह रिटायर होने के बाद रह सके और साहित्य के प्रति पूरी तरह समर्पित हो जाए।

शोभा के एक रिश्ते के भाई देहरादून में डिस्ट्रिक्ट व सेशंस जज थे। उन्होंने अपनी कोठी के लिए बहुत सारी जमीन खरीद रखी थी। उन्होंने यतीन को देहरादून में ही मकान बनाने की सलाह दी। देहरादून यतीन को भी बेहद पसन्द था। पर्वतों की नीली श्रेणियों के बीच बसी एक घाटी सी हरी घाटी। देहरा-

हर दिल्ली से भी दूर नहीं पड़ता था। जज साहब की मदद से उसने अपने लिए भी एक काफी बड़ा प्लाट देहरादून में ही खरीद लिया।

रिटायर लोगों की इस बस्ती में गर्मियों में काफी भीड़ हो जाती थी, क्योंकि मसूरी या चकरौता जाने वाले यात्री देहरादून तक रेल से आते थे। देहरादून से आगे रेल नहीं जाती थी।

यतीन ने एक काफी छोटा प्लाट मेरठ में भी खरीद लिया। मेरठ में प्रमुख आकर्षण यह था कि वह दिल्ली के एकदम पास था।

नगर में रहने के निश्चय के बाद यह जरूरी हो गया कि कस्बे का पैतृक मकान बेच दिया जाए। यतीन के इस विचार को जानकर माता काफी दुःखी हुईं और रोने लगीं। उन्हें उस घर से प्यार था, क्योंकि यहीं वे पैदा हुई थीं, यहीं उनकी माँ, दीदी, बुआ व पिताजी का देहान्त हुआ था और यहीं उनकी शादी हुई थी और बच्चे हुए थे। मगर क्योंकि यतीन उनका इकलौता लड़का था और खुद वह काफी वृद्ध हो चुकी थी, उन्होंने कुछ दिनों बाद मकान बेचने के संदर्भ में अपनी सहमति दे दी। हालांकि उस समय भी उनकी आँखों में आँसू थे।

मकान बिकने में कई मास लग गए। या तो कोई ग्राहक आता ही नहीं था और यदि कोई आता था, तो वह बेहद कम कीमत देना चाहता था। मोल-भाव चलता रहा। अन्त में चन्दर एक व्यक्ति ने उस मकान को चालीस हजार रुपयों में खरीद ही लिया। रजिस्ट्री वगैरह के लिए यतीन व उसकी माता अपने कस्बे गए और वहां से कचहरी गए।

चलते वक्त यतीन ने अपने उस पैतृक घर को आखिरी बार देखा। अपना घरबार हमेशा के लिए छोड़ना दुःखद होना स्वाभाविक था। उस कस्बे से और उस घर के हर कोने से उनकी कोई-न-कोई स्मृति जुड़ी थी।

मकान की बिक्री की रजिस्ट्री होने के बाद यतीन की मा
फिर रोने लगीं। पर कस्बे के एक-एक ऐसे घर में गईं, ज
उनकी जान-पहचान का कोई व्यक्ति अभी तक जीवित था
इसके बाद यतीन और उसकी माता दोनों वापस शहर लौट आ

मकान बेचने के बाद यतीन सहसा अपने को निराश्रय मह
ने लगा। चिड़िया तक अपना घोंसला रखती है और वह बा
फिर छिपाने के लिए वहीं कोई ऐसी जगह नहीं थी, जिसे
वह अपनी कह सकता।

शोभा ने फैसला किया कि देहरादून का मकान जल्दी-से-जल्दी बनवाया जाए। यतीन को यह सलाह बहुत पसंद आई। उसे उन लोगों पर काफी तरस आता, जो सारी उम्र होटलों में रहते हैं।

उनकी जान-पहचान के एक ब्रिगेडियर तो ऐसे थे, जिन्होंने अपना शानदार मकान बनवाया, पर उसे किराये पर चढ़ाया और खुद होटल में रहने लगे। यतीन को ऐसी हरकत कतई पसन्द नहीं थी। वह चाहता था कि उसका अपना मकान हो, जिसमें लान हों, फूल हों और शीशम, लीची, चीड़, अशोक, अमलतास, कनेर और गुलमुहर के पेड़ हों। साथ में अनार और अमरूद हों तो और भी अच्छा। केला तो खैर लगाना ही चाहिए। वर्षा का सच्चा सौंदर्य तभी पता लगता है, जबकि वह केले के गाछों पर गिर रही हो।

वह चाहता था कि उसके ड्राइंगरूम में हजारों किताबें हों, सोफासेट व कालीन हो, झाड़फानूस हों और टेबिल लैंप लगी एक चमचमाती हुई पढ़ने की मेज हो। वह उन दिनों की प्रतीक्षा करने लगा जबकि ऐसा होगा।

कुछ लोग होते हैं जो केवल भविष्य में ही जीते हैं और उसके लिए वर्तमान को कत्ल करते जाते हैं। किसी हद तक यतीन भी ऐसे स्वप्नदर्शियों में से था।

## छः

सब काम चलते रहे और साथ-साथ यतीन का डिप्रेशन भी बढ़ता रहा। दवाइयां तो चलती ही रहीं। वक्त जरूरत बिजली भी दी जाती रही। कभी-कभी तमाम दवाओं के बावजूद वह हफ्तों तक नहीं सोता था और फिर भी दफ्तर जाता रहता था और लिखता-पढ़ता रहता था। उसने कई बार शराब पीना शुरू करने की सोची। मगर उसकी कायरता ने उसे बचा लिया। वह जानता था कि यदि शराब से उसे कोई राहत मिली, तो वह निश्चय-पूर्वक शराबी हो जाएगा। जिसका अर्थ होगा घर का सत्यानाश होना। ऐसा वह कतई नहीं चाहता था। उसके दो बच्चे थे, बूढ़ी मां थी, शानदार वर्तमान और आकर्षक भविष्य था और वह इसको खत्म नहीं करना चाहता था।

दिल्ली में आकर उसकी साहित्यिक गतिविधियां काफी बढ़ गई थीं। किताब के बाद किताब निकलती गई। रिसालों में वह और भी ज्यादा छपने लगा और बड़ी बात तो यह कि वह राजधानी की एक ऐसी साहित्यिक संस्था का सदस्य हो गया, जहां कि चोटी के लेखक और कवि आते थे।

उसकी बड़ी इच्छा यह थी कि वह किसी ऐसे विभाग में जाए, जहां साहित्य से सम्बन्धित काम-काज होता हो। मगर हजार कोशिशों के बावजूद भी वह ऐसी जगह नहीं जा सका। वह उन्हीं फाइलों और दौरों से निबटता रहा, जिनका कि साहित्य से दूर का भी कोई सम्बन्ध नहीं था।

उसके देखते-देखते न जाने कितने अयोग्य लोग साहित्य के नाम पर विदेश घूम आए, बड़े अखबारों के सम्पादक बन गए और पता नहीं क्या-क्या प्रगति करते रहे, पर वह यहीं रहा, जहां कि था।

ऐसी परिस्थितियों में उसे ईर्ष्या होती, निराशा होती पर

मन में वह यही सोचता रहा कि आखिर कुछ ऐसी चीज जिसमें [illegible] को छोड़कर और कोई लिखना चाह न करती। [illegible] वही बनता है, जो कि [illegible] रहता है। मन से बड़ा [illegible] और कोई नहीं होता।

## सात

काफी दिनों बाद सतीश को प्रयाग का दौरा मिला।

इलाहाबाद से उसे अत्यन्त लगाव था। जैसे-जैसे गाड़ी इलाहाबाद की दिशा में बढ़ती जाती, वैसे-वैसे ही उसकी उत्सुकता और ज्यादा होती जाती। पुरानी परिचित जोरबाग और फिर वही अपना पुराना इलाहाबाद।

वह डाक-बंगले में ठहरा और सरकारी काम-काज में लग गया।

सहसा उसने सोचा कि इस बार विनीता से जरूर मिल आए, जैसे ही उसे फुर्सत मिली, वह एक अधिकारी की गाड़ी में विनीता से मिलने चला गया।

विनीता से मिले हुए उसे कोई पच्चीस वर्ष हो गए थे। वह जब पढ़ता था, तब वह पच्चीस का रहा होगा और विनीता बाइस-तेइस की। अब वह लगभग पचास वर्ष का अधेड़ था, जिसके कि आधे बाल उड़ चुके थे और जो काफी भारी भरकम हो चुका था।

इतने दिनों बाद विनीता कैसी हो गई होगी, यह वह बराबर सोचता रहा। वह बच्चों की तरह सोचता रहा कि कहीं ऐसा न हो कि विनीता घर में न हो या घर पर हो और उसे

पहिचान ही न पाए या फिर पहिचान तो ले, पर अपमानित करके घर से निकाल दे। मगर ऐसा कुछ नहीं हुआ।

विनीता घर पर थी और अकेली थी। उसने यतीन को तुरन्त पहिचान लिया और इस तरह सोफे पर बैठाया जैसे कि वे अभी कल ही मिले हो। उसने स्टोव जलाया और चाय का पानी रख दिया। साथ-ही-साथ यतीन के हजार मना करने के बावजूद उसके लिए आलू की टिकिया बनाने लगी।

यतीन उसे देखता रहा। वही पुरानी विनीता, एकदम वही। वैसी ही देहयष्टि, वैसी ही खुशमिजाजी और वैसी ही चचलता। सिर के बाल सफेद होने लगे थे और वह चश्मा भी लगाने लगी थी।

उसके ड्राइंगरूम मे सोफा और किताबें थी और एक कोने में पूजा पाठ की सामग्री रखी थी। एक बेडरूम था और एक छोटा-सा किचन। बाहर छोटा-सा बरामदा जो लताओ से घिरा हुआ था।

चाय बन जाने पर दोनो चाय पीने लगे।

विनीता ने परिवार व बच्चों के बारे मे पूछा और यतीन के डिप्रेशन के बारे में चिंता प्रकट की।

इसके बाद पुराने प्रोफेसरो और साथ पढने वाले छात्राओ के बारे मे बातचीत चलती रही।

यतीन को महसूस ही नहीं हुआ कि वह विनीता से पच्चीस वर्ष बाद मिल रहा है।

काफी बातचीत के बाद यतीन ने विदा ली और अपनी कुछ किताबें विनीता को दी।

बंगले के गेट तक उसे छोड़ने विनीता आई। गेट बन्द करते हुए उसने कहा, 'फिर कभी आइएगा।'

हास्य-व्यंग्य कहानियां

लिखता तो शायद पाँच सौ रुपये में ही सौदा तय हो जाता। वैसे पचास रुपये भी कम नहीं होते।

डा० लक्ष्मी नारायण लाल की खुशकिस्मती देखिए कि इन लोगों में वे भी शामिल हैं। लाल साहब को पहिली बार परिमल में ही देखा था, उनकी शादी बाद में ही देखने को मिली। बाद में पता कर न जाने कितने लाल देखे—डाक्टर लाल, बीमार लाल, प्रयाग के एक बड़े कालिज के शार्दिल पर भागने को भागते लाल, गोष्ठियों में गयरा चीखते हुए लाल, प्रयाग छोड़कर दिल्ली में मेरे मोहल्ले में बसने वाले और अचानक दिल्ली विश्वविद्यालय छोड़कर कमीशन करने वाले डाक्टर लाल। मरकूनट के पसीने से 'अब्दुल्ला दीवाना' होने तक के अनन्त रूप। मुझे यह खुशी है कि जैसे ही वे मेरे मोहल्ले में आए, मेरा दिल्ली से तबादला हो गया। वह प्रयाग से दिल्ली गए, मैं दिल्ली से प्रयाग। उनके चले आने से प्रयाग की साहित्यिकता को जो क्षति पहुंची थी, वह मुझे पूरी करनी पड़ी। परोपकाराय सतां विभूतयः।

लक्ष्मी नारायण लाल ने उपन्यास भी लिखे कहानियाँ भी लिखीं, नाटक भी लिखे और पारसी थियेटर तथा जयप्रकाश नारायण पर भी लिखा। यानी बहुमुखी प्रतिभा के मामले में वे जयशंकर प्रसाद के समकक्ष उतरते हैं। अपने हावभाव, पात्रों के संवाद और रहने सहने के स्टाइल से वे आगा हश्र काश्मीरी के हम वजन हैं। कड़ुए तेल की मालिश, दातुन और बोरा-खाल के संदर्भ में 'अहा ग्राम्य जीवन भी क्या है' लिखने वाले मैथिली शरण गुप्त की भांति प्रकट हैं और 'ग्राम्य' होना, सुन्दर चीजों से प्रेम करना और फिर उनके लिए तड़पना—इन सब मामलों में वे मेरे साथ बैठने के हकदार है। अश्लील बातों को जितने भोलेपन से वे कह जाते हैं उतना शायद आपके लिए संभव नहीं। क्या सादगी है—ठीक वही जिसे देखकर कभी किसी शायर को मरने की इच्छा हुई थी। जहां तक दातुन का प्रश्न है, मेरे खयाल से वे पहिले व्यक्ति हैं जिन्हें मैंने गुलाब की दातुन करते देखा है। ठीक वही निराला का—'अबे सुन बे गुलाब' वाला।

---

। गुजराती के प्रख्यात साहित्यकार चन्द्रवदन मेहता के अनुसार

# पत्नी प्रसंग

आज मैं पत्नियों के बारे में कुछ सोच-विचार करूंगा। पत्नियों के बारे में सोचना हमेशा सुखदायक होता आया और जहां तक पराई पत्नियों का प्रश्न है, स्थिति यह कि उनका चिंतन करना तो सदा से सुख की चरम सीमा होता आया। पत्नियां आम तौर पर उन स्त्रियों को कहा जाता है जिनके पति होते हैं। विवाह के बाद पत्नी जो है वह पति का आधा भाग हो जाती है। शतपथ ब्राह्मण में लिखा है कि 'अर्द्धो ह वा एष आत्मनः यत्पत्नी' जो कि एकदम गलत है क्योंकि पत्नी पति का आधा भाग नहीं बनती बल्कि पूरे इलाके की मालिक हो जाती है। पति बेचारा तो कहीं बचता ही नहीं। मैंने ऊपर पत्नी की परिभाषा दी थी और अब यह जरूरी हो गया है कि गरीब पति की परंपरागत परिभाषा भी दे दी जाए। मोटे तौर पर यह कहा भी जा सकता है कि जो गलती करके न माने, वह मूर्ख है; जो गलती करके मान ले वह इन्सान है और जो बिना गलती किए गलती मान ले वह पति है।

पुराने जमाने बड़े अच्छे थे। वाल्मीकि रामायण में [illegible] और चरित्र हीन पति की भी सेवा करने का आदेश दिया गया है और जहां तक दुष्ट पत्नियों का प्रश्न है, उनके परित्याग की तो खुली अनुमति दी गई है। ये ही तो वे कारण हैं कि वे महान् ग्रन्थ आज भी हमारी संस्कृति के स्तंभ माने जाते हैं। अहिल्या ने इन्द्र के साथ गुप्त रूप में प्यार किया था और इस कारण उसे पत्थर होना पड़ा। इस तरह का खतरा आज कल की पत्नियों को नहीं है क्योंकि वे तो पहिले से ही पत्थर हैं। राजा रामचन्द्र के स्नान के लिए विभीषण ने शृंगार किया ये निपुण वसन्तसयनी युवतियों का सुनिश्चित बंदोबस्त किया और सभी हाथों नारी को नरक का द्वार भी घोषित किया गया। प्राचीन ग्रन्थ [illegible] महिमा। (इस भाग की [illegible] मोदी है और मैं कोई मजाक नहीं कर रहा और हां दोनों के [illegible] ध्यान दीजिए क्योंकि पत्नियों के संदर्भ में वह [illegible]) के अनुसार समाज में उनके [illegible] की ही प्रतिष्ठा होनी थी। और इस सब के बावजूद पति को

था वह हर हालत में स्त्री का परम आभूषण माना जाता था। नारी नाम पर नार्या भूषण भूषणादपि। इन सब बातों को पढ़कर शरीर के मुख नामक अंग में यह पंक्ति बरबस निकल पड़ती है — वे दिन भी कितने सुन्दर थे। और फिर बच्चन की दूसरी पंक्ति याद आती है—जो बीत गई, सो बात गई। पतियों का वह स्वर्णयुग वाकई बीत गया।

इसके बाद हालत बदली और बदलती ही चली गई। बहुपत्नी के स्थान पर बहुपति की प्रथा आ गई जिसे कुमारी द्रौपदी ने विशेष प्रतिष्ठा दी। कन्याओं ने अपने पति स्वयं ही चुनने शुरू कर दिए और स्वयंवर नाम के टेस्ट मैचों की शुरुआत हुई। आल्हा, ऊदल और मलखान वगैरा ने रूपसियों की प्राप्ति के लिए बावन युद्ध लड़े। परिणाम यह निकला कि एक ओर तो देश कमजोर हुआ और दूसरी ओर नाना भट्ट नामक अवतार ने सारी लड़ाइयों का आंखों देखा हाल लिखकर लाखों रुपये पैदा किए। इन सब सूरमाओं में से किसी की पत्नी ने उसे सुख दिया हो इसका कोई प्रमाण सारे वीरगाथा—काल के साहित्य में कहीं नहीं मिलता। रानी सारंधा ने एक घोड़े को लेकर अपने पति को औरंगजेब आलमगीर से भिड़वा दिया था। घोड़ा बड़ी चीज है, पति तो आता-जाता रहता है। मैकबेथ की धर्म पत्नी ने अपने पति से अपने ही राजा की हत्या करवा दी थी और वह भी तब जब कि राजा उनका अतिथि था। अतिथि सत्कार का इससे बेहतरीन नमूना शेक्सपियर भी पेश नहीं कर सके। सुकरात की बीवी यदि इतनी मधुरभाषिणी न होती तो वह गरीब चौराहों पर बातचीत न किया करता जिसके कारण उसे तो जहर का प्याला पीना पड़ा और गम गलत करने के लिए उसकी पत्नी को शायद शराब पीनी पड़ी। ज्यादा तार्किक पत्नी होने के कारण ही सर टामस मूर की देह के हेनरी अष्टम ने दो अध्याय करवाए थे। अद्वैतवाद से द्वैतवाद वाली स्थिति। लिंकन की पत्नी मक्खन की इतनी शौकीन थी कि कैबिनेट मीटिंग के बीच मक्खन की प्याली राष्ट्रपति के मुंह पर फेंककर मारा करती थी। निशाना आम तौर पर ठीक ही बैठता था जैसा कि लिंकन के चित्रों से भी प्रकट होता है। मक्खन की प्यालियां जो टूटी होंगी सो अलग।

समय के साथ-साथ वाकई सब कुछ बदलता चला गया।

हालत यह आ गई कि घर में यदि पत्नी है, तो अब आपको खुद आत्महत्या करने की जरूरत ही नही रही। पत्नी का प्रेमी आएगा जो आपकी आत्महत्या कर देगा। जहां तक वक्त के बदलने का प्रश्न है, एक लोक कवि की वाणी याद आती है जो आपकी खिदमत में अर्ज करता हूं। सतयुग मे सत मइया, द्वापर मे कृष्ण कन्हैया, फिर हाथी से पार जवइया, अब तो भूलत है नइया···

मेरे विचार में अब समय आ गया है जब कि 'घड़ियाल बचाओ अभियान' के स्थान पर 'पति बचाओ अभियान शुरू किया जाना चाहिए। सब कुछ सुधरता जा रहा है मगर पत्नियां हैं कि हर मॉडल पिछले से खराब ही निकल रहा है। आस्ट्रेलिया में ऐसी कार ईजाद कर ली गई जो मालिक की आवाज पर चलती है मगर अभी तक ऐसी बीवी नहीं बनी जो मियां के कहने के मुताबिक चलती हो। खाली चीज ही ऐसी है कि अच्छे-अच्छे मोहद्दे शहीद हो गए। इग्लैंड मे नैपोलियन का वह कोट नीलाम हो रहा है जो उसने वाटरलू के युद्ध मे पहिना था। यहां पतियों के कोट तो खैर पहिले ही उतर चुके सिर्फ उनकी पतलून उतरनी बाकी है। वैसे भी जहां तक वाटरलू की लड़ाई का प्रश्न है वह तो वे शरीफ इसान उसी वक्त हार गए थे जब कि फेरे फिरे थे। अब तो बेचारा पति घर मे बैठता है, बच्चो को दूध पिलाता है और किस्मत को रोता है और किस्मत जो है वह शानट की नई साड़ी पहिन रेलवे इंजनो की ब्यूटी परेड देखने स्टेशन जाती है या उन महान् ब्रिटिश कलाकार को याद करती है जिसने अभी-अभी यह घोषणा की है कि युवतियो के भविष्य के बारे मे यदि कोई सटीक भविष्य वाणी की जा सकती है तो वह केवल उनके उरोजो को ही देखकर की जा सकती है। मैंने ऊपर रेलवे इंजनो की सौंदर्य प्रतियोगिता की चर्चा की थी। इत्तिफाक देखिए कि उनमे भी जो इंजन सबसे ज्यादा खूबसूरत चुना गया, उसकी उम्र कोई पन्द्रह या सोलह साल से कम ही थी। मानो कि जिस उम्र मे लड़की की खूबसूरती निखरती है, उसी मे रेलवे इंजन भी अपने शबाब पर आया है। दूसरे शब्दों में लड़की मे और रेल के इंजन मे कोई खास फर्क नहीं। अब य बचा नही, बला हो गई।

मगर खेद की बात यह है कि इस पति नाम के गधे को को
बचा नहीं सकता। बद्रीनाथ धाम के कपाट दुबारा खुल सकते
क्योंकि महन्त जी की चांदी की छड़ी भीतर रह गई थी पर पति
जो है उसकी स्थिति कोई नहीं सुधार सकता। वैज्ञानिकों
प्रयोग के बाद बतलाया है कि युवतियों के अधरों में कभी-कभी
संक्रामक रोगों के कीटाणु होते हैं और उन्हें चूमना उन रोगों
को अर्जित निमन्त्रण देने के बराबर है मगर इससे क्या
गढ़वाल के गांव में एक बकरा है जो बीस सेर दूध रोज देता है
और इस कारण श्वेतक्रांति का अग्रदूत कहलाने का उतना ही
हकदार है जितना कि रक्तक्रांति के संदर्भ में स्तालिन पर पति
नाम के पशु या पक्षी से आप किसी क्रांति की आशा नहीं कर
सकते। आदमी पति बना और हाथ से गया। चार्ल्स लैंब और
ओलिवर गोल्डस्मिथ गधे नहीं थे जो सारी उम्र अविवाहित
रहे। डिजरायली और डाक्टर जान्सन ने शादी जरूर की मगर
उनकी पत्नियां उनसे इतनी ज्यादा उम्र वाली थीं कि शृंगार
रस के स्थान पर वात्सल्य रस का ही मजा देती थीं। बीवी की
बीवी और अम्मां की अम्मां। ऐसे लोगों की बात मैं नहीं
करता। आम पति जो होता है वह पिटेगा, फटेहाल रहेगा,
गुलामी भुगतेगा, बेकार करेगा मगर बीवी को नहीं छोड़ेगा।
औरों की क्या कहूं, मेरी अपनी हालत कभी-कभी इतनी नाजुक
हो जाती है कि कही नहीं जा सकती। बात ही कुछ ऐसी है,
वरना क्या बात करनी नहीं आती? कवि के शब्दों में सब कुछ
होते हुए भी स्थिति वही है जो शायद हजार साल पहिले मेरे जैसे
किसी दूसरे पति के साथ रही होगी :

चांदनी में जब गधा गाने लगा
मुझको फिर तेरा खयाल आने लगा

# बीसवीं सदी का जिन्न

प्राचीन काल में यदि किसी व्यक्ति को कोई चीज प्राप्त करनी होती तो वह उसके लिए तप या यज्ञ करता था और पुण्य कार्यों में रुचि लेता था। राजा रघु ने इन्द्र से धन प्राप्ति के लिए यज्ञ किया था और शिव जैसे वर की प्राप्ति के लिए राजा दक्ष की कन्या पार्वती ने तपस्या की थी। केवल तपस्या कहीं कम न पड़ जाए, इस डर से सदा के चतुर इन्द्र ने उसकी सहायता के लिए वसन्त और कामदेव को भी साथ भेज दिया था। कामदेव अपनी बांसुरी बजाने में सदा से तत्पर रहते आए। जहां शिव समाधि में संलग्न थे और कुमारी पार्वती उनकी सेवा में संलग्न थीं, वहां वे हमारे किसी समाचार पत्र के विशेष संवाददाता की भांति आम की एक डाल पर बैठ गए और तीर कमान संभाल कर निशाना साधने लगे। जैसे ही शिव के नेत्र खुले और उन्होंने पार्वती के रूप को निहारा, उन्हें एहसास हो गया कि आसपास कहीं कामदेव जरूर है। उनका तीसरा नेत्र—जो केवल आपत्कालीन स्थिति में ही प्रयोग किया जाता था—सहसा खुला और जब तक देवताओं ने महादेव से क्रोध शान्त करने की अपील जारी की तब तक कामदेव जी ये बेचारे भस्म हो गए। भस्मावशेषं सदनं प्रकार। रति ने अपने पति के वियोग में इतना विलाप किया कि सारी लाज छोड़कर कवि कालिदास को एक पूरा सर्ग वैराग्य ढंग से उस विलाप पर ही लिखना पड़ा। जैसा कि जाहिर है, रति जो थी वह सिर्फ जिस्म की मुसम्मात थी। अगर आजकल की कोई सजातीय सुन्दरी होती तो पति के दिवंगत होते ही सिनेमा चली जाती और वहां किसी अंग्रेज प्रोड्यूसर से शादी कर डालती।

शुरू-शुरू में जो काम तप और यज्ञ आदि से होता था, वह बाद में षड्यन्त्रों से होने लगा। पदवियों के लिए षड्यन्त्र और राज्यों के लिए युद्ध आयोजित होने लगे। पद्धति में यह मौलिक परिवर्तन क्यों आया—इस मुद्दे को लेकर विद्वानों में मतभेद है। कुछ विद्वानों का मत है कि यज्ञ और तप में बाधा डालने के लिए महाराज इन्द्र सदा देवता निःशुल्क या उसी तरह की दो-चार गिनी-चुनी अप्सराओं को ही भेजा करते थे

नहीं दिखाई दिए तो उसने राजा की छाती पर चन्दन से लिखा कि जब मिलन की वेला आई तो आप मूर्च्छित हो गए। अब मैं जाती हूं क्योंकि जहां तक मेरा खयाल है, भेंट जो होती है वह जाग्रत अवस्था में होती है न कि मूर्च्छा की स्थिति में। शिला-लेख के अंकित करने के बाद वे चली गईं। पद्मावती काफी होन-हार किस्म की रूपसि थी, वह जब कभी भी किसी प्रेमी से मिलने जाती थी तो थोड़ा-सा चंदन अपने पास जरूर रखती थी। मूर्च्छा टूटने पर राजा रत्नसेन ने प्राण देने चाहे पर पार्वती जी की सिफारिश पर शिव ने उसे सिंहलगढ़ में प्रवेश करने का द्वार बतलाया। पुराने जमाने में और तो और, कवि लोग तक सिफारिश किया करते थे। जहांगीर ने अबुलफजल की जो हत्या की थी उसमें उनकी सहायता करने के कारण सम्राट अकबर ने राजा इन्द्रजीत पर सिर्फ एक करोड़ रुपये का जुर्माना किया था। इस जुर्माने को माफ कराने के सिलसिले में कवि केशवदास आगरा गए थे और राजा टोडरमल से मिले थे। टोडरमल की बड़ी सिफारिश पर बादशाह ने जुर्माना जो था वह माफ कर दिया था। इसी प्रकार कविवर बिहारीलाल का मुगल सम्राटों से जो परिचय हुआ था वह महात्मा नरहरि दास की सिफारिश पर हुआ था। इन सब उदाहरणों के बावजूद सिफारिश का दर्जा उन दिनों विशेष ऊंचा नहीं था और अधिकतर लोग दूसरे का राज्य या उसकी पत्नी अपने प्रयत्नों से ही प्राप्त किया करते थे। यकीन न हो तो आप लाला मटरूमल द्वारा रचित आल्हे की बावन लड़ाइयां पढ़ें।

इन दिनों तो स्थिति यह है कि सिफारिश जो है वह बच्चे के जन्म या उसके मां-बाप की शादी के समय से शुरू हो जाती है और उसके उपरान्त अन्त समय तक सारा कार्य-कलाप उसी के आधार पर होता है। कभी-कभी तो मरने के बाद श्मशान में जगह मिलने के लिए भी सिफारिश का सहारा लेना पड़ता है। हालत यह है कि बिना सिफारिश के आगे बढ़ने की बात तो दूर रही, आप शायद वहां भी खड़े नहीं रह सकते जहां कि अब तक खड़े थे। कुछ होनहार लोगों ने क्या कला और क्या विज्ञान— दोनों दृष्टि से इसका ऐसा विकास किया है कि अपने दांतों तले उंगली दबाने को तबीयत होती है कि इन दिनों सिफा-

रिता की सुविधा अंतर्गत आधार पर उपलब्ध है और आवश्यकता के अनुरूप भी। कुछ सिफारिशकार तो जनरल स्टोर की भांति इतनी बहुमुखी प्रतिभा वाले हैं कि डिपार्टमेंटल स्टोर का काम करते हैं और कहीं-कहीं तो चौबीस घंटे की सर्विस चलती है। इस संदर्भ में मैं स्वयं एक ऐसे व्यक्ति को जानता हूं जिनके पास से कभी निराश होकर नहीं लौटा। हमारे परिचितों में से एक हकीम साहब थे इन्होंने चोरी पत्नी गायब करा दी और एक और सज्जन जो अपनी पत्नी से निजात पाना चाहते थे, उन्हें रास्ता दिखा दिया। एक और हजरत को किसी कानूनी केस में फंसवाना था और यह शुभ कार्य भी इसी संदर्भ में पूरा कर दिया गया। वह मुसम्मात कुछ दिनों तो हकीम साहब के यहां पर रही पर उसके बाद इन्हीं के हरम में भरती हो गई। इनकी प्रतिभा देखिए कि एक पत्थर से तीन चिड़ियों का शिकार किया और पत्थर जो था, उसे उठाकर फिर जेब में रख लिया।

एक और सज्जन थे—सिफारिश और मदद करने के क्षेत्र में सच्चे कलाकार। सिफारिश और चन्दा—इन दो सार्वजनिक सेवाओं के प्रति पूर्ण समर्पित जीवन। चन्दे की राशि हमेशा विधवा स्त्रियों और अनाथ बच्चों के हित में लगाई जाती थी। यह दीगर बात है कि गोपिया पाठ की भांति विधवा का अर्थ इनका अपनी पत्नी से होता था और अनाथ का अभिप्राय इनके अपने बच्चों से। सिफारिश के लिए मेज पर हमेशा दो टेलीफोन रखते थे। किसी का काम हो, कोई वक्त हो, ये हमेशा मुख्यमंत्री से बात किया करते थे। सिर्फ चन्द लोगों को पता था कि सिफारिशी टेलीफोन का कनेक्शन सिर्फ बाथरूम तक था। इसी प्रकार एक और पहुंचे हुए कलाकार से भी मेरा साबका पड़ा। ये हजरत उन लोगों में से थे जो सिफारिश तो करते ही थे मगर साथ में खुद आपके घर आकर पूछते थे कि जरूरत हो तो अपने गण छोड़ें। दूसरे शब्दों में एकदम होम डिलिवरी सर्विस। एक बार आए तो कहने लगे कि बंधु, तुम अपनी किताबें विदेश में क्यों नहीं छपवाते? अगर ऐसा करो तो एक साल में अमीर हो जाओगे। एक मोटर आगे होगी और एक पीछे। मैंने अर्ज किया कि उन मोटर के आगे-पीछे होने से कुछ नहीं होता, मजा

रिश की सुविधा क्षेत्रीय आधार पर उपलब्ध है और आवश्यकता के अनुरूप भी। कुछ सिफारिशकार तो जयशंकर प्रसाद की भांति इतनी बहुमुखी प्रतिभा वाले हैं कि डिपार्टमेंटल स्टोर का काम करते हैं और वहां-वहां तो चौबीस घंटे की सर्विस चलती है। इस संदर्भ में मैं स्वयं एक ऐसे व्यक्ति को जानता हूं जिनके पास से कभी निराश होकर नहीं लौटा। हमारे परिचितों में से एक हकीम साहब को इन्होंने चौथी पत्नी रातों-रात दिलवा दी और एक और सज्जन जो अपनी पत्नी से निजात पाना चाहते थे, उन्हें रुपया दिलवा दिया। एक और हजरत को किसी कानूनी केस में फंसवाना था और वह शुभ कार्य भी इसी संदर्भ में पूरा कर दिया गया। वह मुसम्मात कुछ दिनों तो हकीम साहब के यहां पर रहीं पर उसके बाद इन्हीं के हरम में भरती हो गईं। इनकी प्रतिभा देखिए कि एक पत्थर से तीन चिड़ियों का शिकार किया और पत्थर जो था, उसे उठाकर फिर जेब में रख लिया।

एक और सज्जन थे—सिफारिश और मदद करने के क्षेत्र में सच्चे कलाकार। सिफारिश और चन्दा—इन दो सार्वजनिक सेवाओं के प्रति पूर्ण समर्पित जीवन। चन्दे की राशि हमेशा विधवा स्त्रियों और अनाथ बच्चों के हित में लगाई जाती थी। यह दीगर बात है कि गोपियां भांति विधवा का अर्थ इनका अपनी पत्नी से होता था और अनाथ का अभिप्राय इनके अपने बच्चों से। सिफारिश के लिए मेज पर हमेशा दो टेलीफोन रखते थे। किसी का काम हो, कोई वक्त हो, ये हमेशा मुख्यमंत्री से बात किया करते थे। सिर्फ चन्द लोगों को पता था कि सिफारिशी टेलीफोन का कनेक्शन सिर्फ बाथरूम तक था। इसी प्रकार एक और पहुंचे हुए कलाकार से भी मेरा वास्ता पड़ा। ये हजरत उन लोगों में से थे जो सिफारिश तो करते ही थे मगर साथ में खुद आपके घर आकर पूछते थे कि जरूरत हो तो अपने गण छोड़ें। दूसरे शब्दों में एकदम होम डिलीवरी सर्विस। एक बार आए तो कहने लगे कि बंधु, तुम अपनी किताबें विदेश में क्यों नहीं छपवाते? अगर ऐसा करो तो एक साल में अमीर हो जाओगे। ...मोटर आगे ... एक पीछे। मैंने अर्ज किया कि ... आगे-... नहीं होता, मझा

तब आता है जब कि मोटर आपके पास हो। रही प्रकाशन की बात तो स्थिति यह है हम अपने देशी प्रकाशकों से ही खुश हैं। हथापाई, गाली-गलौज और मुकद्दमेबाजी की जो सुविधा देसी प्रकाशक देते हैं, वह सुविधा विदेश के शालीन संभ्रान्त और ईमानदार प्रकाशक कैसे दे सकते हैं? मेरी इस वाणी को सुनकर वे बंधु कहने लगे कि अच्छा यदि ऐसा ही है तो एक शादी और कर लो। वह लेखक भी कोई लेखक है जिसके पास मात्र एक पत्नी ही हो? पत्नी तो मकान की तरह है, आज यहां रहते हैं, कल वहां। रह गए बच्चे सो वे फर्नीचर की भांति हैं। मकान के साथ फर्नीचर भी बदलता आता है, हां अलबत्ता कोई पीस ज्यादा पसन्द हो तो साथ लेते आना। मैंने चमककर कहा कि मित्र तुम तो सच्चे शुभचिंतक निकले मगर स्थिति यह है कि ऐसा करने से पुरानी पत्नी को बड़ा कष्ट होगा। इन्होंने तुरन्त एक सिद्ध विचारक की भांति उत्तर दिया कि तुम तो यार एक-दम दकियानूसी निकले। पहले तो यही क्या पता कि उसे दुख होगा! क्या मालूम कि वह असहाय स्त्री इस क्षण की प्रतीक्षा ही कर रही हो। स्त्री के चरित्र और पुरुष के भाग्य का किसे पता? दूसरी बात यह है कि इस असार संसार में दुख किसे नहीं है? अफ्रीका और एशिया के करोड़ों लोग नंगे और भूखे घूमते हैं, क्या वे दुखी नहीं हैं? जो दुखी हैं वे भाग्यवान हैं। उनके लिए स्वर्ग का सिंहासन सुरक्षित है। तीसरी बात यह है कि जिस कन्यारत्न की बात मैं तुमसे कह रहा हूं वह भी तो तुम्हारे वियोग में रात-दिन जली जा रही है। उसका दुख क्या कुछ कम है? वह बेचारी तो रेत पर पड़ी मछली की भांति एक-दम समर्पिता है। तीन लेखकों से शादी कर चुकी है, चार-पांच लेखकों के साथ बिना शादी किए रह चुकी है, मगर उसकी आत्मा है कि फिर भी शांत नहीं होती। आत्मा क्या है, छोटी लाइन का इंजन है जो हमेशा चलता रहता है। जरा सोचो, आखिरकार वह भी तो एक इंसान है, उसे क्या इस तरह निराश करोगे?

का कौन

दुख हुआ। हिन्दी
हुई वाणिका
ऐसी जिम्मेदारी

र आता है जब कि मोटर आपके पास हो। रही प्रकाशन की
तं तो स्थिति यह है हम अपने देशी प्रकाशकों से ही खुश हैं।
धापाई, गाली-गलौज और मुकद्दमेबाजी की जो सुविधा देसी
काशक देते हैं, वह सुविधा विदेश के शालीन सम्भ्रान्त और
ानदार प्रकाशक कैसे दे सकते हैं? मेरी इस वाणी को सुनकर
बंधु कहने लगे कि अच्छा यदि ऐसा ही है तो एक शादी और
र लो। वह लेखक भी कोई लेखक है जिसके पास मात्र एक
नी ही हो? पत्नी तो मकान की तरह है, आज यहा रहते हैं,
ल वहां। रह गए बच्चे सो वे फर्नीचर की भांति हैं। मकान के
थ फर्नीचर भी बदलता जाता है, हां अलबत्ता कोई पीस
ादा पसन्द हो तो साथ लेते जाना। मैंने चमककर कहा कि
व तुम तो सच्चे शुभचिंतक निकले मगर स्थिति यह है कि
सा करने से पुरानी पत्नी को बड़ा कष्ट होगा। इन्होंने तुरन्त
क सिद्ध विचारक की भांति उत्तर दिया कि तुम तो यार एक-
म दकियानूसी निकले। पहले तो यही क्या पता कि उसे दुख
ोगा? क्या मालूम कि वह असहाय स्त्री इस क्षण की प्रतीक्षा
ी कर रही हो। स्त्री के चरित्र और पुरुष के भाग्य का किसे
ता? दूसरी बात यह है कि इस क्मार संसार में दुख किसे
हीं है? अफ्रीका और एशिया के करोड़ों लोग नंगे और भूखे
रते हैं, क्या वे दुखी नहीं हैं? जो दुखी हैं वे भाग्यवान हैं।
नके लिए स्वर्ग का सिंहासन सुरक्षित है। तीसरी बात यह है
क जिस कन्यारत्न की बात मैं तुमसे कह रहा हूं वह भी तो
ुम्हारे वियोग में रात-दिन जली जा रही है। उसका दुख क्या
ुछ कम है? वह बेचारी तो रेत पर पड़ी मछली की भांति एक-
ात्म समर्पिता है। तीन लेखकों से शादी कर चुकी है, चार-पांच
ेखकों के सा बिना शादी किए रह चुकी है, मगर उसकी
आत्मा है कि फिर भी शांत नहीं होती। आत्मा क्या है, छोटी
लाइन का इंजन है जो हमेशा चलता रहता है। जरा सोचो,
आखिरकार वह भी तो एक इन्सान है, उसे क्या इस तरह निराश
करोगे?

उनकी वाणी सुनकर मुझे वाकई हार्दिक दुख हुआ। हिन्दी
का कौन ऐसा लेखक होगा जो ऐसी कष्ट में पड़ी हुई बालिका
का । यह तो एक ऐसी जिम्मेदारी

रिश की सुविधा क्षेत्रीय आधार पर उपलब्ध है और आवश्यकता के अनुरूप भी। कुछ सिफारिशकार तो भयंकर प्रकार की भांति इतनी बहुमुखी प्रतिभा वाले हैं कि डिपार्टमेंटल स्टोर का काम करते हैं और यहाँ-वहाँ तो चौबीस घंटे की सर्विस चलती है। इस संदर्भ में मैं स्वयं एक ऐसे व्यक्ति को जानता हूं जिनके पास से कभी निराश होकर नहीं लौटा। हमारे परिचितों में से एक हकीम साहब को इन्होंने चोदी पत्नी रातों-रात दिलवा दी और एक और सज्जन जो अपनी पत्नी से निजात पाना चाहते थे, उन्हें रुपया दिलवा दिया। एक और हजरत को किसी कानूनी केस में फंसवाना था और वह शुभ कार्य भी इसी मदर्भ में पूरा कर दिया गया। वह मुसम्मात कुछ दिनों तो हकीम साहब के यहां पर रही पर उसके बाद इन्हीं के हरम में भरती हो गई। इनकी प्रतिभा देखिए कि एक पत्थर से तीन चि का शिकार किया और पत्थर जो था, उसे उठाकर फिर जे रख लिया।

एक और सज्जन थे—सिफारिश और मदद करने के मे सच्चे कलाकार। सिफारिश और चन्दा—इन दो स जनिक सेवाओं के प्रति पूर्ण समर्पित जीवन। चन्दे की र हमेशा विधवा स्त्रियों और अनाथ बच्चों के हित में लगाई ज थी। यह दीगर बात है कि गोगिया पाशा की भांति विधवा अर्थ इनका अपनी पत्नी से होता था और अनाथ का अभिप्र इनके अपने बच्चों से। सिफारिश के लिए मेज पर हमेशा टेलीफोन रखते थे। किसी का काम हो, कोई वक्त हो, ये हमेश मुख्यमंत्री से बात किया करते थे। सिर्फ चन्द लोगों को पता कि सिफारिशी टेलीफोन का कनेक्शन सिर्फ बाथरूम तक था। इसी प्रकार एक और पहुंचे हुए कलाकार से भी मेरा साबक पड़ा। ये हजरत उन लोगों में से थे जो सिफारिश तो करते हैं थे मगर साथ में खुद आपके घर आकर पूछते थे कि जरूरत हो तो अपने गण छोड़ें। दूसरे शब्दों में एकदम होम डिलिवरी सर्विस। एक बार आए तो कहने लगे कि बंधु, तुम अपनी किताबें विदेश में क्यों नहीं छपवाते? अगर ऐसा करो तो एक साल में अमीर हो जाओगे। एक मोटर आगे होगी और एक पीछे। मैंने अर्ज किया कि उन मोटर के आगे-पीछे होने से कुछ नहीं होता, मु

चर्चा सुनकर आह्लादित हुए थे और यही हादसा कभी-कभी बाबर के साथ भी होता था। बाबर को यह बहुत खराब आदत थी कि वह अपने केंद्रीय जांच ब्यूरो पर पूरा विश्वास नहीं रखता था; वह प्रायः अपना वेश बदलकर रात को सरायों में जाया करता था और वहां अपने राज्य की और अपनी चर्चा सुना करता था। आगरा में एक बार ऐसा हुआ कि ठीक ऐसी ही स्थिति में शाही पीलखाने का एक हाथी बिगड़ गया और कुछ वैसी ही हरकतें करने लगा जैसी कि कुछ व्यक्ति चुनाव हारने के बाद अब करते हैं। तोड़-फोड़ के उस माहौल में जब वह हाथी सराय में आया तो बाबर को देखते ही उसने सलाम की और सिर झुकाकर एक कोने में खड़ा हो गया। उसके साथ बैठ जो दुबके गप्पें मार रहे थे उन्होंने बादशाह सलामत को अपना आदाब अर्ज किया और माफी मांगी। मेरा ख्याल है कि उसके बाद सराय की भटियारिन ने भी बादशाह से कबाब के पैसे नहीं मांगे होंगे।

चर्चित होने के महान् सत्य को ध्यान में रखते हुए यदि किसी ऐसे व्यक्ति या वस्तु की चर्चा न हो जिसकी कि चर्चा होनी चाहिए तो उस स्थिति में संवेदनशील व्यक्ति का दुःखी होना स्वाभाविक है। यह दुःख काफी गहरा होता है और उस दुःख से कहीं ज्यादा होता है जो मुझे उस वक्त होता है जबकि एक कराची लेखिका मुझसे बातें न कर अख़बार न बातें रखती है। वात्स्यायन जी हैं कि उनकी बातों को सुनते जाते हैं और चमत्कार है कि खड़ा हुआ या बैठा हुआ समाज की भांति जमा रहता है। ठीक इसी प्रकार के दुःख से मैं इस कारण सदा से तड़पता आया कि बहुमुखी प्रतिभा वाले मेरे जिले की चर्चा क्यों नहीं होती। वह जिला जिसमें कवर स्मृति का आश्रम था जहां विदुर निवास करते थे (जिनके घेर करने भगवान कदम स्वयं आए थे), जहां सुल्ताना डाकू और नजीब खां जैसी हस्तियां प्रकट हुईं और जहां पण्डित पद्मसिंह शर्मा और दुष्यन्त कुमार ने जन्म लिया, उस जिला बिजनौर की यदि चर्चा न हो तो वहां के निवासियों को कैसा लगेगा? जिस जिले ने उत्तर प्रदेश सरकार को मन्त्री, केंद्रीय सरकार को वज़ीर और पंजाब सरकार को गवर्नर दिया हो, यदि उसकी भी उपेक्षा की जाए तो क्या

आपको सचमुच कोई ग्लानि नहीं होगी ?

यह एक विचित्र संयोग रहा कि ऊपर बताए गए तीनों सरकारी पद एक ही व्यक्ति को दिए गए थे और वे थे हाफिज मुहम्मद इब्राहीम। कमाल के ईमानदार, शालीन और नम्र। नम्रता तो इतनी मात्रा में थी कि कभी-कभी परेशानी का सबब बन जाती थी। मना तो कभी किसी को किया ही नहीं। एक दिन उनके व्यक्तिगत सचिव ने देखा कि कल उन्हें एक एंपोरियम का उद्घाटन करने जाना है। पूछताछ पर पता चला कि वह एक ऐसे दर्जी की किसी गली में निहायत छोटी-सी एक दुकान थी जो कि सिलाई की एक अदद मशीन शायद कहीं से चोरी करके लाया था। व्यक्तिगत सचिव ने सिर पर हाथ रखा, हाफिज जी को रोका और स्वयं जाकर दुकान का उद्घाटन किया। दुकान जो थी वह शायद उसी हफ्ते बन्द हो गई। हाफिज जी नगीने के थे – ठीक वही नगीना जहां डाकगाड़ी से उतरकर अकबर इलाहाबादी ने पानी पीने की कभी कोशिश की थी और फिर भी प्यासा ही रहना पड़ा था। कवि के प्यासे मन से जो पुकार निकली थी वह इस प्रकार थी—यह कैसा नगीना है कि जिस पर आब नहीं।

बिजनौर एक ऐसा जिला है जहां सब कुछ है। यहां भूगोल है, इतिहास है, आदमी और औरतें हैं, पशुपक्षी हैं, जलवायु है, लोकगीत हैं और तराई की प्राकृतिक सुषमा है। यहां ताजपुर का शानदार गिरजाघर है, नजीबखान का किला है और पंजी मकबरा है। पुराने जमाने में यहां कितनी ही छोटी-मोटी रियासतें थीं जो अब खत्म हो गईं। और स्थिति यह है कि रियासतें चली गईं मगर रईसी बाकी है, बस्तियां बिक गईं मगर नाम अभी तक जिन्दा है। हालत खस्ता है। रईस हैं मगर रियासत नहीं, हिसाब है मगर बाकी नहीं, नदियां हैं जिनमें पानी नहीं और जिन नदियों में पानी है उन पर पुल नहीं। पुराने गजेटियर के अनुसार बिजनौर की खानें कभी स्वर्णकण निकला करते थे पर जमाने के साथ-साथ हालत बदलती गई। अब वे स्वर्णकण तो क्या, पुराना गजेटियर तक नहीं मिलता। कुछ वर्ष पहले तक यह जिला उत्तर प्रदेश का सबसे छोटा जिला माना जाता था मगर जैसे-जैसे उर्दू और आलोचना धंधे बढ़ते गए जिले बढ़ते गए,

मेरे पैर की छाप पर पैर रखते चले आओ। यहां आकर चा
काव्य लिखो, चाहे महाकाव्य लिखो और चाहो तो कुछ
लिखो। चाहे भक्ति पर लिखो, चाहे शृंगार पर लिखो औ
चाहो तो फिर से वीरगाथा काल पर उतर आओ। मेरे जिले मे
गंगा की पवित्र धारा, गांव की सुन्दरियां और फौजदारी करने
वाले सभ्रान्त ग्रामीण लोग तुम्हारी प्रतीक्षा में दोनों आंखें खोल-
कर खड़े हैं। आओ, इन्हें निराश न करो। चित्रों और चलचित्रों
के बनाने वालो तुम भी आओ। यहां तराई है, वन हैं, नदियां हैं,
पर्वत हैं और हंसती गाती ग्रामबालाएं हैं और तुम हो कि इस क्षेत्र
का उपयोग ही नहीं करते। बड़े लोगो, तुम भी आओ। यह क्षेत्र
अभी काफी पिछड़ा है, सड़कें काफी कच्ची हैं और गबन करने
की संभावनाएं काफी पक्की हैं। गन्ना और त्यागी लोगों को
उपज करने वाले इस इलाके को इस तरह न छोड़ो। बाद में
नहीं कहना कि मैंने वक्त पर खबर नहीं दी।

मुझे अपने जिले पर बड़ा गर्व है। भूतपूर्व राज्यपाल श्री
धर्मवीर की भांति मैं भी यहीं पैदा हुआ। खुशी और गर्व के इस
दौरे में कभी-कभी मैं सोचता हूं कि भविष्य के इतिहासकार मेरा
वर्णन कुछ इस प्रकार करेंगे :

"श्री रवीन्द्रनाथ त्यागी का जन्म उत्तर प्रदेश के जिला
बिजनौर में हुआ था। बिजनौर को कभी-कभी विजयानगरम्
भी कहा जाता रहा। यह उसी पवित्र भूमि का प्रताप था कि
इतना महान् कलाकार वहां पैदा हुआ कि जिसे सारा देश ही
नहीं बल्कि उनका जिला भी जानता था। यहां के प्राकृतिक
सौंदर्य ने उनके काव्य को प्रेरणा दी और यहां के निवासियों ने
उनके हास्य व्यंग्य को। हाल ही में मिले कुछ शिलालेखों और
ताम्रपत्रों से पता लगा है कि इस व्यक्ति का जन्म बीसवीं
शताब्दी (ईसवी) के पूर्वार्ध में हुआ था और मृत्यु जो थी वह
उसी सदी के उत्तरार्ध में संपन्न हुई थी। इसी कारण इन्हें
बीसवीं शताब्दी का प्रतिनिधि साहित्यकार माना गया। उनके
जिले का भूगोल उनके अपने भूगोल से काफी मिलता था; वे
भी अपने जिले की भांति ऊपर से पतले थे, बीच में आगे निकले
हुए और नीचे से लगभग चौरस। वे एक ओर पवित्र गंगा

पर्वतों की भांति गंभीर। वे सारी उम्र वहीं खड़े रहे जहां थे, कभी आगे नहीं बढ़े। साहित्य के इतिहास के संदर्भ में उनको भुला देना कठिन होगा क्योंकि वे पहले ऐसे कथाकार थे जो साहित्य को अंतर्राष्ट्रीयता, राष्ट्रीयता और प्रांतीयता की सीमा से मुक्त करके उसे जिले के स्तर पर लाए। खेद है कि उनकी मृत्यु कुछ जल्दी ही हो गई अगर वे कुछ और वर्ष जीवित रहते तो साहित्य को जिला क्या, तहसील और परगने के स्तर पर ले आते।"

## मूंछों को लेकर

मैं पुलिसवालों से बहुत घबराता हूं। बिना किसी कसूर के भी पता नहीं क्यों, इस महकमे से मुझे काफी डर लगता है। शास्त्रों में बताई गई 'आहार, निद्रा और भय' वाली बातों को अपने संदर्भ से विश्लेषण करते-करते मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि मेरे इस भय का मूल कारण यह है कि मैंने कभी किसी पुलिस वाले को हंसते नहीं देखा। कानून की जिम्मेदारी और घनी मूछों के भार से ये बेचारे मासूम लोग इतना दबे रहते हैं कि इनसे हंसते नहीं बनता। इलाहाबाद हाईकोर्ट के जस्टिस मुल्ला ने पुलिस के बारे में बड़ा कड़ा निर्णय दिया था जिससे इस महकमे की जिम्मेदारी पर काफी प्रभाव पड़ता था। मगर कल जो अखबार में पढ़ा कि पुलिस के एक कर्मचारी ने किसी एक शालीन सज्जन की आधी मूंछे साफ करा दीं तो तबीयत बगीचा-बगीचा हो गई। तबीयत का बाग बाग होना मैं नहीं कहूंगा : यह मैं उस वक्त कहता जब कि वे उसकी पूरी की पूरी मूंछें साफ करा देते जो कि संभवतः न्याय संहिता के विरुद्ध होता। वैसे यह भी संभव है कि वह विशिष्ट पुलिसमैन कुछ मजाक पसंद किस्म का इंसान था।

मूंछ दरअसल कुछ चीज ही ऐसी है कि इसे देखकर मजाक का मूड बन ही जाता है। फौज के एक ब्रिगेडियर की याद आती

एक साहब थे जो अपनी मूछों से जूते साफ किया करते थे।
ओर बूट साफ करते थे और दूसरी ओर मूछें। मैंने उन्हें
बार इस पवित्र क्रिया को जूता पहिने-पहिने भी सम्पन्न क
देखा था। कुछ मूछें हैं जो अभी भी ऊपर को तानी जाती है
एक सज्जन थे जिनकी मूछें सुबह का सवा दस बजाती थीं औ
शाम को आठ बजकर बीस उन्हें देखकर लोग अपनी घड़ि
मिलाया करते थे। हिंदी साहित्य के क्षेत्र में रामचंद्र शुक्ल
मूंछों से विशुद्ध आचार्यत्व टपकता था, महावीर प्रसाद द्विवे
की मूछें और उनके हाथ का डंडा लगभग बराबर कद और आ
के थे और अज्ञेय जी की मूंछ मुद्रा प्रायः बदलती ही रही।
प्रयोगवाद के प्रवर्तक के लिए यही उचित था।

मुझे आपको यह सूचना देते हुए हार्दिक सुख होता है
कि इधर स्त्रियां भी मूछें रखने लगी हैं। हाजी लकलक ने जो
लिखा था कि 'मकसदे हज्जाम है औरत बनाना मर्द को' वह
अब गलत साबित हो गया। औरतें आदमी से हर क्षेत्र में बरा-
बर हैं तो फिर वे मूछें ही क्यों न उगाएं ? पिछली बार तो रेल
में कई रूपसियां ऐसी दृष्टिगोचर हो गईं कि जिन्हें देखकर
लगता था कि कोई वनमहोत्सव मनाया जा रहा था। उन्होंने
मेरे मूछविहीन मुखचंद्र को देखा और लज्जा से अभिभूत होकर
अपने नयनकमल नीचे कर लिए।

□□

• आर्ट• बी• सी• प्रेस, शाहदरा, दिल्ली-११००३२